20 जनवरी, 2020 * वर्ष-29, पृष्ठ संख्या 60, अंक-1

राजस्थान सुजस

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

Rajas @75

नए साल की शुभकामनाएं

नववर्ष की शुभकामनाएं

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत को उनके निवास पर प्रदेशभर से बड़ी संख्या में आए लोगों ने नव वर्ष की बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री सभी से आत्मीयता से मिले और शुभकामनाएं देने के साथ ही उनका मुंह मीठा कराया।

श्री गहलोत से राज्य मंत्री परिषद के सदस्यों, विधायकों एवं अन्य जनप्रतिनिधियों, विभिन्न संस्थाओं एवं संगठनों के पदाधिकारियों, महिलाओं, किसानों, बच्चों, युवाओं, अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित प्रदेशभर से आए लोगों ने मुलाकात कर नए साल की शुभकामनाएं दीं। विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में विजेता रहे बच्चों ने अपनी उपलब्धियों के बारे में मुख्यमंत्री को बताया। श्री गहलोत ने उनकी हौसला अफजाई करते हुए उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

मुख्यमंत्री ने नए वर्ष में प्रदेशवासियों की सुख, समृद्धि और खुशहाली की कामना करते हुए कहा कि हम सभी समावेशी सोच के साथ सबको साथ लेकर आगे बढ़ें और राज्य के उत्थान में भागीदार बनें।

प्रधान सम्पादक
डॉ. नीरज के. पवन, आईएएस
आयुक्त, सूचना एवं जनसम्पर्क

•

सम्पादक
डॉ. राजेश कुमार व्यास

•

उप सम्पादक
आशाराम खटीक

•

कला
विनोद कुमार शर्मा

•

आवरण छाया
राकेश शर्मा 'राजदीप'

•

राजस्थान सुजस में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं एवं आंकड़े परिवर्तनशील हैं। आवश्यक नहीं कि शासन उनसे सहमत हो। सुजस में प्रकाशित सामग्री का विभाग किसी भी रूप में उपयोग कर सकेगा।

ग्राफिक डिजाइनिंग
प्रीमियर प्रिन्टिंग प्रेस

सम्पर्क
सम्पादक
राजस्थान सुजस (मासिक)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
सचिवालय परिसर
जयपुर - 302 005
e-mail :
editorsujas@gmail.com
Website :
www.dipr.rajasthan.gov.in

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान का मासिक

वर्ष : 29 अंक : 01 जनवरी, 2020

इस अंक में

राज्यपाल ने नया साल...

05

लोक-संस्कृति

26

कला मेला

32

सम्पादकीय	04
ऑनलाइन वैश्विक निबंध प्रतियोगिता	07
निरोगी राजस्थान	08
जन-आधार कार्ड	08
राजस्थान की स्वास्थ्य सेवाएं	09
किसान सम्मेलन	10
जनता क्लिनिक का शुभारंभ	12
कैलेंडर का विमोचन	12
'आई एम शक्ति' का शुभारम्भ	13
राजस्थान औद्योगिक विकास नीति	14
निरोगी होगा राजस्थान	16
चिकित्सा सुविधाओं में विस्तार	17
किसान, गरीब के लिए प्रतिबद्ध	18
नर्मदा बचाओ आंदोलन	18
अत्याचार रोकने उठाए कड़े कदम	19
विभिन्न योजनाओं का शुभारम्भ	20
उद्योग हस्तशिल्प उत्सव	21
खेल संस्कृति को बढ़ावा	22
स्पोर्ट्स एकेडमी का उद्घाटन	23
सकारात्मक सिनेमा	24
पोलियो अभियान का शुभारंभ	24
कुम्भलगढ़ महोत्सव	25
राष्ट्रीय पुस्तक मेला	30
राजस्थान पुलिस अकादमी	34
कैसे बने जीवन सफल?	40
प्रशासनिक सेवाओं का सुदृढ़ीकरण	42
सौंदर्य, आनंद से संपन्न करें जीवन	46
संपन्न राजस्थान के लिए हो खेती	49
वर्ष पर्यन्त रहें स्वस्थ	51
आंखें हैं तो जहान है	53
संकल्प से छुएं सफलता का शीर्ष	55

राजस्थान सुजस के आगामी अंक के लिए मौलिक, अप्रकाशित सामग्री भिजवायें। कृपया अपने आलेख एवं फोटोग्राफ सम्पादक को e-mail : editorsujas@gmail.com पर अथवा डाक से भेजें।

प्रदर्शनी का उद्घाटन

06

नए साल की शुभकामनाएं!

36

माघ में मावठ

57

प्रदेश की खुशहाली, समृद्धि और संपन्नता का लें संकल्प

वर्ष 2019 बीत गया है और नये वर्ष 2020 का शुभारम्भ हो गया है। नया वर्ष जीवन में उल्लास, उमंग और उत्साह लेकर वर्ष पर्यन्त हमें नया कुछ पहले जो बेहतर हुआ है उससे और बेहतर करने के लिए प्रेरित करे। प्रदेश की खुशहाली, समृद्धि और संपन्नता के लिए मिलकर प्रयास करेंगे तो निश्चित ही बहुत कुछ सार्थक होगा ही।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी के नेतृत्व में राजस्थान में 'वर्ष एक फैसले अनेक' के तहत किसानों की ऋण माफी, वृद्धजन, विधवा एवं परित्यक्ता पेंशन में बढ़ोतरी, दलित, आदिवासी, पिछड़े, आर्थिक रूप से पिछड़े (इडब्ल्यूएस) के साथ महिला सशक्तीकरण, अल्पसंख्यक कल्याण, युवाओं के बेरोजगारी भत्ते में बढ़ोतरी एवं रोजगार के अवसर बढ़ाने की महत्ती पहल की गयी है। मुख्यमंत्री नि:शुल्क दवा योजना, मुख्यमंत्री नि:शुल्क जांच योजना का दायरा बढ़ाते हुए इसे सुदृढ़ बनाने के साथ नये वर्ष 'निरोगी राजस्थान' अभियान के माध्यम से स्वस्थ राजस्थान का संकल्प लिया गया है। हम सभी का भी यह कर्त्तव्य है कि प्रदेश के चहुंमुखी विकास के लिए हम संकल्पबद्ध हों।

नया वर्ष हमारे भीतर उमंग और उत्साह का संचार करता है। कुछ नया और अच्छा करने के लिए प्रेरित करता है। पिछला साल गुजर गया परन्तु बहुत कुछ नये अनुभव हम में भर गया है। यह साल उन अनुभवों से सीखते हुए और बेहतर करने का हो। अपने लिए ही नहीं हम दूसरों के लिए भी सोच रखते हुए कार्य करें। हर ओर सकारात्मक सोच का माहौल बने।

जीवन का हर क्षण हमारे लिए नया अवसर लेकर आता है। उन नए अवसरों का भरपूर उपयोग करते हम अपने आस-पास के परिवेश को और समृद्ध-संपन्न और सुंदर बनाने के लिए कार्य करें। इसीलिए नया वर्ष संकल्पों का वर्ष हो। ऐसे संकल्पों का, जिन्हें हम पूरा करें।

प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के नेतृत्व मे राजस्थान में जन कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण कार्यो का क्रियान्वयन हुआ है। विकास के नये आयाम स्थापित हुए हैं। जन हित के कार्यो से राजस्थान तेजी से विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। नये वर्ष में हमारा यह भी संकल्प हो कि आम जन के लिए जो कल्याणकारी योजनाएं सरकार चला रही है, उसका लाभ अधिकाधिक लोगों तक पहुंचे। परोपकार और सेवा भाव से ही हम समाज में अच्छेपन को वास्तविक रूप में क्रियान्वित कर सकते हैं।

'राजस्थान सुजस' का यह अंक नये वर्ष का पहला अंक है। नव वर्ष से जुड़ी महत्त्वपूर्ण सामग्री इसमें पृथक से देने का हमने प्रयास किया है। उम्मीद है, अंक आपको पसंद आएगा।

'सुजस' के पाठकों को नये वर्ष की ढेर सारी शुभकामनाएं।

डॉ. नीरज के. पवन
आई.ए.एस.
आयुक्त, सूचना एवं जनसम्पर्क

राज्यपाल जांबाज सैनिकों के साथ

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने ठेठ सरहद पर पहुंचकर जांबाज सैनिकों का उत्साहवर्धन किया तथा शाम तक का पूरा समय सैनिकों के संग बिताया। बाद में उन्होंने जैसलमेर-जोधपुर मार्ग स्थित वार म्यूजियम का अवलोकन किया, शहीद स्मारक पर पुष्पचक्र अर्पित किया तथा सैनिकों को नव वर्ष की बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए मिठाई खिलाकर मुंह मीठा कराया। दिन में उन्होंने तनोट माता के दर्शन किए।

राज्यपाल ने तनोट माता मन्दिर के गर्भगृह में सपत्नीक तनोट मैया की विधि-विधान से पूजा-अर्चना की और राजस्थान तथा देश की सर्वांगीण खुशहाली की कामना की। इस दौरान बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं ने राज्यपाल का अभिवादन किया। इससे पूर्व राज्यपाल के तनोट पहुंचने पर बीएसएफ के डीआईजी मुकेश कुमार सिंह व कमाण्डेण्ट दलवीरसिंह अहलावत आदि अधिकारियों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने बीएसएफ के विश्राम गृह 'नारायणी' में नीम का पौधा भी लगाया।

राज्यपाल ने लिया सरहद की सुरक्षा का जायजा

राज्यपाल कलराज मिश्र ने वर्ष का अंतिम दिन एवं नव वर्ष की पूर्व संध्या जैसलमेर में सरहद पर सैनिकों के साथ बिताई और उनकी पीठ थपथपाते हुए उत्साहवर्धन किया। राज्यपाल ने तनोट माता के दर्शन के उपरान्त तनोट से 20 किलोमीटर की दूर भारत-पाक सीमा पर सुरक्षा बल 139वीं वाहिनी सीमा चौकी बबलियानवाला पहुंचकर सरहद की सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

राज्यपाल ने सीमा पर तारबंदी व सुरक्षा के तमाम उपायों के बारे में जानकारी ली और सीमा सुरक्षा में जुटे सीमा सुरक्षा बल की खूब सराहना की।

सांस्कृतिक संध्या

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने वर्ष 2019 की अंतिम सांझ को जैसलमेर जिले के होटल मेरियट में लोक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आनन्द लिया। उन्होंने लोक कलाकारों के एक से बढ़कर एक उम्दा और मनोहारी कार्यक्रमों की बाद में सराहना भी की।

इस अवसर पर जैसलमेर जिला कलक्टर श्री नमित मेहता, पर्यटन विभागीय अधिकारी, अतिरिक्त जिला कलक्टर श्री ओपी विश्नोई, उपखण्ड अधिकारी श्री दिनेश विश्नोई सहित राजभवन के अधिकारी राज्यपाल की धर्मपत्नी एवं परिजन आदि उपस्थित थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में देश के विभिन्न हिस्सों से आए कलाकारों ने प्रसिद्ध नृत्यों की आकर्षक प्रस्तुतियों से समा बांध दिया। राज्यपाल श्री मिश्र ने सभी लोक कलाकारों एवं सांस्कृतिक दलों की प्रस्तुतियों की सराहना की और अपनी ओर से नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया तथा कलाकारों के आग्रह पर ग्रुप फोटो भी खिंचवाया। •

मुख्यमंत्री ने किया प्रदर्शनी का उद्घाटन

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने राज्य सरकार का एक वर्ष पूर्ण होने पर जवाहर कला केंद्र में आयोजित प्रदर्शनी 'वर्ष एक-फैसले अनेक' का उद्घाटन किया। उन्होंने 21 विभागों की ओर से लगाई गई सभी स्टॉल्स पर जाकर विभागों द्वारा करवाए गए विकास कार्यों, उपलब्धियों एवं नवाचारों का अवलोकन किया।

श्री गहलोत ने वर्तमान राज्य सरकार के एक साल के कार्यकाल में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में करवाए गए विकास कार्यों एवं योजनाओं के फोटो, स्कैच, मॉडल्स एवं प्रकाशन सहित अन्य सामग्री को देखा। उन्होंने राज्य सरकार के सुशासन के संकल्प को दर्शाती इस प्रदर्शनी की सराहना की और कहा कि इससे आमजन को कल्याणकारी फैसलों, कार्यक्रमों, नीतियों और योजनाओं की जानकारी मिल सकेगी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री के सामने स्कूली छात्राओं ने राज्य सरकार की ओर से बालिकाओं को दी जा रही आत्मरक्षा की ट्रेनिंग का प्रदर्शन किया। कृषि विभाग की स्टॉल पर मुख्यमंत्री ने प्रगतिशील किसानों से मुलाकात की और उनके नवाचारों को सराहा। श्री गहलोत ने सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की स्टॉल पर ऑनलाइन ग्लोबल निबंध प्रतियोगिता के पोस्टर एवं विभाग के प्रकाशनों का विमोचन किया।

उल्लेखनीय है कि सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के समन्वय से लगाई गई इस प्रदर्शनी में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता, महिला एवं बाल विकास, ऊर्जा, खान एवं पेट्रोलियम, आवासन मण्डल, जयपुर विकास प्राधिकरण, स्वायत्त शासन, उद्योग, श्रम एवं नियोजन, सार्वजनिक निर्माण, कृषि, पशुपालन, ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज, जनजाति क्षेत्रीय विकास, वन एवं पर्यावरण, गृह, पर्यटन, कला एवं संस्कृति, सूचना एवं प्रौद्योगिकी, तथा

सहकारिता सहित अन्य विभागों द्वारा एक साल में लिए गए फैसलों, विकास कार्यों, योजनाओं एवं उपलब्धियों का आकर्षक ढंग से प्रदर्शन किया गया है।

'राजस्थान सुजस' विशेषांक, 'किस्सा विकास का' एवं 'वर्ष एक-फैसले अनेक' पुस्तिकाओं का लोकार्पण

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने प्रदर्शनी के उद्घाटन के बाद सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित प्रचार साहित्य का भी लोकार्पण किया। उन्होंने राज्य में पिछले एक वर्ष के दौरान क्रियान्वित विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं, विकास कार्यक्रमों, जनहित में लिए गए निर्णयों पर आधारित विशेष पुस्तिका 'वर्ष एक-फैसले अनेक', 'राजस्थान सुजस' के विशेषांक एवं जिलों में विकास योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से संबंधित सफलता की कहानियों पर आधारित 'किस्सा विकास का' पुस्तिका का लोकार्पण किया। इस दौरान उन्हें प्रकाशित साहित्य के बारे में विभाग के प्रमुख शासन सचिव श्री अभय कुमार एवं आयुक्त डॉ. नीरज के. पवन ने विस्तार से अवगत कराया।

मुख्यमंत्री श्री गहलोत ने प्रचार साहित्य की सराहना करते हुए कहा कि प्रकाशित पुस्तिकाओं एवं 'राजस्थान सुजस' के जरिए विकास योजनाएं व्यापक वर्ग तक पहुंचेंगी। उन्होंने प्रकाशित साहित्य पर स्वयं हस्ताक्षर करते हुए इसके लिए विभाग को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। ●

ऑनलाइन वैश्विक निबंध प्रतियोगिता के पोस्टर का विमोचन

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने राजस्थान सरकार के कार्यकाल का शानदार और सफलतम एक वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की ओर से जयपुर के जवाहर कला केन्द्र में आयोजित प्रदर्शनी में ऑनलाइन वैश्विक निबंध प्रतियोगिता के पोस्टर का विमोचन किया।

सूचना एवं जनसम्पर्क मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने बताया कि भारतीय संविधान के अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित किए जाने की 70वीं वर्षगांठ के अवसर पर सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान सरकार की ओर से 'भारत मे सुदृढ़ लोकतंत्र की स्थापना में संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान' विषय पर ऑनलाइन वैश्विक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ 3 निबन्धकारों को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार दिया जाएगा।

सूचना एवं जनसम्पर्क मंत्री ने बताया कि निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार स्वरूप 1000 डॉलर की राशि द्वितीय पुरस्कार में 700 की राशि तथा तृतीय पुरस्कार में 500 डॉलर राशि विजेताओं को दी जाएगी। इसी प्रकार 100-100 डॉलर राशि के 11 सांत्वना पुरस्कार भी दिए जाएंगे। ●

स्वस्थ राजस्थान की दिशा में 'निरोगी राजस्थान'

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि स्वस्थ राजस्थान का सपना साकार हो और हमारा प्रदेश स्वास्थ्य के क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य बने। इस दिशा में 'निरोगी राजस्थान अभियान' एक बड़ा कदम है। उन्होंने कहा कि सरकार इस परिकल्पना के साथ काम कर रही है कि राज्य का प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ रहे।

श्री गहलोत 'रन फॉर निरोगी राजस्थान' कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य के लोगों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और उनके निदान के लिए सरकार ने यह पहल की है। इस अभियान के जरिए हर व्यक्ति के स्वास्थ्य का परीक्षण किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अभियान में जनसंख्या नियंत्रण पर विशेष ध्यान देने के साथ ही वृद्धावस्था, महिला स्वास्थ्य, किशोरावस्था स्वास्थ्य, व्यसन रोग, संचारी रोग, गैर संचारी रोग, टीकाकरण एवं प्रदूषण जनित रोगों से बचाव एवं उपचार पर फोकस किया जाएगा। साथ ही आमजन को स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर विभिन्न बीमारियों की रोकथाम के लिए जागरूक करने का प्रयास किया जाएगा। मिलावट की रोकथाम के लिए प्रदेशभर में सघन अभियान चलाकर खाद्य पदार्थों में मिलावट की पहचान की जाएगी और मिलावट करने वालों के विरूद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी।

श्री गहलोत ने कहा कि हमारी पिछली सरकार में हमने बिना किसी भेदभाव के सभी के लिए मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना और मुख्यमंत्री निःशुल्क जांच योजना प्रारंभ की थी। इस बार हमने इन दोनों योजनाओं का दायरा बढ़ाते हुए निःशुल्क दवाओं और जांचों की संख्या बढ़ाई है। युवा पीढ़ी को नशा मुक्त रखने की दिशा में ई-सिगरेट और हुक्काबार पर प्रतिबंध लगाया है। •

जन-आधार कार्ड का शुभारम्भ

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि प्रदेश का हर व्यक्ति स्वस्थ रहे, वह बीमार ही नहीं हो। इस सोच के साथ राज्य सरकार ने 'निरोगी राजस्थान' अभियान आज शुरू किया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इस अभियान को योजनाबद्ध रूप से घर-घर तक पहुंचाकर लोगों को बेहतर स्वास्थ्य के लिए जागरूक करेगी ताकि लोग लाइफ स्टाइल से जुड़ी बीमारियों सहित अन्य गंभीर रोगों से खुद को बचा सकें।

श्री गहलोत सवाई मानसिंह अस्पताल के सभागार में 'निरोगी राजस्थान अभियान' के शुभारम्भ समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विभिन्न योजनाओं के लाभ सरलता, सुगमता एवं पारदर्शी रूप से आमजन तक पहुंचाने के उद्देश्य से 'एक नम्बर, एक कार्ड, एक पहचान' के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए पांच महिलाओं को जन-आधार कार्ड प्रदान कर जन-आधार योजना का शुभारम्भ किया। साथ ही 'निरोगी राजस्थान' के लोगो, फोल्डर एवं मोबाइल एप का लोकार्पण भी किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भावना थी कि हर व्यक्ति निरोगी रहे। उनकी इस भावना के अनुरूप राज्य सरकार ने यह अभियान चलाकर नया इतिहास बनाने की ओर कदम बढ़ाया है। राज्य सरकार सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य मित्र

एवं आमजन के सहयोग से इस अभियान को एक बड़े आंदोलन के रूप में घर-घर तक पहुंचाएगी। हमारा प्रयास है कि हर गांव में एक महिला एवं एक पुरूष 'स्वास्थ्य मित्र' के माध्यम से लोगों को बीमारियों से बचाव के बारे में जागरूक किया जाए। इसके लिए करीब 80 हजार स्वास्थ्य मित्रों का सहयोग लिया जाएगा।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि एक वर्ष की अल्प अवधि में राज्य सरकार द्वारा लिए गए फैसलों और नवाचारों से राजस्थान स्वास्थ्य के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की परिकल्पना है कि प्रदेश में हर व्यक्ति निरोगी रहे। उन्होंने कहा कि जनचेतना के इस कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला एवं बाल विकास, वन एवं पर्यावरण, खाद्य, शिक्षा, गृह, खेल एवं युवा मामलात, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग सहयोग करेंगे। नारायणा अस्पताल समूह के संस्थापक और चेयरमैन श्री देवीप्रसाद शेट्टी ने कहा कि तमाम चिकित्सा सुधारों के बावजूद विश्व स्वास्थ्य संगठन की रैंकिंग में भारत आज भी 112वें नम्बर पर है। राजस्थान सरकार के इस 'निरोगी राजस्थान अभियान' से लोगों को बेहतर स्वास्थ्य मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि अब समय डिजिटल हैल्थ केयर को अपनाने का है।

इंस्टीट्यूट ऑफ लीवर एण्ड बायलरी साइंसेज के निदेशक डॉ. एसके सरीन ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से 'निरोगी राजस्थान अभियान' के प्रभावी क्रियान्वयन के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने आमजन के स्वास्थ्य की इतनी बड़ी जिम्मेदारी लेकर एक ऐतिहासिक कदम उठाया है।

राजस्थान की स्वास्थ्य सेवाएं पूरे देश में मिसाल

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा है कि राजस्थान की स्वास्थ्य सेवाएं पूरे देश में एक मिसाल है। मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना एवं निःशुल्क जांच योजना को पूरे देश में सराहा गया है। अब 'निरोगी राजस्थान' अभियान की शुरूआत बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं की दिशा में बड़ा कदम है।

श्री गहलोत झुंझुनूं जिले के पिलानी में कल्पवृक्ष अस्पताल एवं रिसर्च सेंटर फाउंडेशन के मल्टी स्पेशियलिटी सेवाओं के विस्तार के शुभारम्भ समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य का प्रत्येक व्यक्ति बेहतर जीवन शैली अपनाकर स्वस्थ रहे तथा बीमार होने पर उसे उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधाएं मिलें, इस सोच के साथ निरोगी राजस्थान अभियान का शुभारम्भ किया गया है। निरोगी राजस्थान के तहत प्रत्येक व्यक्ति का स्वास्थ्य परीक्षण किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बीमारियों के इलाज में होने वाले बड़े खर्च के कारण कोई परिवार बर्बाद नहीं हो। सरकार इस सोच के साथ स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में कदम उठा रही है। हमारे पिछले कार्यकाल में शुरू की गई मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा तथा निःशुल्क जांच योजना में दवाओं और जांचों की संख्या और बढ़ा दी गई है। हार्ट, किडनी एवं लीवर रोगों की महंगी दवाएं भी अब निशुल्क मिल रही हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आने वाले दिनों में राजस्थान के प्रत्येक जिले में मेडिकल कॉलेज होगा।

श्री गहलोत ने शिक्षा के क्षेत्र में झुंझुनूं जिले में हो रहे कार्यों की सराहना की और कहा कि आजादी के पहले भी यहां शिक्षा के लिए काफी जागरूकता थी। देश सेवा के लिए यहां के घर-घर में जज्बा है और बड़ी संख्या में युवा देश की सेना में हैं। देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में यहां के उद्यमियों का बड़ा योगदान रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में देश की अर्थव्यवस्था कठिन दौर से गुजर रही है। देश-दुनिया के बड़े अर्थशास्त्री इस पर चिंता जाहिर कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि हर परिस्थिति में राज्य सरकार पूरी मजबूती के साथ जनता के साथ खड़ी है।

मुख्यमंत्री ने महिला सशक्तीकरण का जिक्र करते हुए कहा कि राजस्थान की महिलाओं को घूंघट की कैद से अब बाहर आना चाहिए। महिलाओं को अब इस प्रथा को त्यागना चाहिए ताकि उनकी ताकत देश के विकास में काम आ सके। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी का स्मरण करते हुए कहा कि उनके प्रयासों से महिलाओं को पंचायती राज संस्थाओं में समुचित स्थान मिला।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य राज्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग ने स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतरी के लिए मुख्यमंत्री की संवेदनशीलता एवं प्रतिबद्धता की सराहना करते की। उन्होंने बताया कि शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में आने वाले समय में बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। पिलानी विधायक श्री जेपी चंदेलिया ने पीएचसी को सीएचसी में क्रमोन्नत करने पर मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

राज्य सरकार की पहली वर्षगांठ पर किसान सम्मेलन

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि जनता की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं का अहसास हमारी सरकार को है। हमारा पूरा प्रयास है कि जनता से किए वादों और उनकी उम्मीदों पर हम खरा उतरें। उन्होंने कहा कि प्रदेश के किसान भाइयों सहित समाज के सभी वर्गों की खुशहाली के लिए हमने बीते एक साल में लगातार कल्याणकारी फैसले लिए हैं।

श्री गहलोत राज्य सरकार का एक वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर किसान सम्मेलन में प्रदेश के कोने-कोने से आए हजारों किसानों, पशुपालकों एवं खेतीहर मजदूरों को सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने एक हजार करोड़ के 'किसान कल्याण कोष' का शुभारम्भ किया और 'राजस्थान कृषि प्रसंस्करण, कृषि व्यवसाय एवं कृषि निर्यात प्रोत्साहन नीति-2019' जारी की। प्रदेश के किसानों को खेती की आधुनिकतम तकनीक से जोड़ने के लिए उन्होंने 'कृषि ज्ञान धारा कार्यक्रम' की शुरूआत की। 'ईज ऑफ डूईंग फार्मिंग' की दिशा में ये सभी राज्य सरकार के महत्त्वपूर्ण कदम हैं।

श्री गहलोत ने कहा कि सरकार बनते ही पहला फैसला हमने किसानों की कर्ज माफी के रूप में किया। हमने यह भी फैसला किया कि बिजली के बढ़े हुए दामों का भार पांच साल तक किसानों को नहीं उठाना पड़े। राज्य सरकार इसके लिए 12 हजार करोड़ रुपए की सब्सिडी दे रही है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में बिजली के दाम बढ़ने की स्थिति में किसानों पर आने वाले 2300 करोड़ रुपए के भार को भी हमारी सरकार वहन करेगी। किसानों को इस संबंध में किसी तरह की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने एक ऐतिहासिक फैसला लिया जिसके तहत राज्य में फूड प्रोसेसिंग इकाई लगाने वाले किसानों को 10 हैक्टेयर भूमि तक लैण्ड यूज चेंज कराने की आवश्यकता नहीं होती है। काश्तकारों को उनकी उपज का पूरा दाम देने के लिए मूंग और मूंगफली की न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद के साथ ही हमारी सरकार हर संभव प्रयास कर रही है जिससे किसानों को खाद एवं बीज लेने में कोई परेशानी न आए। जैविक खेती, बीज उत्पादन, एग्री प्रोसेसिंग, पैकेजिंग और कृषि उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

श्री गहलोत ने कहा कि भूमि विकास बैंक में समय पर लोन चुकाने वाले किसानों को ब्याज में पांच प्रतिशत की छूट मिलेगी। उन्होंने कहा कि हाल ही में हुई ओलावृष्टि के कारण हुई क्षति का

आकलन करने के लिए अधिकारियों को निर्देश दे दिए गए हैं।

श्री गहलोत ने प्रगतिशील किसानों से अपील की कि वे नई तकनीक के आधार पर उत्पादन बढ़ाने के अपने अनुभवों का लाभ दूसरे किसानों तक भी पहुंचाएं। बूंद-बूंद सिंचाई और फव्वारा सिंचाई पद्धति के उपयोग एवं कृषि उत्पादों की मार्केटिंग के गुर सिखाएं। उन्होंने जनप्रतिनिधियों का भी आह्वान किया कि वे किसानों को कम पानी में ज्यादा फसल उत्पादन की तकनीक अपनाने के लिए प्रेरित करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब देश आजाद हुआ तब किसानों का खेतों पर मालिकाना हक नहीं था। ज्यादातर खेत जागीरदारों के कब्जे में थे, लेकिन तत्कालीन सरकार ने गांधीजी के सपने को साकार करते हुए किसानों के हित में निर्णय लिया और किसानों को उनका हक मिला। उन्होंने कहा कि देश जब अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं था तब पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने देश में हरित क्रांति की शुरूआत की और आज हम खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हैं।

सम्मेलन में कृषि मंत्री श्री लालचंद कटारिया ने कहा कि राज्य सरकार ने ग्राम सेवा सहकारी संस्थाओं के माध्यम से किसानों को प्रमाणित बीज का वितरण सुनिश्चित किया है। अगले सीजन से मूंगफली का बीज उपलब्ध कराया जाएगा। सहकारिता मंत्री श्री उदयलाल आंजना ने कहा कि आधार आधारित सत्यापन से हमारी सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि ऋण माफी का लाभ पात्र किसानों को मिले। साथ ही ऋण वितरण में भी

पारदर्शिता सुनिश्चित की गई है। मुख्य सचिव श्री डीबी गुप्ता ने कहा कि कृषक कल्याण कोष के गठन तथा नई कृषि प्रसंस्करण नीति से जीरो बजट फार्मिंग को बल मिलेगा।

इस मौके पर श्री गहलोत एवं अन्य अतिथियों ने कृषि एवं उद्यानिकी विभाग की विभिन्न योजनाओं के तहत लाभार्थी किसानों को चेक प्रदान किए। उन्होंने विभिन्न विभागों एवं संस्थाओं के माध्यम से लगाई गई प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया और किसानों द्वारा किए जा रहे नवाचारों की सराहना की।

इस अवसर पर राज्य मंत्रीपरिषद के सदस्य, विधायक, जिला प्रमुख एवं अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी सहित बड़ी संख्या में आमजन, युवा एवं महिलाएं भी उपस्थित थे। •

प्रदेश के पहले जनता क्लिनिक का शुभारंभ

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने राजस्थान को रोग मुक्त बनाने की दिशा में एक और बड़ा कदम बढ़ाते हुए जयपुर के वाल्मीकि नगर में प्रदेश के पहले जनता क्लिनिक का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि बीमारियों के इलाज में लोगों का बहुत पैसा खर्च होता है। गरीब लोग तो पैसे के अभाव में इलाज ही नहीं करवा पाते। लोगों को अच्छी चिकित्सा सुविधाएं उनके घर के नजदीक ही मिल सकें, इसके लिए राज्य सरकार जनता क्लिनिक खोल रही है।

श्री गहलोत ने कहा कि हमारा प्रयास है कि स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में राजस्थान देश का सिरमौर राज्य बने। इसके लिए निरोगी राजस्थान अभियान एवं जनता क्लिनिक जैसे महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं। उन्होंने इस क्लिनिक की शुरूआत में सहयोग के लिए समाजसेवी श्री विनोद अग्रवाल को साधुवाद देते हुए कहा कि भामाशाहों, सीएसआर गतिविधियों, विधायक-सांसद निधि, स्वयंसेवी संस्थाओं सहित आमजन के सहयोग से अधिक से अधिक जनता क्लिनिक खोले जाएंगे। इन क्लिनिकों में निशुल्क दवाओं के साथ आवश्यक निशुल्क जांच की सुविधा घर के नजदीक ही मिल सकेंगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गांव-ढाणी तक निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाओं को पहुंचाने के कदम की न केवल विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भरपूर सराहना की, बल्कि देश के कई राज्यों ने भी इसका अध्ययन किया। अब हमने इन दोनों योजनाओं में निःशुल्क दवाओं और निःशुल्क जांचों की संख्या बढ़ाई है। महात्मा गांधी आयुष्मान भारत राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ 1 करोड़ 10 लाख परिवारों तक पहुंचाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि गरीब आदमी के दरवाजे तक चिकित्सा सुविधाएं पहुंचाने के लिए राज्य सरकार ने यह महत्वपूर्ण पहल की है। इससे सवाई मानसिंह अस्पताल पर मरीजों का दबाव कम हो सकेगा। उन्होंने कहा कि प्रथम चरण में जयपुर में 12 तथा जोधपुर में 3 जनता क्लिनिक की शुरूआत की जा रही है। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य राज्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने आम आदमी को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं मुहैया कराने की सोच के साथ बजट में जनता क्लिनिक खोले जाने की घोषणा की थी। ●

फोटोग्राफी से तैयार कैलेंडर का विमोचन

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने मुख्यमंत्री निवास पर बौद्धिक दिव्यांग बच्चों द्वारा लिए फोटोग्राफ से तैयार सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के वर्ष-2020 के कैलेंडर का विमोचन किया।

श्री गहलोत ने बच्चों द्वारा लिए गए छायाचित्रों की सराहना की और कहा कि फोटोग्राफी कार्यशाला के दौरान दिव्यांग बच्चों ने जो प्रशिक्षण प्राप्त किया है, इससे उनमें छिपी हुई प्रतिभाएं आगे आएंगी। साथ ही उनकी रचनात्मकता को कैलेंडर के जरिए आमजन तक पहुंचाने से इन बच्चों का उत्साहवर्धन होगा और उनमें सीखने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री मास्टर भंवरलाल मेघवाल ने मुख्यमंत्री को बताया कि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग तथा विशेष योग्यजन निदेशालय की पहल पर 'द ओपन सोसायटी' के माध्यम से बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के लिए 23 से 27 दिसम्बर तक फोटोग्राफी कार्यशाला 'कैमरा और कहानियां' का आयोजन किया गया था।

राजकीय बौद्धिक दिव्यांग केंद्र जामडोली, दिशा, प्रयास, आह्वान तथा एसवीएन संस्थान के दिव्यांग बच्चों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। इसमें बच्चों को छायाचित्रों के मूलभूत सिद्धांतों का प्रशिक्षण दिया गया। बच्चों द्वारा लिए गए फोटोग्राफ्स का उपयोग कर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग ने वर्ष 2020 का कैलेंडर तैयार करवाया है। ●

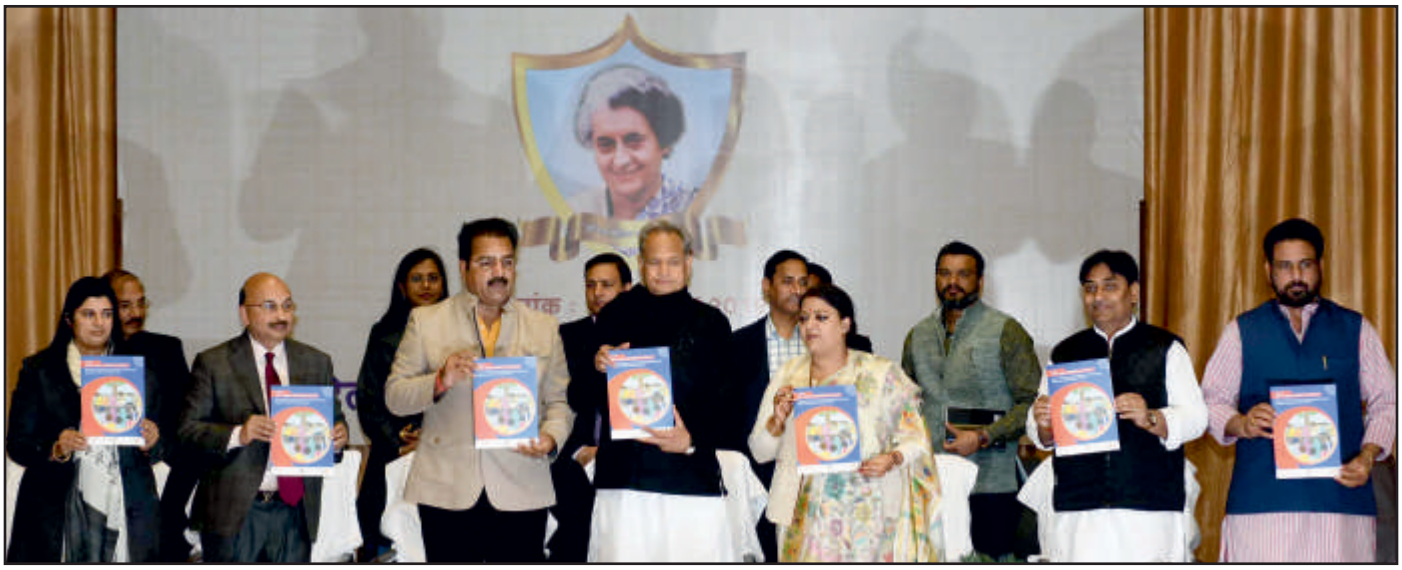

'आई एम शक्ति' का शुभारम्भ

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने बुधवार को महिला सशक्तीकरण को समर्पित एक हजार करोड़ रूपए की इंदिरा महिला शक्ति (आई एम शक्ति) निधि की योजनाओं का शुभारम्भ किया।

योजना के शुभारम्भ के मौके पर राज्य कृषि प्रबंध संस्थान, दुर्गापुरा के ऑडिटोरियम में मौजूद प्रदेशभर से आई महिलाओं को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि इस निधि का नाम पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नाम पर इसलिए रखा गया है कि वे अपने आप में महिला सशक्तीकरण की सबसे बड़ी प्रतीक हैं। उन्होंने देश के लिए अपनी जान की कुर्बानी दे दी और मरने से पहले कहा था कि 'मेरी जान भी चली जाए तो मेरे खून का एक-एक कतरा इस देश को मजबूती देगा।'

श्री गहलोत ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री व राजीव गांधी का भी सपना था कि महिलाओं को बराबरी का हक मिले और सत्ता में उनकी भागीदारी बढ़े। उनके प्रयासों से संविधान का 73वां एवं 74वां संशोधन हुआ और महिलाओं को गांव की सरपंच से लेकर पंचायत समिति प्रधान एवं जिला प्रमुख बनने का अवसर मिला।

मुख्यमंत्री ने 'आई एम शक्ति' निधि के तहत संचालित योजनाओं के शुभारम्भ पर प्रदेशभर की महिलाओं को बधाई दी और कहा कि राज्य सरकार उनके सशक्तीकरण के लिए हर संभव कदम उठाएगी और योजना में जरूरत पड़ने पर फण्ड और बढ़ाया जा सकेगा। कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री श्रीमती ममता भूपेश ने कहा कि महिलाओं को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक हजार करोड़ रूपए का यह कोष मील का पत्थर साबित होगा। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने वर्ष 2019-20 के बजट में इसकी घोषणा की थी। इसके तहत सरकार ने प्रतिवर्ष 200 करोड़ रुपए यानी कुल पांच वर्ष के लिए एक हजार करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की मंशा महिला स्वयं सहायता समूहों को और मजबूती प्रदान करने की है ताकि प्रदेश की आधी आबादी आत्मनिर्भर बन सके और आर्थिक रूप से सशक्त होकर सम्मान के साथ जीवनयापन कर सके।

मुख्य सचिव श्री डीबी गुप्ता ने कहा कि इस निधि के तहत संचालित योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को उद्यम स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करने, उनके कौशल विकास के साथ ही उन्हें आर्थिक रूप से मजबूती प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त होगा। महिला एवं बाल विकास विभाग के सचिव डॉ. के.के. पाठक ने इंदिरा महिला शक्ति निधि के माध्यम से प्रदेश की महिलाओं के सशक्तीकरण के लिये प्रारंभ की गई पांच विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस निधि से उद्यम के लिए ऋण अनुदान के तहत पांच हजार महिला स्वयं सहायता समूहों यानी इससे जुड़ी करीब 50 हजार महिलाओं को सीधा लाभ मिलेगा।

डॉ. पाठक ने बताया कि इंदिरा महिला शक्ति उद्यम प्रोत्साहन योजना के माध्यम से महिलाओं अथवा महिला स्वयं सहायता समूहों को एक करोड़ रुपए तक के ऋण मिल सकेंगे, इंदिरा महिला शक्ति प्रशिक्षण एवं कौशल संवर्द्धन योजना के तहत 75 हजार महिलाओं एवं बालिकाओं को निःशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण, इंदिरा महिला शक्ति लेखा प्रशिक्षण योजना के तहत 5,000 महिलाओं को लेखांकन का प्रशिक्षण जैसी गतिविधियों का संचालन भी होगा। उन्होंने बताया कि इंदिरा महिला शक्ति शिक्षा सेतु योजना के तहत ड्रॉपआउट बालिकाओं और शिक्षा से वंचित रही महिलाओं को राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के माध्यम से पढ़ाई के लिए फीस का पुनर्भरण किया जाएगा। इसका लाभ 50 हजार बालिकाओं और महिलाओं को मिलेगा। इंदिरा महिला शक्ति कौशल सामर्थ्य योजना में भी 10 हजार महिलाओं को कौशल प्रशिक्षण दिया जाएगा। •

राजस्थान औद्योगिक विकास नीति, रिप्स, मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना सौर ऊर्जा नीति, पवन एवं हाइब्रिड ऊर्जा नीति का शुभारम्भ

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने प्रदेश के औद्योगिक विकास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण पांच नीतियों का गुरूवार को शुभारम्भ किया। बिडला ऑडिटोरियम में आयोजित एमएसएमई कॉनक्लेव में आए उद्यमियों को भरोसा दिलाते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे समय में जबकि देश में अर्थव्यवस्था मंदी के दौर से गुजर रही है राजस्थान सरकार अपनी नीतियों तथा योजनाओं के माध्यम से उन्हें संबल देने में कोई कमी नहीं छोड़ेगी। राज्य सरकार उनकी चिंताओं को समझती है और उन्हें निवेश के लिए अच्छा वातावरण देगी।

श्री गहलोत ने समावेशी, संतुलित और सशक्त औद्योगिक विकास तथा राजस्थान को उद्यमियों का पसंदीदा इन्वेस्टमेंट डेस्टीनेशन बनाने के लिए राजस्थान औद्योगिक विकास नीति, राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना, मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना, राजस्थान सौर ऊर्जा नीति तथा राजस्थान पवन एवं हाइब्रिड ऊर्जा नीति-2019 का शुभारम्भ किया। उन्होंने विभिन्न श्रेणियों में 42 उद्यमियों को राजस्थान उद्योग रत्न तथा राजस्थान निर्यात पुरस्कार प्रदान किए।

मंदी से जूझते उद्योगों को पूरा सहयोग करेगी राज्य सरकार

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार को एक साल पूरा हो गया है। इस अवधि में हमारी नीति और नीयत आप सबके सामने है। हमने पूरी ईमानदारी से कोशिश की है कि इकॉनोमिक स्लो डाउन, उत्पादन तथा मांग में कमी की चिंता से जूझते उद्योग जगत को राजस्थान में सरकार की ओर से पूरा सहयोग और समर्थन मिले। उन्होंने कहा कि राजस्थान के कारोबारियों ने अपनी उद्यमिता के बलबूते पूरे विश्व में प्रदेश का मान-सम्मान बढ़ाया है। देश में अर्थव्यवस्था कैसे पटरी पर लौटे यह हम सबकी चिंता का विषय होना चाहिए।

उद्योगों और ग्रीन एनर्जी में मददगार होंगी हमारी नीतियां

श्री गहलोत ने कहा कि उद्योग-धन्धों के बिना किसी भी प्रदेश का विकास संभव नहीं है। राज्य के प्रथम सेवक के रूप में उद्योग जगत की चिंताओं से मैं भली-भांति वाकिफ हूं। आपकी समस्याओं को दूर कर बेहतर औद्योगिक माहौल देने के लिए ही ये पांचों नीतियां हमने यहां लॉन्च की हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि ये नीतियां प्रदेश में उद्योग स्थापित करने, उनके विस्तार तथा ग्रीन एनर्जी के उत्पादन में मददगार साबित होंगी।

सीईटीपी लगाने पर 50 लाख तक मिलेगा अनुदान

मुख्यमंत्री ने कहा कि एमएसएमई उद्यमियों को सरकारी दफ्तरों के चक्करों से बचाने तथा तीन वर्ष तक अनुमति एवं स्वीकृति की बाध्यताओं से मुक्त करने के लिए हमारी सरकार ने एमएसएमई एक्ट जैसा क्रांतिकारी कानून लागू किया। जिसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। जोधपुर, पाली तथा

बालोतरा के वस्त्र उद्योग को बढावा देने के साथ ही वहां के उद्यमियों की प्रदूषण से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सीईटीपी लगाने पर रीको की ओर से 50 लाख रुपए तक अनुदान दिया जाएगा। पहले यह अनुदान 25 लाख रुपए था। प्रदेश के 11 जिलों में रीको के माध्यम से नए औद्योगिक पार्क बनाए जाएंगे। इसी तरह बाडमेर में रिफाइनरी के काम को भी तेजी से आगे बढ़ा रहे हैं।

सौर एवं पवन ऊर्जा नीति में कई महत्वपूर्ण प्रावधान

ऊर्जा मंत्री श्री बीडी कल्ला ने नई सौर ऊर्जा नीति तथा पवन एवं हाईब्रिड ऊर्जा नीति के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सौर ऊर्जा उत्पादन के मामले में राजस्थान देश में दूसरे स्थान पर है। नई नीतियों में वर्ष 2024-25 तक 30 हजार मेगावाट सौर ऊर्जा तथा 4 हजार मेगावाट पवन ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। इन नीतियों में सौर एवं पवन ऊर्जा उपकरण निर्माताओं को स्टांप शुल्क में शत-प्रतिशत छूट, पचास प्रतिशत की रियायती दर पर भूमि आवंटन, दस वर्ष तक विद्युत शुल्क में छूट, एसजीएसटी में 90 प्रतिशत तक निवेश अनुदान सहित कई आकर्षक प्रावधान किए गए हैं।

रिप्स को बनाया अधिक सरल और सुगम

उद्योग मंत्री श्री परसादीलाल मीणा ने कहा कि राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना (रिप्स)-2019 को अधिक सरल एवं सुगम बनाया गया है। इसमें पात्र उद्योगों को विद्युत कर, स्टांप शुल्क में शत-प्रतिशत छूट प्रदान की गई है। निवेश अनुदान भी बढ़ाकर एसजीएसटी का 75 प्रतिशत किया गया है। रीको औद्योगिक क्षेत्रों की भूमि की नीलामी प्रक्रिया में पारदर्शिता लाने के लिए तय किया गया है कि अब इनकी नीलामी ई-ऑक्शन के जरिए होगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के दरवाजे उद्यमियों के लिए हमेशा खुले हुए हैं। प्रदेश के सभी संभागों में जाकर उद्यमियों की समस्याएं सुनी गई हैं और संवेदनशीलता के साथ उनका समाधान किया गया है।

मुख्य सचिव श्री डीबी गुप्ता ने कहा कि सौर ऊर्जा के क्षेत्र में राजस्थान सर्वाधिक संभावनाओं वाला प्रदेश है। यहां 365 में से 325 दिन सूर्य की प्रखर किरणें उपलब्ध रहती हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 26 लाख से अधिक एमएसएमई हैं जिनके माध्यम से 46

लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिला हुआ है। उन्होंने बताया कि राज उद्योग मित्र पोर्टल शुरू होने के बाद 2600 से अधिक एमएसएमई उद्यमियों ने इस पर आवेदन किया है।

एमएसएमई उद्यमियों ने कहा – दफ्तरों के चक्कर से मिली मुक्ति

कॉन्क्लेव में राजउद्योग मित्र पोर्टल पर आवेदन करने वाले एमएसएमई उद्यमियों ने राज्य में एमएसएमई एक्ट के बाद उद्यम स्थापित करने में आई सुगमता के लिए सरकार की सराहना की। इन उद्यमियों ने अपने अनुभव भी सुनाए और कहा कि इससे उनकी मानसिकता सरकारी सिस्टम के प्रति बदली है। उन्हें दफ्तरों के चक्कर से मुक्ति मिली है और वे अपना उद्यम स्थापित करने के लिए आगे आ रहे हैं।

इस अवसर पर सहकारिता मंत्री श्री उदयलाल आंजना, चिकित्सा मंत्री डॉ. रघु शर्मा, कृषि मंत्री श्री लालचन्द कटारिया, परिवहन मंत्री श्री प्रताप सिंह खाचरियावास, शिक्षा राज्यमंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा, महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री श्रीमती ममता भूपेश, वन राज्यमंत्री श्री सुखराम विश्नोई, मोटर गैराज राज्यमंत्री श्री राजेन्द्र यादव, मुख्य सचेतक डॉ. महेश जोशी, उप मुख्य सचेतक श्री महेन्द्र चौधरी, विधायक श्री अमीन कागजी एवं श्री रफीक खान, अति. मुख्य सचिव उद्योग श्री सुबोध अग्रवाल, रीको के अध्यक्ष श्री कुलदीप रांका, ऊर्जा विभाग के प्रमुख शासन सचिव श्री कुंजीलाल मीणा तथा राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम के अध्यक्ष श्री अजिताभ शर्मा भी मौजूद थे। •

घर के पास मिलेगी चिकित्सा सुविधा, निरोगी होगा राजस्थान

चिकित्सा एवं जनसम्पर्क मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि राजस्थान में चिकित्सा के क्षेत्र में ऐतिहासिक विकास की शुरुआत हो चुकी है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में निरोगी राजस्थान अभियान पूरे प्रदेश के लिए स्वास्थ्य का नया आधार बनेगा।

डॉ. शर्मा ने अजमेर के नांद गांव में 1.85 करोड़ की लागत से नवनिर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का लोकार्पण करने के बाद उपस्थित जन समूह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राजस्थान में निरोगी राजस्थान अभियान शुरू किया गया है। लोगों को उनके घर के पास ही चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए जनता क्लीनिक की शुरुआत की गई है। चिकित्सा मंत्री ने कहा कि राजस्थान देश का पहला राज्य है जो अपनी 7 करोड़ से अधिक आबादी को **राइट टू हैल्थ** यानी स्वास्थ्य का अधिकार देने जा रहा है। हमारी चिकित्सा खासकर निःशुल्क दवा व जांच योजना पूरे देश में अव्वल है।

उन्होंने कहा कि अजमेर में चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार के लिए राज्य सरकार बड़ी धनराशि खर्च करने जा रही है। मेडिकल कॉलेज छात्रावास का नया भवन बनेगा। कॉलेज में पीजी व यूजी की सीटें बढ़ी हैं। डॉ. शर्मा ने कहा कि राज्य के 30 जिलों में मेडिकल कॉलेज हो गए हैं। शेष 3 जिलों में भी कॉलेज खोलने की योजना पर काम चल रहा है।

समारोह में राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री वैभव गहलोत ने कहा कि राज्य सरकार ने चिकित्सा सेवाओं के क्षेत्र में अभूतपूर्व विस्तार किया है, चिकित्सा सेवाओं को गांव-गांव ढाणी-ढाणी तक पहुंचाया है। गम्भीर बीमारियों में राहत पहुंचाने के लिए सरकार का लक्ष्य है। उसी के अनुरूप गत एक वर्ष में अनेक घोषणाओं को पूरा किया गया है।

इस मौके पर राजस्थान बीज निगम के पूर्व अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि सरकार ने निरोगी राजस्थान का अभियान का शुभारम्भ किया है। इस अभियान को जन आंदोलन बनाने के लिए सभी लोगों को जागरूक करें। उन्होंने बताया कि सरकार कैंसर, किडनी, हार्ट जैसी गंभीर बीमारियों का भी निःशुल्क इलाज कर लोगों को राहत प्रदान कर रही है। उन्होंने गांव की खेल प्रतिभाओं को भी आगे बढ़ाने तथा उन्हें प्रोत्साहित किए जाने की जरूरत बताई।

समारोह में पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री नसीम अख्तर ने कहा कि इस नवीन प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के लोकार्पण से बूढ़ा पुष्कर से गोविंदगढ़ तक के लोगों को चिकित्सा सुविधा का लाभ मिल सकेगा। उन्होंने बताया कि निःशुल्क दवा वितरण में भी प्रदेश प्रथम स्थान पर रहा है। जिससे लोगों को काफी राहत मिली है।

समारोह में चिकित्सा मंत्री ने प्रथम संस्था द्वारा प्रदत्त पांच बच्चों को लैपटॉप का भी वितरण किया। वहीं नांद गांव के श्री गोकुल शास्त्री द्वारा लिखित पुस्तक नन्दा सरस्वती का भी विमोचन किया।

आरम्भ में अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एस.एस.जोधा ने बताया कि इस स्वास्थ्य केन्द्र पर 1.85 करोड़ रुपये की लागत आयी है। इसके बन जाने पर यहां प्रसूति, टीकाकरण, निःशुल्क दवा जांच जैसी सुविधाएं उपलब्ध होंगी। इससे लगभग 30 हजार की आबादी लाभान्वित होगी।

अंत में नांद के सरपंच श्री महेन्द्र सिंह ने आभार व्यक्त किया। समारोह में पूर्व विधायक डॉ. श्री श्रीगोपाल बाहेती, श्री राजकुमार जयपाल, जिला कलक्टर श्री विश्वमोहन शर्मा सहित अनेक जनप्रतिनिधि, अधिकारीगण एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

सरकार कर रही है चिकित्सा सुविधाओं में विस्तार

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार का संकल्प प्रदेश को 'निरोगी राजस्थान' बनाने का है। सरकार राज्य के हर व्यक्ति को बेहतर स्वास्थ्य सेवा मुहैया कराने के लिए चिकित्सा सुविधाओं में विस्तार कर रही है और जल्द ही 'राइट टू हेल्थ' कानून लाया जाएगा। उन्होंने कहा कि जनाना अस्पताल को एक करोड़ से अधिक लागत की एडवांस सोनोग्राफी मशीन उपलब्ध करायी जायेगी। डॉ. शर्मा चांदपोल स्थित जनाना अस्पताल में नवनिर्मित प्रसूति वार्ड, नर्सरी वार्ड, ब्लड बैंक एवं प्रतीक्षालय के लोकार्पण के पश्चात् आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की मंशा है कि राज्य का हर व्यक्ति निरोगी रहे। इसके लिए गत दिनों 'निरोगी राजस्थान' के रूप में जनजागरूकता अभियान की शुरूआत की गयी है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने गत एक साल में चिकित्सा सुविधाओं में व्यापक विस्तार किया है। उसी क्रम में आज यहां 30 बेड के प्रसूति वार्ड तथा 20 बेड के नर्सरी वार्ड का शुभारंभ किया गया है। इनके निर्माण पर दो करोड़ से अधिक की राशि खर्च की गई है। साथ ही 69 लाख रुपए व्यय कर अत्याधुनिक ब्लड बैंक की शुरुआत की गई है।

डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि पिछले एक साल में 15 नए चिकित्सा महाविद्यालय खोलने की स्वीकृति प्राप्त की है। वर्ष 2020 में हर जिला मुख्यालय पर मेडिकल कॉलेज और पांच सौ बेडेड अस्पताल खोलने का संकल्प पूरा करेंगे।

उन्होंने कहा कि प्रदेश को स्वस्थ रखने के लिए नशा मुक्ति और मिलावटी खाद्य पदार्थ पकड़ने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं। निःशुल्क दवा और जांच योजना का दायरा बढ़ाया गया है। मोहल्लों में जनता क्लिनिक खोलकर आमजन के द्वार पर चिकित्सा सुविधाएं पहुंचाने की शुरुआत की है। उन्होंने कहा कि सरकार हर व्यक्ति को चिकित्सा सुविधा हासिल करने का अधिकार प्रदान करेगी। इसके लिए आगामी विधानसभा सत्र में 'राइट टू हेल्थ' कानून लाने का प्रयास है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि हमारी संवेदनशील सरकार का प्रयास है कि अस्पताल में किसी भी नवजात बच्चे की मृत्यु नहीं हो। उन्होंने कहा कि गत वर्षों की तुलना में इस साल नवजात बच्चों की मौत के आंकड़ों में कमी आई है, लेकिन किसी भी नवजात बच्चे की मौत होना चिंता का विषय है।

परिवहन मंत्री श्री प्रतापसिंह खाचरियावास ने कहा कि सरकार प्रदेश में चिकित्सा सेवाओं के विस्तार और आमजन को सुविधाएं मुहैया कराने के लिए पूरा प्रयास कर रही है। अस्पतालों में आधुनिक जांच मशीनें लगाई जा रही हैं। कैंसर, किडनी और हार्ट जैसे रोगों सहित निःशुल्क दवाओं और जांचों की संख्या बढ़ाई गई है। उन्होंने मोहल्लों में जनता क्लिनिक खोलने को चिकित्सा क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम बताया और जनसंख्या नियंत्रण पर बल दिया। श्री खाचरियावास ने चिकित्सकों एवं पैरा मेडिकल स्टाफ से रोगियों और उनके परिजनों के साथ विनम्र एवं प्रेमपूर्वक व्यवहार करने का आह्वान किया।

चिकित्सा राज्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग ने कहा कि जनाना अस्पताल में चिकित्सा सुविधाओं में विस्तार प्रदेश को 'निरोगी राजस्थान' बनाने में मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने मदर एंड चाइल्ड केयर ट्रेकिंग सिस्टम विकसित करने की आवश्यकता बताई। सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सुधीर भंडारी एवं जनाना अस्पताल की अधीक्षक डॉ. लता राजोरिया ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। •

सरकार किसान, गरीब और पिछड़े वर्गों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में किसान, गरीब और पिछड़े वर्ग के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि सरकार जनता की आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं पर खरा उतरने का पूरा प्रयास कर रही है। राज्य में शिक्षा, सड़क, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, पेयजल सहित अन्य सुविधाएं सुलभ कराने में कोई कमी नहीं रखी जाएगी।

श्री गहलोत सीकर जिले के पलसाना कस्बे में पूर्व मंत्री श्री नारायण सिंह के अभिनन्दन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सरकार संवेदनशील, जवाबदेह और पारदर्शी शासन के अपने संकल्प के साथ आगे बढ़ रही है। जनकल्याण की दिशा में लगातार फैसले लिए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 31 हजार पदों पर तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती के लिए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की ओर से अगस्त में रीट परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। साथ ही प्रथम श्रेणी व्याख्याता के तीन हजार पदों पर भी सितम्बर माह तक भर्ती की जाएगी। उन्होंने कहा कि पीटीआई की भर्ती प्रक्रिया पूरी हो गई है। आने वाले दिनों में 40 हजार भर्तियां और की जाएंगी।

श्री गहलोत ने कहा कि हमारी सरकार ने सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में पेंशन राशि बढ़ाने के साथ ही प्रदेश में किसानों के लिए 5 साल तक बिजली की दरें नहीं बढ़ाने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पवन ऊर्जा और सौर ऊर्जा के क्षेत्र में अपार सम्भावनाएं मौजूद हैं। इस क्षेत्र में रोजगार के बड़े अवसर उपलब्ध होंगे।

उप मुख्यमंत्री श्री सचिन पायलट ने कहा कि श्री नारायण सिंह का आज क्षेत्र के किसान, युवा, बुजुर्ग सम्मान कर रहे हैं। यह उनका बड़प्पन है। वे पूरे प्रदेश में बेदाग छवि और बेबाक वक्ता के रूप में पहचाने जाते हैं। श्री नारायण सिंह ने एक छोटे से किसान परिवार से उठकर बिना पक्षपात जनता की सेवा की। उन्होंने कहा कि व्यक्ति के कर्मों को दुनिया में याद रखा जाता है।

समारोह में नारायण सिंह को चांदी का मुकुट पहनाकर सम्मानित किया गया। श्याम मंदिर कमेटी खाटूश्यामजी के अध्यक्ष शंभू सिंह चौहान ने 31 किलो की माला एवं अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

इस अवसर पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य राज्यमंत्री डॉ. सुभाष गर्ग, शिक्षा राज्यमंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा, विधायक श्री वीरेन्द्र सिंह, श्री महादेव सिंह खण्डेला, श्री सुरेश मोदी, श्रीमती रीटा चौधरी, श्री हाकम अली सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे। •

मुख्यमंत्री से मिली नर्मदा बचाओ आंदोलन की प्रमुख मेधा पाटकर

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत से मुख्यमंत्री कार्यालय में नर्मदा बचाओ आंदोलन की प्रणेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर ने मुलाकात की। मुलाकात के दौरान उन्होंने सरदार सरोवर बांध परियोजना के हजारों विस्थापितों के पुनर्वास एवं परियोजना से प्रभावित लोगों को मुआवजे के संबंध में चर्चा की।

श्री गहलोत ने बैठक में मौजूद अधिकारियों को निर्देश दिए कि नर्मदा कंट्रोल ऑथोरिटी के निर्णयों की समीक्षा के लिए गठित रिव्यू कमेटी की बैठक आयोजित करने के संबंध में केन्द्र सरकार के साथ-साथ मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात के मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखे जाएं। उन्होंने कहा कि पत्र में रिव्यू कमेटी की बैठक जल्दी बुलाये जाने का आग्रह करें ताकि परियोजना से जुड़ी समस्याओं एवं इस परियोजना से जुड़े राजस्थान के हितों के बारे में चर्चा की जा सके।

उल्लेखनीय है कि रिव्यू कमेटी ऑफ नर्मदा कंट्रोल ऑथोरिटी के चेयरमैन केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री हैं और इस रिव्यू कमेटी में राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात के मुख्यमंत्री भी शामिल हैं। यह कमेटी नर्मदा कंट्रोल ऑथोरिटी के फैसलों की समीक्षा करती है। •

महिलाओं पर अत्याचार रोकने के लिए उठाए कड़े कदम

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि महिलाओं पर अत्याचार एवं उत्पीड़न किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। राज्य सरकार ने ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए कड़े कदम उठाए हैं और आगे भी इसमें किसी तरह की कमी नहीं रखी जाएगी। राज्य सरकार जघन्य अपराधों के त्वरित अनुसंधान के लिए एक विशेष यूनिट बना रही है, जो जल्द से जल्द तफ्तीश कर पीड़िता को शीघ्र न्याय दिलाना सुनिश्चित करेगी।

श्री गहलोत रविन्द्र मंच सभागार में भारतीय महिला फेडरेशन के 21वें राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने मॉब लिंचिंग एवं ऑनर किलिंग के खिलाफ सख्त कानून बनाए हैं। केन्द्र से इन्हें मंजूरी का इंतजार है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार महिला सशक्तीकरण के लिए प्रतिबद्ध है। लोकसभा एवं राज्य विधानसभाओं में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने का संकल्प राज्य विधानसभा में पारित किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महिलाओं के स्वावलम्बन और सशक्तीकरण से ही समाज विकसित बनता है। ऐसे में जरूरी है कि महिलाएं घूंघट छोड़ें। पुरूष आगे बढ़कर इस प्रथा को समाप्त करने में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने महिला सशक्तीकरण की मिसाल पेश की। इसी प्रकार पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की पहल पर हुए 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन से महिलाओं को राजनीतिक प्रतिनिधित्व मिलना सुनिश्चित हुआ। श्री गहलोत ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की पैरवी करते हुए कहा कि असहमति का मतलब राष्ट्रद्रोह नहीं है। उन्होंने कहा कि देश को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों की आज और अधिक आवश्यकता है। संविधान की भावना के अनुरूप देश चलना चाहिए ताकि हर व्यक्ति को सामाजिक एवं आर्थिक न्याय मिल सके। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया के जरिए आज युवा पीढ़ी को गुमराह किया जा रहा है, स्वस्थ लोकतंत्र की दिशा में यह उचित नहीं है।

सामाजिक कार्यकर्ता श्री अतुल कुमार अंजान ने कहा कि सांझी संस्कृति और सांझी विरासत हमारे देश का आधार है। उन्होंने कहा कि गांधीजी हमारे विचारों में कल भी जिंदा थे, आज भी हैं और कल भी रहेंगे। उन्होंने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं को समान भागीदारी मिलनी चाहिए।

भारतीय महिला फेडरेशन की राष्ट्रीय अध्यक्ष अरूणा रॉय ने कहा कि राजस्थान वह राज्य है, जहां सूचना के अधिकार को सशक्त करने के साथ ही महिला समानता और उन्हें अधिकार देने की दिशा में अच्छा काम हुआ है। उन्होंने कहा कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है जिसे संविधान और गांधीजी के सिद्धान्तों पर आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

भारतीय महिला फेडरेशन की राष्ट्रीय महासचिव एनी राजा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य रेवती, भंवरी देवी तथा निशा सिद्धू आदि ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर देश के विभिन्न राज्यों से आई संगठन की पदाधिकारी, सोशल एक्टिविस्ट आदि भी मौजूद रहे। •

हाउसिंग बोर्ड की विभिन्न योजनाओं का शुभारम्भ एवं शिलान्यास

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि हमारी सरकार ने राजस्थान आवासन मंडल को फिर से मजबूत करने का काम किया है। अब मंडल पर यह दायित्व है कि वह आम आदमी के आवास के सपने को साकार करे और खोया विश्वास हासिल करे।

श्री गहलोत राजस्थान आवासन मंडल के मुख्यालय परिसर में मुख्यमंत्री शिक्षक आवासीय योजना, मुख्यमंत्री प्रहरी आवासीय योजना, आतिश मार्केट योजना मानसरोवर के शुभारंभ एवं जयपुर चौपाटी मानसरोवर के शिलान्यास समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने पुरस्कृत शिक्षकों को 10 प्रतिशत रियायती दर पर आवास देने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हाउसिंग बोर्ड बंद होने के कगार पर था। करोड़ों की लागत से बने करीब 22 हजार मकान धूल खा रहे थे। हमारी सरकार ने गरीब एवं जरूरतमंद लोगों को आवास मुहैया कराने के लिए बनाई गई इस संस्था को पुनः जीवन्त कर दिया है। इसी का नतीजा है कि कुछ महीनों में ही बड़ी संख्या में आवासन मंडल के मकानों की नीलामी हुई है।

श्री गहलोत ने कहा कि आवासन मंडल के मकानों की गुणवत्ता को लेकर आमजन में बहुत अच्छी धारणा नहीं है। बोर्ड को बेहतरीन गुणवत्ता के मकान बनाकर इस धारणा को बदलना चाहिए। अच्छे मकान बनेंगे तो लोग स्वतः ही उन्हें खरीदने के लिए आगे आएंगे। उन्होंने कहा कि इस संस्था का गठन इस उद्देश्य से किया गया है कि हर जरूरतमंद व्यक्ति को छत मिल सके। इसलिए आवासीय योजनाओं में ऐसे प्रावधान किए जाएं कि व्यक्ति रहने के उद्देश्य से ही मकान खरीदे। उनका बार-बार बेचान नहीं हो।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार में अच्छे काम करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए और निकम्मे एवं कामचोर अधिकारियों व कर्मचारियों को अनिवार्य सेवानिवृत्ति देने जैसे सख्त कदम उठाना जरूरी है। अच्छे काम करने वाले और नकारा कार्मिकों के साथ एक जैसा व्यवहार उचित नहीं है, इससे काम करने वाले लोगों के मन में निराशा का भाव पैदा होता है। कितना ही बड़ा अधिकारी हो उसे यह डर होना चाहिए कि काम नहीं करने पर उसकी नौकरी जा सकती है।

श्री गहलोत ने जयपुर को निखारने के लिए उनके पूर्व के कार्यकालों में उठाए गए कदमों का जिक्र करते हुए कहा कि परकोटे में बरामदे खाली करवाने, जेएलएन मार्ग एवं कठपुतली नगर के सड़क विकास के काम दृढ़ इच्छाशक्ति का परिणाम था। घाट की गूणी टनल, जयपुर मेट्रो, एलिवेटेड रोड जैसी दूरगामी परियोजनाओं से जयपुर की विश्व स्तर पर पहचान बनी। काबिल अधिकारियों एवं सरकार की इच्छा शक्ति के कारण ही ये काम संभव हो सके। नये अधिकारियों को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री श्री शांति धारीवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री की गांधीवादी सोच के कारण ही राजस्थान आवासन मण्डल फिर से क्रियाशील हो पाया और ई-टेंडरिंग एवं ई-ऑक्शन में राष्ट्रीय कीर्तिमान बनाया। उन्होंने कहा कि आवासन मण्डल को हमारी सरकार और मजबूत बनाएगी। उन्होंने कहा कि चारदीवारी स्थित आतिश मार्केट में आमजन के लिए पार्किंग सुविधा विकसित की जाएगी। उन्होंने कहा कि आवासन मण्डल छोटे शहरों में भी आवासीय योजनाएं लाएं। इससे लोगों का बड़े शहरों की ओर पलायन रुकेगा।

मुख्य सचिव श्री डी.बी गुप्ता ने कहा कि राज्य सरकार की इच्छाशक्ति एवं संकल्प का परिणाम है कि बोर्ड की योजनाओं में आमजन का भरोसा लौट रहा है। आवासन मण्डल के आयुक्त श्री पवन अरोड़ा ने कहा कि मात्र 35 कार्य दिवसों में 1 हजार दस आवासों की नीलामी से 162 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया गया है। इस अवसर पर आवासन मण्डल की ओर से श्री गहलोत को मुख्यमंत्री सहायता कोष में एक करोड़ रुपये का चेक भेंट किया गया।

इस अवसर पर परिवहन मंत्री श्री प्रतापसिंह खाचरियावास, मुख्य सचेतक श्री महेश जोशी, शिक्षा राज्य मंत्री श्री गोविंद सिंह डोटासरा, सूचना एवं जनसम्पर्क राज्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग, विधायक श्री रफीक खान, श्री अमीन कागजी, श्रीमती गंगा देवी, पुलिस महानिदेशक श्री भूपेंद्र सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं हाउसिंग बोर्ड के कार्मिक उपस्थित थे। •

पश्चिमी राजस्थान उद्योग हस्तशिल्प उत्सव का उद्घाटन

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने शुक्रवार को जोधपुर में पश्चिमी राजस्थान उद्योग हस्तशिल्प उत्सव-2020 का उद्घाटन किया। मुख्यमंत्री ने समारोह में टेक्सटाइल उद्योगों व स्टेनलेस स्टील उद्योगों से प्रदूषित पानी के ट्रीटमेंट के लिए लगाए जाने वाले प्लांट पर अनुदान राशि 50 लाख से बढ़ाकर 2 करोड़ रूपये करने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि पिछले 30 वर्षों से लगने वाले इस उद्योग मेले ने बड़ा मुकाम हासिल कर लिया है।

देश के अलग-अलग राज्यों से 600 से ज्यादा स्टॉल्स यहां लगाए गए हैं। अनेक दस्तकार-शिल्पियों का इस उत्सव में आना मायने रखता है। उन्होंने कहा कि आज युग बदल गया है। आईटी क्रांति आ गई है पर हमारे हस्तशिल्प और कारीगरी का आज भी वही सम्मान है। जोधपुर के हस्तशिल्पियों ने अपनी मेहनत से इस उद्योग को विश्व में लोकप्रिय बनाया है। हस्तशिल्पी, दस्तकार एवं बुनकर स्टार्ट अप जैसे नवाचारों को अपनाएं। इसके लिए राज्य सरकार स्टार्ट अप को प्रोत्साहित करेगी।

श्री गहलोत ने कहा कि हमारी सरकार ने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को तीन साल तक बिना किसी अनुमति के उद्योग का संचालन करने की छूट दी है। यह अपने आप में अभिनव पहल है और इसके अच्छे परिणाम आ रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य व देश की अर्थव्यवस्था के लिए उद्योगों को बढ़ावा देना जरूरी है। उन्होंने इस अवसर पर प्रदेश में औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य सरकार द्वारा एक साल में लिए गए निर्णयों पर आधारित पुस्तिका का विमोचन भी किया।

मुख्यमंत्री ने हस्तशिल्पियों के उत्पादों को नजदीक से देखा और उनकी सराहना की। उन्होंने मेला स्थल पर रखे विशाल चरखे के साथ स्थान-स्थान पर रखे चरखों की विविधता की भी प्रशंसा की। विभिन्न धातुओं के आकर्षक बर्तनों के उद्योगों की झलक देखकर मुख्यमंत्री मुग्ध हो गए। उन्होंने यहां कबाड़ से रिसाइकिल कर बनाए उत्पादों को भी देखा।

श्री गहलोत ने केन्द्रीय पाण्डाल में कलात्मक तरीके से प्रदर्शित गांधी दर्शन पैनोरमा व राजीव गांधी पैनोरमा को भी करीब से निहारा। इनमें महात्मा गांधी की जीवन यात्रा और देश में आई टी क्रांति के प्रणेता राजीव गांधी के योगदान को विशेष रूप से प्रदर्शित किया गया। मुख्यमंत्री ने विभिन्न हस्तशिल्प निर्यातकों और उद्योग उत्सव के लिए कार्य करने वाले विशेष अधिकारियों को सम्मानित भी किया।

अध्यक्षता करते हुए उद्योग मंत्री श्री परसादीलाल मीणा ने कहा कि राज्य में उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार नई उद्योग नीति, राजस्थान औद्योगिक प्रोत्साहन योजना तथा सोलर एवं हाइब्रिड विंड एनर्जी पॉलिसी लाई है।

इससे पूर्व उत्सव संयोजक श्री सुनील परिहार ने अतिथियों का स्वागत किया। समारोह में उच्च शिक्षा राज्यमंत्री श्री भंवरसिंह भाटी, विधायक मनीषा पंवार, श्री हीरालाल मेघवाल, मीना कंवर, श्री महेन्द्र विश्नोई, श्री किसनाराम विश्नोई, अतिरिक्त मुख्य सचिव उद्योग श्री सुबोध अग्रवाल भी उपस्थित थे। मरूधरा इंडस्ट्रीयल एरिया के सचिव श्री मुकेश खत्री ने आभार व्यक्त किया।

राज्य में मिलेगा खेल संस्कृति को बढ़ावा

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने सवाई मान सिंह स्टेडियम में आयोजित समारोह के दौरान 'स्टेट गेम्स-2020' के शुभारम्भ का ऐलान किया और मशाल प्रज्वलित कर इन खेलों की शुरूआत की। उल्लेखनीय है कि आजादी के बाद प्रदेश में पहली बार राज्य खेलों का आयोजन किया जा रहा है। छह जनवरी तक चलने वाले इस आयोजन में राज्य के कोने-कोने से आए करीब 8 हजार खिलाड़ी एवं प्रशिक्षक भाग ले रहे हैं।

श्री गहलोत ने उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश के सभी जिलों से आए खिलाड़ियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में खेलों का आधारभूत ढांचा तैयार करने और खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने में कोई कमी नहीं रखेगी। राज्य में स्पोर्ट्स कल्चर को बढ़ावा देने के लिए सभी प्रयास किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। उन्होंने औद्योगिक घरानों का आह्वान किया कि वे आगे बढ़कर किसी एक खेल को गोद लें और प्रदेश में उसके लिए सुविधाएं विकसित करने और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी तैयार करने में सहयोग करें।

श्री गहलोत ने पहली बार प्रदेश में राज्य खेलों के आयोजन के लिए युवा एवं खेल राज्य मंत्री श्री अशोक चांदना एवं अन्य आयोजकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि इस आयोजन के माध्यम से प्रदेश में खिलाड़ियों की एक नई पीढ़ी तैयार हो सकेगी और युवाओं को विभिन्न खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। स्टेट गेम्स-2020 एक तरह से प्रदेश में टैलेन्ट सर्च प्लेटफॉर्म की भूमिका अदा करेंगे।

मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में मौजूद युवाओं का आह्वान किया कि वे प्रदेश के गांव-गांव, घर-घर तक 'निरोगी राजस्थान' अभियान को पहुंचाएं ताकि प्रदेशवासी स्वस्थ एवं निरोगी रहें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विधानसभा अध्यक्ष श्री सीपी जोशी ने उम्मीद जताई कि स्टेट गेम्स-2020 के माध्यम से प्रदेश में नई प्रतिभाओं को अवसर मिलेंगे और ये खिलाड़ी आगे जाकर प्रदेश एवं देश का नाम रोशन करेंगे।

खेल राज्य मंत्री श्री अशोक चांदना ने समारोह की शुरूआत में अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि राज्य सरकार ने खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए कई कदम उठाए हैं।

राज्य खेलों के शुभारम्भ समारोह के दौरान अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित एवं देश-विदेश में नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों

का सम्मान किया गया। इसके अलावा द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित खेल प्रशिक्षकों का भी सम्मान किया गया। सम्मानित होने वालों में अर्जुन अवार्डी एथलीट रामसिंह शेखावत, दीनाराम, गोपाल सैनी, कृष्णा पूनिया, जगसीर सिंह, सुन्दर सिंह गुर्जर, तीरंदाज रजत चौहान, निशानेबाज शगुन चौधरी एवं अपूर्वी चंदेला, कबड्डी खिलाड़ी प्रदीप नरवाल, प्रदेश के मशहूर क्रिकेटर सलीम दुर्रानी जैसे नाम शामिल थे।

मुख्यमंत्री ने उद्घाटन समारोह में मौजूद मशहूर टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्जा को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। उद्घाटन कार्यक्रम में 61 कैवलरी के घुड़सवारों ने स्किल राइडिंग का प्रदर्शन किया। राजस्थान पुलिस बैंड की धुन के साथ विभिन्न जिलों की टीमों ने मार्च पास्ट किया। जयपुर के गायक रविन्द्र उपाध्याय ने अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से युवाओं में जोश का संचार किया। मशहूर नगाड़ा वादक नाथूलाल सोलंकी एवं उनकी टीम ने नगाड़ा वादन कर उद्घोष किया। बाड़मेर के लोक कलाकार उगाराम एवं उनकी टीम ने लाल आंगी गैर नृत्य की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर ऊर्जा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, कृषि मंत्री श्री लालचंद कटारिया, चिकित्सा मंत्री डॉ. रघु शर्मा, उद्योग मंत्री श्री परसादी लाल मीणा, पर्यटन मंत्री श्री विश्वेन्द्र सिंह, परिवहन मंत्री

श्री प्रतापसिंह खाचरियावास, अल्पसंख्यक मामलात मंत्री श्री शाले मोहम्मद, शिक्षा राज्य मंत्री श्री गोविन्दसिंह डोटासरा, मुख्य सचेतक डॉ. महेश जोशी, वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री सुखराम विश्नोई, उप मुख्य सचेतक श्री महेन्द्र चौधरी, स्थानीय विधायक एवं अन्य जनप्रतिनिधि, प्रमुख शासन सचिव खेल एवं युवा मामले श्री भास्कर ए सावंत, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ी एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। •

सरदार स्पोर्ट्स एकेडमी का उद्घाटन

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने जोधपुर में ओसवाल महिला छात्रावास का भूमि पूजन किया तथा सरदार स्पोर्ट्स एकेडमी का उद्घाटन किया।

मुख्यमंत्री ने उद्घाटन समारोह में खेलों की महत्ता बताते हुए कहा कि छात्र जीवन से ही खेलों की ओर विद्यार्थियों का रूझान बढ़ाकर हम राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी तैयार कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि एक उद्यमी एक खेल को गोद लेकर प्रदेश में खेलों को बढ़ावा देने के राज्य सरकार के प्रयासों में सहयोग कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार खेलों को बढ़ावा देने के लिए कृत संकल्पित है। पहली बार राज्य खेलों की शुरूआत हुई है। खिलाड़ियों के लिए हर जिले में प्रतिभा खोज शिविर लगाए जाएंगे।

श्री गहलोत ने कहा कि महावीर कॉम्पलेक्स की भूमि से मेरे बचपन की गहन यादें जुड़ी हैं। उन्होंने कहा कि जीयो और जीने दो के सिद्धांत को अपनाते हुए ही जीवन जीना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में हमारे संविधान की विशेषता अनेकता में एकता की बात भी कही।

कार्यक्रम का शुभारंभ स्वागत गीत से हुआ। समारोह में ओसवाल सिंह सभा के अध्यक्ष श्री के.एन. भंडारी ने स्वागत उद्बोधन दिया। उन्होंने बताया कि ओसवाल महिला छात्रावास में 200 महिलाओं के रहने की व्यवस्था जाएगी। साथ ही सरदार स्पोर्ट्स एकेडमी में 22 विभिन्न खेलों के साथ स्विमिंग पूल की सुविधा भी विकसित की गई है। •

सकारात्मक सिनेमा को हमेशा प्रोत्साहित करेंगे - मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा है कि सिनेमा हमारे समाज का महत्वपूर्ण अंग है और राज्य सरकार सकारात्मक सिनेमा को हमेशा प्रोत्साहित करती है। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी सामाजिक जागरूकता का संदेश देने वाली फिल्मों को सरकार मनोरंजन कर में छूट आदि देकर प्रोत्साहन करती रहेगी।

श्री गहलोत 12वें जयपुर अन्तरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल के उद्घाटन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सिनेमा देश और समाज में बन्धुत्व की भावना को बढ़ाता है। फिल्म जगत और विशेषकर बॉलीवुड ने भारत में विभिन्न भाषा बोलने वाले लोगों को एकता के सूत्र में बांधने का काम किया है। उन्होंने कहा कि फिल्मों से राजस्थान जैसे प्रदेश में पर्यटन को भी बढ़ावा मिलता है।

मुख्यमंत्री ने फिल्म फेस्टिवल में विशिष्ट अतिथि के तौर पर आए प्रसिद्ध चरित्र अभिनेता श्री प्रेम चोपड़ा और फिल्मकार श्री शाहजी एन. करूण का स्वागत किया और सम्मानित किया। उन्होंने पांच दिवसीय फिल्म फेस्टिवल में भाग लेने के लिए राजस्थान आने वाले फिल्म कलाकारों, निर्माताओं और अन्य हस्तियों का भी स्वागत किया। उद्घाटन समारोह को पर्यटन मंत्री श्री विश्वेन्द्र सिंह, जयपुर फिल्म फेस्टिवल के चेयरपर्सन श्री राजीव अरोड़ा तथा फेस्टिवल के संस्थापक निदेशक श्री हनु रोज ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में गणमान्य जन तथा सिनेमा प्रेमी उपस्थित थे। •

नौनिहालों को दवा पिलाकर किया पोलियो अभियान का शुभारंभ

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने रविवार को अपने आवास से 5 वर्ष तक के नौनिहालों को पोलियो की दवा पिलाकर और उन्हें चॉकलेट देकर राज्य स्तरीय अभियान का शुभारंभ किया।

डॉ. शर्मा ने बताया कि इस अभियान में प्रदेश के लगभग 1 करोड़ 8 लाख बच्चों को पोलियो वैक्सीन की दवा पिलाने के लिए कुल 54 हजार 159 बूथ बनाए गए थे। अभियान में 1 लाख 69 हजार वैक्सीनेटर्स एवं 3 हजार 376 मोबाइल टीमों द्वारा पोलियो वैक्सीन पिलाये जाने की पहल की गई।

डॉ. शर्मा ने बताया कि राज्य में पोलियो का अंतिम मामला नवम्बर, 2009 में सामने आया। इसके बाद से अब तक पोलियो का एक भी प्रकरण सामने नहीं आया है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में जनवरी, 2011 के बाद पल्स पोलियो का नया केस नहीं पाया गया। गौरतलब है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 27 मार्च, 2014 को भारत पोलियो मुक्त घोषित किया गया।

डॉ. शर्मा ने बताया कि जनवरी, 2017 में 109.72 लाख, अप्रैल, 2017 में 108 लाख, जनवरी, 2018 में 109 लाख और मार्च, 2018 में 108 लाख बच्चों को दवा पिलाई गई। इसी तरह 10 मार्च 2019 को 10 लाख बच्चों को दवाई पिलाई जा चुकी है।

उन्होंने बताया कि पड़ोसी राष्ट्रों में विगत वर्षों में पाए गए पोलियो को ध्यान में रखते हुए प्रदेश में विशेष सतर्कता बरती जा रही है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय चरण के अतिरिक्त राज्य के बाड़मेर, जोधपुर, अलवर एवं भरतपुर जिलों में उप राष्ट्रीय चरण भी आयोजित किये जाते हैं, क्योंकि जोधपुर एवं बाडमेर में पाकिस्तान से आने वाले नागरिकों में पोलियो वायरस भारत लेकर आने की संभावना होती है तथा भरतपुर एवं अलवर जिले में उत्तरप्रदेश राज्य से सीमा लगी होने के कारण पोलियो वायरस फैलने की संभावना रहती है। •

कुम्भलगढ़ महोत्सव

– सौरभ सिंगारिया

मेवाड़ का ऐतिहासिक दुर्ग कुम्भलगढ़ अपने स्थापत्य सौंदर्य के कारण विश्वभर में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। अरावली की पहाड़ियों में इस किले के शीर्ष महलों से मारवाड़ और पूरे मेवाड़ का विहंगम दृश्य दिखाई देता है। कहते हैं किले के परकोटे की दीवारें इतनी चौड़ी और दूर तक फैली हैं कि चीन की दीवार के बाद इसका स्थान आता है।

यहीं इसी कुम्भलगढ़ दुर्ग पर पर्यटन एवं कला संस्कृति विभाग तथा जिला प्रशासन राजसमन्द के संयुक्त तत्वावधान में दुर्ग परिसर के वेदी चौक में कुम्भलगढ़ महोत्सव का आयोजन एक एवं दो दिसम्बर, 2019 को किया गया। रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ महाराणा कुम्भा की छवि के समक्ष दीप प्रज्वलित कर महोत्सव का विधिवत शुभारंभ किया गया।

कुम्भलगढ़ महोत्सव के प्रथम दिवस बारां से आए कलाकर दल ने चकरी नृत्य व सहरिया नृत्य, जोधपुर कलाकार दल द्वारा नगाड़ा, जयपुर के कच्छी घोड़ी, जैसलमेर के दल द्वारा लंगा, चुरू के दल द्वारा चंग की थाप, बाड़मेर के कलाकारों द्वारा लाल गैर नृत्य, जयपुर से आये बहुरूपिए कलाकार, जोधपुर के कालबेलिया नृत्य, कुम्भलगढ़ के बनकिया, खेरवाड़ा के गैर नृत्य, बाड़मेर के घूमर नृत्य, समीचा की तैराताली पार्टी की प्रस्तुतियों ने उपस्थित सभी देशी तथा विदेशी पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आए कलाकारों की मनमोहक प्रस्तुतियों से देशी तथा विदेशी पर्यटक अपने-आप को रोक नहीं पाये और कलाकारों के साथ स्वयं नृत्य करने लगे। यह आकर्षक नजारा देख सभी दर्शक भी अपने-अपने स्थानों पर थिरकने लगे।

कुम्भलगढ़ महोत्सव के प्रथम दिन आयोजित कार्यक्रमों को देख फ्रांस से आये पर्यटक जेनी ने आंग्ल भाषा में कहा कि मुझे राजस्थानी संस्कृति, यहां की वेशभूषा काफी पसंद है, तथा वो यहां बार-बार आना चाहता है। जब उनसे पूछा गया कि यह कार्यक्रम कैसा लग रहा है, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि ''आई लव राजस्थान कल्चर''।

दूसरे दिन 2 दिसम्बर को शेल भट्ट ग्रुप/समूह द्वारा डेजर्ट स्ट्रोम फॉक प्रस्तुति व विभिन्न शास्त्रीय नृत्यों का प्रदर्शन किया गया तथा दिन में राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से आये कलाकारों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। •

लोक-संस्कृति का जीवन्त रूप

आलेख : चंद्रकुमार
सभी छायाचित्र : आनंद व्यास

विकट भौगोलिक परिस्थितियों में मनुष्य और वहां पाये जाने वाले जानवरों का परस्पर सम्बन्ध अगर फंतासी कथा लगे तो आपको एक बार बीकानेर में हर वर्ष आयोजित अंतर्राष्ट्रीय ऊँट-उत्सव में जरूर आना चाहिये। पर्यटन, कला और संस्कृति मंत्रालय, राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित दो-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय ऊँट-उत्सव में पश्चिमी राजस्थान के लोक-रंगो का इंद्रधनुष अपनी अलग ही आभा बिखेरता है। देश-विदेश के सैलानियों को स्थानीय कला-संस्कृति व लोक-जीवन से रूबरू करवाता यह उत्सव न केवल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बना चुका है बल्कि इसके जरिये पश्चिमी राजस्थान की कला-संस्कृति और लोक-जीवन की ख्याति भी बढ़ी है। रेत के सुनहरे धोरों पर शाम ढ़ले, लंबी होती परछाइयों के साथ जब 'रेगिस्तान का जहाज' कहे जाने वाले ऊँटों की लम्बी कतारें अपने गन्तव्य की तरफ बढ़ रही होती है, तब वह अविस्मरणीय दृश्य हर कोई अपनी स्मृति में हमेशा के लिए सँजो लेना चाहता है।

इस बार 11-12 जनवरी को ऊँट महोत्सव में हेरिटेज वॉक, रस्साकसी, मटका दौड़, ऊँट नृत्य तथा विभिन्न अन्य आयोजनों को देखने सुदूर स्थानों से सैलानी आए। महोत्सव में कला, साहित्य एवं संस्कृति मंत्री डॉ.बी.डी.कल्ला, जिला कलक्टर कुमार पाल गौतम, जिला पुलिस अधीक्षक प्रदीपमोहन शर्मा, बीएसएफ के मेजर जनरल जे.एस.नंदा सहित विदेशी सैलानियों ने बीकानेर शहर के विभिन्न स्थानों पर पाटों पर आयोजित रम्मतों को देखते हुए हेरिटेज वॉक की।

दरअसल यह उत्सव, ऊँट के बहाने पश्चिमी राजस्थान के जीवन और ऊँट पर आधारित समाज का एक सजीव चित्रण है। स्थानीय प्रशासन के साथ ही पर्यटन उद्योग तथा कुछ स्वयंसेवी संस्थाओं की भागीदारी के साथ ही पूरा बीकानेर शहर देशी-विदेशी सैलानियों - जिन्हे यहां 'पावणे' कहा जाता है, के लिए पलकें बिछा कर उनकी आवभगत करता है। यह उत्सव इन मायनों में भी विशिष्ट है कि देशी-विदेशी सैलानी यहां सिर्फ उत्सव देखने ही नहीं आते बल्कि इसमें अनेकों प्रतियोगिताओं में सक्रिय भागीदारी भी करते हैं। तब वे यहाँ मात्र दर्शक नहीं होते, बल्कि उत्सव के ही भाग होते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय ऊँट-उत्सव का बीकानेर शहर में आयोजित होना महज संयोग नहीं है। रेतीले टीलों के बीच बसे बीकानेर में प्राचीन काल में यातायात का इकलौता साधन यह रेगिस्तानी जहाज ही था। इसके अलावा बीकानेर पूरे भारत में ऊँटों का नैसर्गिक प्रजनन केंद्र भी है। बीकानेर में ऊँटों पर निर्भरता केवल खेती, परिवहन और व्यवसाय में ही नहीं थी बल्कि रियासतकालीन सुरक्षा व्यवस्था के लिए भी ऊँटों का प्रयोग किया जाता था। क्षेत्र के ऊँट बेहतरीन क्षमता वाले होते हैं। उनकी लंबी दूरी तक बिना थके-हारे अनवरत चलने की खूबी के कारण इन्हे रियासतकालीन सेना में भी शामिल किया जाता था। 'गंगा-रिसाला' रियासतकालीन बीकानेर की सेना में ऊँटो की एक बेहतरीन टुकड़ी थी जिसने दोनों विश्वयुद्धों में भाग लिया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत की सेना में भी 'गंगा-रिसाला' नाम से ऊँटों की एक विशेष टुकड़ी बनी जिसने भारत-पाक युद्धों में भाग लिया। सीमावर्ती क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार सीमा सुरक्षा बल में आज भी इनका महत्त्व कम नहीं हुआ है।

ऊँट-उत्सव की शुरुआत सजे-धजे ऊँटों की झाँकी से होता है। जूनागढ़ किले के आगे अपनी लंबी गर्दनों तक आभूषणों से लदे और रंग-बिरंगे झूमकों-झालरों से सजे ऊँटों का जमावड़ा देखते ही बनता हैं। पारम्परिक वेशभूषा में रोबीलों और ऊँटों का काफिला ढोल-नगाड़ों के साथ जूनागढ़ के आगे से मुख्य कार्यक्रम स्थल करणी सिंह स्टेडियम पहुंचता है। काफिले के साथ सैकड़ों लोगों का हुजूम जब स्टेडियम में प्रवेश करता है तो वहां पहले से मौजूद हजारों दर्शकों द्वारा करतल ध्वनि से लवाजमे का स्वागत किया जाता है। विशेष मेहमानों द्वारा सफेद कपोतों को खुले आकाश में छोड़ कर ऊँट-उत्सव का आधिकारिक उद्घाटन किया जाता है। मुख्य प्रांगण में सेना के बैंड की धुनों के बाद ऊँट-सज्जा प्रतियोगिता होती है जिसमे ऊँट मालिक अपने ऊँटों को बेहतरीन तरीके से आभूषणों और झुमकों-झालरों से सजा कर निर्णायक मण्डल के सामने पेश करते हैं।

इसी क्रम में 'कैमल फर कटिंग' प्रतियोगिता का आयोजन होता है। पत्थर पर उत्कीर्ण नक्काशियों की तरह ऊँटों के फर

(चमड़ी के बाल) की कटिंग करके शानदार कलाकृतियां उकेरी जाती है और फिर उनमें से सर्वोत्तम कलाकारी वाले ऊँट को विजेता घोषित किया जाता है। पहले दिन ऊँटों की आखिरी प्रतियोगिता का इंतजार देशी-विदेशी सैलानी बेसब्री से करते हैं। यह प्रतियोगिता होती है ऊँट-नृत्य प्रतियोगिता। सुन कर सहसा

विश्वास नहीं होता लेकिन यह विशालकाय रेगिस्तानी प्राणी बहुत ही सहजता से अपने मालिक के हल्के से इशारों पर खूबसूरत नृत्य का प्रदर्शन करता है। पूरी तरह सजे-धजे ऊँट संगीत की सुर लहरियों पर शानदार नृत्य करते हैं। अनुशासन, सुर-ताल के साथ संयोजन और लचकदार नृत्य करके दर्शकों का दिल जीतने वाले ऊँट को विजेता घोषित किया जाता है। स्थानीय नवयुवक-नवयुवतियों के लिए मिस्टर बीकाणा और मिस मरवण प्रतियोगिता का आयोजन होता है जिसमें ये युवक-युवतियां पारम्परिक परिधानों और आभूषणों के साथ मंच पर चहल-कदमी करके निर्णायकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। विजेताओं को प्रशासन द्वारा पुरस्कृत किया जाता है। पहले दिन का समापन राजस्थान तथा देश के विभिन्न अंचलों से आये लोक-कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से होता है।

दूसरे दिन की शुरुआत शहर के अंदरूनी भाग में 'हेरिटेज वॉक' से होती है। विश्व-प्रसिद्ध रामपुरिया हवेलियों से 'हेरिटेज वॉक' का आगाज होता है जो शहर के विभिन्न हिस्सों से होती हुई लक्ष्मीनाथजी मंदिर के पास स्थित बीकाजी की टेकरी पर पहुंचती है। रास्ते में सैलानियों को शहर की तंग गलियों से होते हुए विभिन्न चौकों का भ्रमण करवाया जाता है। इसी रास्ते पर

बीकानेर के वैभव की दास्तान कहती बालू पत्थर से निर्मित शानदार हवेलियों का दीदार होता हैं। जगह-जगह लोग सैलानियों के स्वागत में खड़े रहते है और पारम्परिक खान-पान और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से प्राचीन शहर के इतिहास और यहां की लोक-कला, संस्कृति और लोक-वैभव से उनका परिचय करवाया जाता है। पिछले कुछ वर्षो में 'हेरिटेज वॉक' में पहुँचने वाले लोगों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से शहर के अतीत में झांकने का यह प्रयास भूरि-भूरि प्रशंसा पा रहा है।

दूसरे दिन के अन्य आकर्षणों में शामिल ऊँट-दौड़, ऊँट-नृत्य प्रदर्शन, अश्व दौड़, ग्रामीण कुश्ती इत्यादि कार्यक्रमों के साथ ही विदेशी पावणों के लिए विशेष आयोजन होते हैं। विदेशी पुरुष व महिलाओं के लिए रस्साकसी तथा महिलाओं के लिए मटका दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है जिसमे सैलानी उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। विदेशी सैलानियों के लिए साफा बांधने की प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है जिसमे वे बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। इस तरह केवल ऊँट-उत्सव देखने ही नहीं बल्कि इसमे शामिल होने के लिए भी अनेकों पर्यटक विदेशों से बीकानेर पहुँचते हैं। शाम होते-होते कार्यक्रम अपने चरम पर होता है। स्थानीय सिद्ध समुदाय द्वारा पेश किया जाने वाला अग्नि-नृत्य इस कार्यक्रम की खास पहचान है जिसमें सिद्ध समुदाय के लोग अपने लोक-देवता की पूजा-अर्चना के बाद धधकते लाल अंगारों पर पारम्परिक वाद्ययंत्रों की धुनों पर अलौकिक नृत्य प्रस्तुत करते हैं जिसे देख कर किसी के भी रौंगटे खड़े हो जाते हैं। अग्नि-नृत्य के पश्चात आसमान में शानदार रंग-बिरंगी आतिशबाजी के साथ अंतर्राष्ट्रीय ऊँट-उत्सव का समापन होता है। दो दिन चलने वाले इस उत्सव में जहां एक ओर आंचलिक लोक-जीवन और लोक-कला व संस्कृति से सैलानियों को रूबरू करवाया जाता है वहीं मरुस्थल के निवासियों के इस अप्रतिम साथी ऊँट की महत्ता का भी प्रदर्शन किया जाता है।

इन्ही दिनों बीकानेर के पास स्थित रायसर गांव में रेत के धोरों पर सैलानियों के लिए कैमल राइड तथा कैमल सफारी की व्यवस्था की जाती है जहां सैलानी निशुल्क इनका लुत्फ ले सकते हैं। मुख्य कार्यक्रम स्थल पर लगी स्टॉलों पर जहां एक ओर मोजड़ी सहित अनेकों पारम्परिक परिधान और लोक-जीवन में काम आने वाली वस्तुओं की उपलब्धता रहती है वहीं ऊँट के दूध से बनी मिठाइयों, केक और चाय का स्वाद भी सैलानियों के लिए अनूठा अनुभव रहता है। हजारों मील दूर से सुदूर पश्चिमी राजस्थान में बसे 'कंट्री ऑफ कैमल' - बीकानेर तक हर साल खींच लाती है। ऊँटों के जरिये बीकानेर अंचल के लोक-संगीत, लोक-कला, और लोक-संस्कृति को बचाये रखने का यह प्रयास दरअसल हमारे लोक-जीवन का एक जीवंत प्रदर्शन है। अगर आपने नहीं देखा तो फिर क्या देखा। •

राजस्थान में राष्ट्रीय पुस्तक मेला

–अंजली राजोरिया

जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग, राजस्थान सरकार एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 12 अक्टूबर से 20 अक्टूबर 2019 तक राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन किया गया जिसकी मुख्य थीम महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ रखी गई। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक शीर्षस्थ निकाय है जो 62 वर्षो से पुस्तक प्रकाशन एवं पठन में रूचि को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत है। उच्च श्रेणी की पुस्तकें कम कीमत पर प्रकाशित करने के अलावा विश्व पुस्तक मेले का आयोजन प्रतिवर्ष करती है तथा सम्पूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 3 से 4 प्रमुख स्थानों पर राष्ट्रीय पुस्तक मेलों का आयोजन भी करती है।

उदयपुर पुस्तक मेले का विशाल आयोजन शहर के प्रमुख स्थल बी.एन. कॉलेज खेल मैदान पर किया गया। मेले में गांधी पैवेलियन बनाया गया जिसमें गांधीजी के जीवन से संबंधित पुस्तकें प्रकाशकों द्वारा विक्रय हेतु प्रदर्शित की गई। दिन के समय मेलार्थियों के लिए महात्मा गांधी की जीवनी एवं संदेशों पर गांधी साहित्य अकादमी एवं पुरातत्व संग्रहालय अजमेर से प्राप्त दुर्लभ विडियो फिल्म डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। महात्मा गांधी के जीवन की प्रमुख घटनाओं पर पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर द्वारा एक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस मेले में विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया जिसमें गांधीजी के जीवन से संबंधित नाटक एवं अन्य प्रस्तुतियां दी गई।

कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर के मुख्य अतिथि जनजाति राज्य मंत्री श्री अर्जुन सिंह बामनिया, अर्जुनलाल मीणा सांसद उदयपुर, श्री रघुवीर सिंह मीणा पूर्व सांसद, श्रीमती शिवांगी स्वर्णकार, आयुक्त जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग, प्रख्यात

लेखक डॉ. राजेश कुमार व्यास, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के श्री मानस रंजन महापात्रा, एडिटर राष्ट्रीय बाल साहित्य केन्द्र, नई दिल्ली एवं अन्य विशिष्ट गणमान्य अतिथि मौजूद रहे। मुख्य अतिथि श्री बामनिया ने उद्बोधन में कहा कि पुस्तकों का महत्त्व ज्ञान वृद्धि, व्यक्तित्व विकास एवं सामाजिक सोच में बदलाव के लिए आज भी प्रासांगिक है। आयुक्त, जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग ने अपने उद्बोधन में बताया कि पुस्तकें समाज के सभी वर्गों के विशेषकर विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए सृजनात्मकता, कल्पनाशीलता एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

देश के प्रमुख प्रकाशक एवं संस्थान जिनमें साहित्य अकादमी, प्रकाशन विभाग, संस्था साहित्य मण्डल, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, लोकायत प्रकाशन, राजस्थान साहित्य अकादमी, राजकमल प्रकाशन, राधाकृष्ण प्रकाशन, लोक भारती प्रकाशन, प्रकाशन संस्थान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ साहित्य अकादमी तथा वाग्देवी प्रकाशन के अतिरिक्त कुल 55 प्रकाशकों ने भाग लिया।

लोक कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने एवं इसके महत्त्व को जन-जन में पहुंचाने हेतु प्रतिदिन सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये जिनमें भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर, पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के प्रसिद्ध कलाकारों ने एवं राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के सैंकड़ों छात्र-छात्राओं ने समसामयिक विषयों पर एकल एवं समूह में नृत्य, गायन एवं नाट्य की विभिन्न शैलियों में अपनी प्रभावी प्रस्तुतियां दी।

साहित्यिक कार्यशालाओं के अंतर्गत प्रतिदिन 11 बजे से 1 बजे तक बच्चों/स्कूली शिक्षकों एवं पुस्तकालयाध्यक्षों हेतु अनुभवी एवं दक्ष संदर्भ व्यक्तियों द्वारा कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। जिनमें पढ़ने की आदत का विकास, स्कूली शिक्षकों एवं पुस्तकालयाध्यक्षों हेतु पुस्तकों की समीक्षा करना, बाल साहित्यकारों के साथ अन्त: क्रिया सत्र, कहानी लेखन कार्यशाला, अभिनव कथा वाचन, बालपत्रिकाएं बनाईं, बच्चों के द्वारा कहानी-अभिनय आदि अत्यन्त प्रेरणास्पद रहे। उपरोक्त गतिविधियों में छात्र-छात्राओं, युवा वर्ग एवं साहित्य प्रेमियों ने उत्साह से भाग लिया।

जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग द्वारा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के छात्र-छात्राओं, शिक्षकों के अवलोकन हेतु बस की सुविधा उपलब्ध करवायी गई। परिणामस्वरूप हजारों व्यक्तियों, बच्चों, युवक-युवतियों एवं साहित्य प्रेमियों ने मेले का अवलोकन किया एवं जाने-माने प्रकाशकों द्वारा लगाई गई स्टॉल्स से अपनी रूचि की पुस्तकें, संदर्भ साहित्य पुस्तकें आदि क्रय की। इस विशाल मेले के आयोजन से साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में साहित्य में रूचि रखने वाले व्यक्तियों एवं भावी पीढ़ी में सकारात्मक वातावरण निर्मित हुआ।

उत्सवधर्मिता और उमंग से भरा 'कला मेला'

– विनय शर्मा

कलाएं जीवन को संपन्न करती हैं। महाकवि माघ का कहना है कि कला वह है जो प्रत्येक पल में नवीनता एवं सौंदर्य की अनुभूति कराती है। राजस्थान ललित कला अकादमी का 'कला मेला' ऐसा ही होता है, जहां पर सदा नवीनता में सौंदर्य की सृजना होती है। राजस्थान के दूरस्थ स्थानों पर निवास करने वाले कलाकार इस मेले में एक मंच के नीचे एकत्र होते हैं और अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। अकादमी के इस आयोजन की बड़ी विशेषता यह भी होती है कि इसमें आधुनिक, परम्परागत और भविष्य में कला में जो कुछ होने वाला है-उसकी उम्दा झलक देखने वालों को मिलती है।

इस बार राजस्थान ललित कला अकादमी ने जवाहर कला केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में 21वां मेला जवाहर कला केन्द्र के शिल्पग्राम में 3 से 7 जनवरी तक आयोजित किया। कला मेले का शुभारम्भ कला एवं संस्कृति मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला ने 3 जनवरी को किया और कहा कि यह मेला नहीं बल्कि जन उत्सव है। उन्होंने मेले में प्रदेश के सुदूर स्थानों से आए कलाकारों के एक-एक स्टॉल का स्वयं अवलोकन किया और कलाकारों द्वारा प्रदर्शित कलाकृतियों की सराहना करते हुए कहा कि यह मेला ऐसा है जिसमें पुरातन और नवीन का एक तरह से संगम होता है। उन्होंने मेले के दौरान ही कला-संस्कृति विभाग द्वारा कलाकारों की कला को प्रोत्साहन देने की पहल करते हुए 5 लाख रूपये की कलाकृतियां क्रय करने की भी घोषणा की। कलाकारों में इससे बेहद उत्साह का वातावरण बना। कला एवं संस्कृति विभाग की प्रमुख शासन सचिव श्रीमती श्रेया गुहा ने मेले को कलाकारों के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि संस्कृति के ऐसे आयोजनों से ही समाज में उत्साह और उमंग का संचार होता है। उन्होंने कहा कि कला एवं संस्कृति के प्रोत्साहन के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।

मेले के समापन समारोह में मुख्य अतिथि राजस्थान पर्यटन विकास निगम के पूर्व अध्यक्ष और कला रसिक श्री राजीव अरोड़ा ने कलाकारों की कलाकृतियों को बेहतरीन बताते हुए कहा कि राजस्थान में कलाकार उत्कृष्ट कलाकृतियां बनाते हैं और इन्हें राजस्थान से बाहर भी प्रदर्शित करने की व्यवस्था की जानी चाहिए। जवाहर कला केन्द्र की महानिदेशक श्रीमती किरणसोनी

गुप्ता ने कहा कि वह स्वयं कलाकार हैं और इस नाते कलाकारों से अपना निकट का रिश्ता महसूस करती हैं। उन्होंने कहा कि अकादमी ने कला के क्षेत्र में महत्ती पहल करते हुए कलाकारों को बेहतरीन मंच दिया है। अकादमी के प्रशासक श्री के.सी. वर्मा ने कहा कि अकादमी मेले का आयोजन इसी उद्देश्य से करती है कि प्रदेश के कलाकारों को उनकी कला प्रदर्शन के व्यापक अवसर मिले।

राजस्थान ललित कला अकादमी का 21वां कला मेला इस मायने में भी उल्लेखनीय रहा कि इस बार कला मेले में कलाकृतियों के प्रदर्शन के साथ ही समकालीन कला पर बेहतरीन संवाद हुए। अकादमी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कला मेले में 800 के करीब कलाकारों द्वारा निर्मित विभिन्न माध्यमों में चित्र, मूर्तिशिल्प, ग्राफिक्स, छायाचित्र, रेखाचित्र एवं इन्स्टॉलेशन आदि को 110 स्टॉल्स में प्रदर्शित किया गया। महत्त्वपूर्ण यह भी रहा कि पारम्परिक, आधुनिक एवं मूर्त-अमूर्त रूपों को ऑयल एक्रेलिक व जलरंगों के माध्यम से कलाकारों ने अपनी मौलिक सोच से सिरजते हुए राजस्थान की कला को अपने तरह आगे बढ़ाया। कला प्रदर्शनी में प्रदर्शित कलाकृतियों को देखकर सहज ही यह कहा जा सकता था कि देशभर में राजस्थान के कलाकार और यहां का सृजन बेहतरीन है।

कला मेले में युवा कलाकरों में भारी उत्साह देखा गया। इस बार के मेले की यह भी खास बात रही कि पूरे मेले के दौरान लोगों में उत्सवधर्मिता का वास रहा। हर दिन इतनी भीड़ दर्शकों की मेले में रही कि सच में यह किसी लोक उत्सव सा आयोजन हो गया था। कला मेले में प्रतिदिन स्कूली एवं महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं, कलाप्रेमियों, कलाकारों एवं आमजन की आवक-जावक रही। एक मोटे अनुमान के अनुसार प्रतिदिन 3-4 हजार दर्शकों ने इस कला मेले का अवलोकन कर कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।

कला मेले का मुख्य आकर्षण देश के जाने-माने कवि, कला समीक्षक श्री प्रयाग शुक्ल के साथ संस्कृतिकर्मी, कला आलोचक डॉ. राजेश कुमार व्यास का संवाद रहा। इस संवाद के दौरान देश में समकालीन कला एवं कला लेखन के साथ ही कलाओं से जुड़े जन सरोकारों पर महत्ती विमर्श हुआ। बड़ौदा से आयी डॉ. बालामणी ने समसामयिक कला के साथ भूपेन खक्कर ज्योति भट्ट की कला पर अपने लिए साक्षात्कार की प्रस्तुति की। कला विशेषज्ञों में श्री किशनलाल खटीक द्वारा जलरंग में प्राकृतिक दृश्यचित्रण, श्री दीपक जैमिनी द्वारा क्ले में लाइव पोट्रेट एवं श्री संजीव शर्मा जी द्वारा जलरंग में लाइव पोट्रेट का डेमों युवा कलाकारों के सम्मुख दिया गया। इसके साथ ही कजा सृजन से संबंधित तकनीकी जानकारियों को भी मौके पर ही कलाकारों ने स्कूली छात्र-छात्राओं व महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं के साथ साझा किया। कला मेले में 'ऑन द स्पॉट' प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गयीं। कलाकारों की चयन समिति द्वारा कला मेले में श्रेष्ठ 10 कलाकृतियों को अकादमी द्वारा उन सभी कलाकारों को प्रोत्साहित करते हुए 10-10 हजार की राशि से सम्मानित किया गया। देश के सुप्रसिद्ध कलाकार श्री नाथूलाल वर्मा ने कला मेले के संयोजन की भूमिका बखूबी निभायी। कलाएं हमारे जीवन में उत्सवधर्मिता का वास कराती हैं। राजस्थान ललित कला अकादमी का कला मेला भी ऐसा ही था जिसमें कलाकारों के साथ ही आने वाले दर्शकों ने भी अपनी सहभागिता से उत्सव की हमारी संस्कृति को निरंतर जीवंत किया। •

देश में सर्वश्रेष्ठ बनी राजस्थान पुलिस अकादमी

–गोविन्द पारीक

केंद्रीय गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा राजस्थान पुलिस अकादमी को अराजपत्रित अधिकारियों के प्रशिक्षण हेतु देश की सर्वश्रेष्ठ पुलिस अकादमी घोषित करने के साथ-साथ राजपत्रित अधिकारियों के प्रशिक्षण हेतु उत्तरी जोन की सर्वश्रेष्ठ अकादमी के रूप में चयनित किया गया है। देश की सर्वश्रेष्ठ अकादमी घोषित होने पर गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा एक ट्रॉफी तथा आधारभूत ढांचे के विकास हेतु 20 लाख की अनुदान राशि दी जाएगी। इसी प्रकार जोनल स्तर पर सर्वश्रेष्ठ घोषित होने पर आधारभूत ढांचे के विकास हेतु 2 लाख की अनुदान राशि दी जाएगी।

भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा देश की समस्त पुलिस अकादमियों में प्रशिक्षण की गुणवत्ता के आधार पर सर्वश्रेष्ठ पुलिस अकादमी का चयन किया जाता है। इस चयन प्रक्रिया में प्रशिक्षण की गुणवत्ता के साथ-साथ प्रशिक्षकों का कौशल, प्रशिक्षुओं का प्रदर्शन, प्रशिक्षण हेतु उपलब्ध आधारभूत ढांचा, प्रशिक्षण में नई तकनीकों का प्रयोग, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक सरोकार के प्रति प्रतिबद्धता जैसे कुल 28 मापदंडों को आधार बनाया गया। राजस्थान पुलिस अकादमी ने इन सभी मापदंडों पर देश की सभी पुलिस अकादमियों को पीछे छोड़ते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

राजस्थान का निर्माण देशी रियासतों और ब्रिटिश भारत के कुछ हिस्सों के विलय से हुआ। विलय से पहले लगभग सभी रियासतों के पास अपने-अपने स्वतंत्र पुलिस बल थे और प्रत्येक पुलिस बल इन राज्यों के व्यक्तिगत शासकों से जुड़ा हुआ था। राजस्थान के एकीकरण से राजस्थान पुलिस अस्तित्व में आई। विभिन्न पुलिस बलों के सदस्यों को नए राजस्थान पुलिस बल में शामिल किया गया।

आजादी के बाद राजस्थान का पहला पुलिस प्रशिक्षण संस्थान चित्तौड़गढ़ के ऐतिहासिक किले में वर्ष 1950 में स्थापित किया गया था। भौगोलिक व प्रशासनिक कारणों से इसे किशनगढ़ में स्थानांतरित कर दिया गया। वर्ष 1975 में इसके वर्तमान स्थान जयपुर में स्थानांतरित किया गया और इसे राजस्थान पुलिस अकादमी के रूप में अपग्रेड किया गया।

संस्थान के प्रशासनिक ब्लॉक की आधारशिला 24 अक्टूबर, 1975 को रखी गई थी। राजस्थान पुलिस अकादमी का औपचारिक रूप से उद्घाटन 3 जुलाई, 1978 को राजस्थान के तत्कालीन माननीय मुख्यमंत्री द्वारा किया गया था। अप्रैल, 1980 में पुलिस महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) का एक अलग पद सृजित किया गया।

प्रशिक्षण पुलिस बल की एक अभिन्न आवश्यकता है। यह

पुलिसकर्मियों में ज्ञान, कौशल और व्यवहार परिवर्तन को नियंत्रित करता है। राजस्थान पुलिस अकादमी ने सर्वश्रेष्ठ पुलिस प्रशिक्षण संस्थान के रूप में विकसित होने के साथ ही पुलिसकर्मियों को प्रशिक्षित करने के लिए एक मॉडल प्रशिक्षण अकादमी के रूप में आकार लिया है। अकादमी कांस्टेबल से लेकर पुलिस उपाधीक्षक तक सभी रैंकों को बुनियादी प्रशिक्षण प्रदान कर रही है। भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारियों का प्रशिक्षण पूरा होने के बाद स्थानीय कानूनों और अन्य संबंधित विषयों पर तीन सप्ताह के लिए अकादमी में प्रशिक्षण दिया जाता है।

अकादमी राजस्थान और देश के अन्य राज्यों से कांस्टेबल से एडीजीपी स्तर तक के पुलिसकर्मियों के लिए विशेष पाठ्यक्रम भी आयोजित करती है। अकादमी में आधुनिक प्रशिक्षण सुविधाओं के साथ श्रेष्ठ संकाय चुनने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। संकाय की दक्षता, प्रभावशीलता और प्रेरणा स्तर की जांच विशेषज्ञ पैनल द्वारा की जाती है। पुलिसिंग के विषयों के अलावा प्रशिक्षुओं के सामाजिक और नैतिक मूल्यों को शिक्षित करने पर बल दिया जाता है।

अकादमी का लक्ष्य प्रशिक्षुओं को कठिन परिस्थितियों से निपटने और मामलों की जांच में वैज्ञानिक कौशल से लैस करना है। प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण का आयोजन कर उन्हें नवीन कौशल के साथ अपने विषयों का ज्ञान प्रदान किया जाता है। अकादमी ने एक व्यवस्थित और सुचारू कामकाज के लिए सभी शाखाओं के लिए मानक संचालन प्रक्रिया विकसित की है।

राजस्थान पुलिस अकादमी प्रशिक्षणों की संख्या की दृष्टि से देश में सबसे बड़ी अकादमी है। अकादमी केवल संख्याओं पर ही ध्यान केंद्रित नहीं करती बल्कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाता है। अकादमी ने सब इंस्पेक्टर बेसिक कोर्स अध्ययन सामग्री, तीन संस्करणों में कांस्टेबल भर्ती गाइड, जांच गाइड, पुलिस जांच, पुलिस कांस्टेबल व्यावहारिक कार्य पर एसओपी, मानव तस्करी, पॉक्सो प्रावधानों और पुलिस की भूमिका, किशोर सुरक्षा प्रणाली और पुलिस की भूमिका आदि पर प्रशिक्षण सामग्री तैयार की है।

अकादमी मे सर्वश्रेष्ठ पुलिस प्रशिक्षण संस्थान हेतु आवश्यक समस्त आधारभूत ढांचा है। लाल रेत के साथ मुख्य परेड ग्राउंड और सहायक परेड ग्राउंड, 450 व्यक्तियों की क्षमता वाला वातानुकूलित सभागार, स्विमिंग पूल, 500 व्यक्तियों की क्षमता के साथ बहुउद्देशीय हॉल, आधुनिक उपकरणों के साथ व्यायामशाला, 900 व्यक्तियों की क्षमता वाला ओपन एयर थिएटर, सिम्युलेटर के साथ इनडोर फायरिंग रेंज, कल्पतरु नर्सरी आदि मौजूद हैं। द इक्वेस्ट्रियन स्कूल और बैंड एकेडमी भी हैं। अकादमी में गेस्ट हाउस, राजपत्रित अधिकारियों के लिए दो छात्रावास और अधीनस्थ रैंक के लिए 9 अन्य छात्रावास हैं। अकादमी में 295 की क्षमता वाले 5 वातानुकूलित कॉन्फ्रेंस हॉल और 140 व्यक्तियों की क्षमता वाले व्याख्यान थियेटर के साथ 1235 प्रशिक्षणार्थियों की एक कक्षा कक्ष क्षमता है। अकादमी में 16 क्लास रूम हैं। क्लास रूम एलईडी प्रोजेक्टर, सीपीयू, साउंड सिस्टम, इंटरनेट की सुविधा से लैस हैं। अकादमी में प्रशिक्षण किट, ड्रग डिटेक्शन किट, मॉक क्राइम सीन और प्रशिक्षण प्रयोजन के लिए एक मिनी लैब है। अकादमी के पुस्तकालय में 35 हजार से अधिक पुस्तकें हैं और सभी प्रमुख पत्रिकाओं और महत्त्वपूर्ण पत्रिका उपलब्ध हैं।

सीपीसी कैंटीन, कैफेटेरिया आदि के साथ ही परिसर में अकादमी का अपना एक अस्पताल है। पुलिस शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए शहीद स्मारक विकसित किया गया है।

अकादमी सामाजिक मुद्दों के लिए भी प्रतिबद्ध होकर कार्य कर रही है। अकादमी के शारीरिक प्रशिक्षक लड़कियों को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण देने के लिए जयपुर के विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों का भी दौरा करते हैं। अकादमी ने राजस्थान में टोंक जिले को यूनिसेफ के सहयोग से 'चाइल्ड फ्रेंडली पुलिसिंग' के मॉडल जिले के रूप में चुना है। अकादमी ने यूनिसेफ और बाल अधिकार, पॉक्सो, जेजे अधिनियम, बाल विवाह, बाल श्रम जैसे विषयों के साथ अजमेर, बीकानेर, उदयपुर और भरतपुर रेंज में कार्यशालाओं का आयोजन किया है। अकादमी के महिला कल्याण केंद्र परिसर में महिलाओं और लड़कियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है। अकादमी के क्रेच में बच्चों की देखभाल की जाती है। राजस्थान पुलिस अकादमी को देश की एक आदर्श पुलिस अकादमी के रूप में मिली पहचान प्रदेश वासियों के लिए गौरव की बात है। •

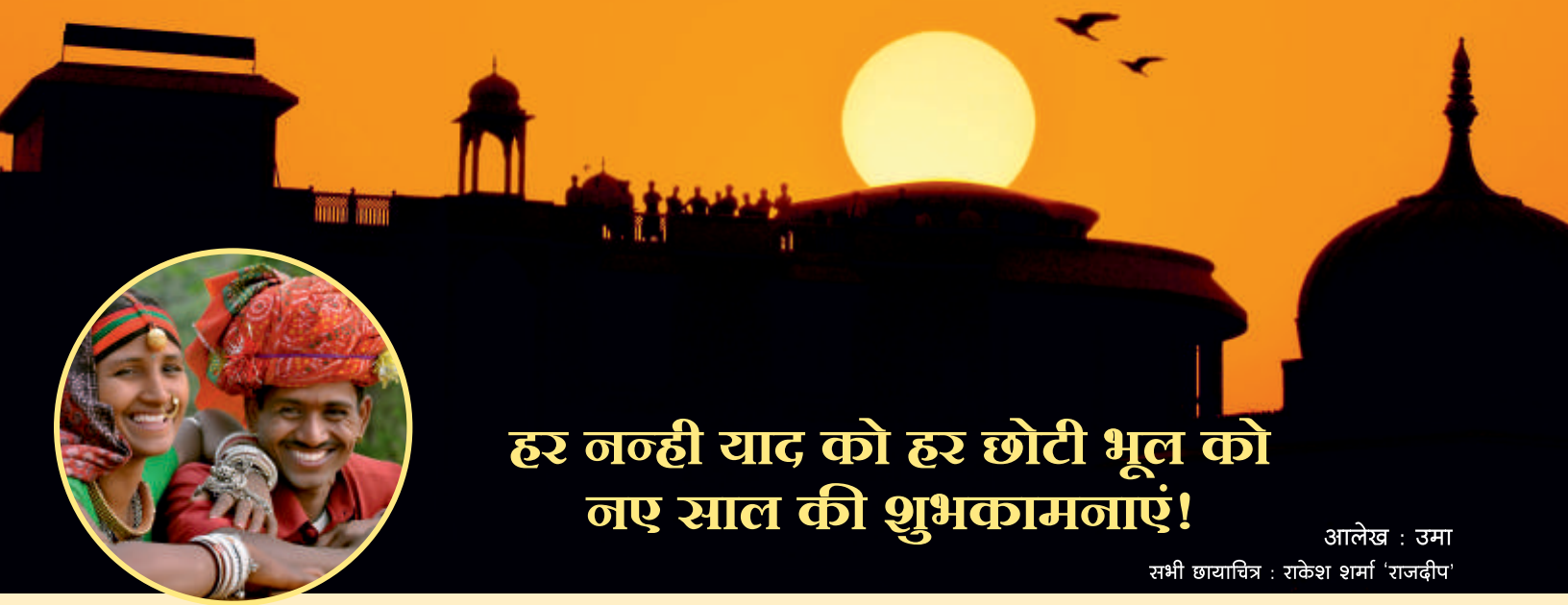

हर नन्ही याद को हर छोटी भूल को नए साल की शुभकामनाएं!

आलेख : उमा
सभी छायाचित्र : राकेश शर्मा 'राजदीप'

पुराने सूरज के संग ही आ चुका है नया साल, जिस जमीन पर उग आया, वह भी तो पुरानी ही थी। जिन दोस्तों और परिजनों के संग मिलकर इस नए साल का स्वागत किया हमने, वे भी कहां नए थे? फिर आखिर नया क्या था? क्या सिर्फ कैलेंडर का बदल जाना और 2019 का 2020 में तब्दील हो जाना!

नए साल में आखिर क्या नया होता है? इस पर बात करने से पहले एक किस्से की याद दिला दूं, वैज्ञानिक और आविष्कारक थॉम्स एल्वा एडिसन की जिंदगी से जुड़ा है यह किस्सा, एक रोज उनकी प्रयोगशाला में आग लग गई थी, न जाने कितनी ही रिसर्च थी, जो जलकर खाक हो गई थी, पर वे जरा भी विचलित नहीं हुए। जब उनसे पूछा गया कि अब वे क्या करेंगे? तो उन्होंने बहुत ही सहजता से कहा– पुरानी गलतियां खाक हो गईं, अब मैं एक नई शुरुआत करूंगा।

महान लोगों ने जीवन में आए मुश्किल पड़ावों को ही एक नई शुरुआत मान लिया, लेकिन साधारण मन के लिए ऐसा संभव कहां? पर गलतियां उनके जीवन में होती हैं, सिर्फ कार्यक्षेत्र में ही नहीं, संबंधों के निर्वाह में भी हो ही जाती है, इन गलतियों को पीछे छोड़ने के लिए कल पर टालने की सनातन परंपरा चली आ रही है, पर कुछ अवसर ऐसे चले आते हैं जीवन में, जो प्रेरित करते हैं, चलिए नई शुरुआत की जाए, नया साल ऐसा ही एक अवसर है, जब हम नई शुरुआत करते हैं, नए संकल्प लेते हैं। ऐसे में जनवरी माह को संकल्पों का माह भी कहा जा सकता है। इसी महीने में तो हम अपनी पुरानी गलतियों को पीछे छोड़ते हुए एक नई शुरुआत करते हैं। पुरानी चीजों की राख से नया उजाला लिख देते हैं। पुराने रिश्तों को भी नई ऊर्जा से भर देते हैं।

ठंड से ठिठुरता हुआ यह नया साल जब हमारे आंगन में उतरता है, हम संबंधों पर जमी बर्फ को पिघलाने में जुटे होते हैं, दोस्तों और परिवार के साथ होते हैं, हम उनके साथ मिलकर कुछ नया करने की योजना बना रहे होते हैं, हम जिंदगी को नए सिरे से शुरू करने की ठान ही लेते हैं।

यूं जीवन में नई शुरुआत के कई और अवसर भी बनते हैं, जैसे हमारे तीज–त्योहार, पारंपरिक नव वर्ष और जन्मदिन भी... लेकिन इन सब अवसरों पर हम रस्मों और औपचारिकताओं में ही उलझे रहते हैं, कैलेंडर नव वर्ष हमें इन औपचारिकताओं से मुक्त रखता है। अपनी मनोस्थिति के मुताबिक ही हम तय करते हैं कि

नया साल रजाई में दुबक कर टीवी देखते हुए बिताना है या किसी डांस फ्लोर पर थिरकना है यानी इस अवसर पर व्यक्ति और उसकी इच्छा के बीच कोई और नहीं होता। इसके बावजूद हम पूरी दुनिया से जुड़ते हैं। नया कैलेंडर वर्ष पूरी दुनिया के तार आपस में जोड़ता है। वसुधैव कुटुंबकम जैसा भाव जाग्रत करता है। दुनिया के अधिकतर देश नए साल के स्वागत में डूबे होते हैं और हम साझा जश्न को महसूस कर पाते हैं। यह साझा जश्न सह उत्पाद के रूप में सकारात्मकता को जन्म देता है। टटोलकर देखिए अपने मन को, आप जान जाएंगे कि नए साल के साथ ही आप ज्यादा सकारात्मक हो गए हैं। आपकी डायरी में नए संकल्प जुड़ गए हैं। पुरानी उन आदतों को आपने पीछे छोड़ने की ठान ली है, जिन आदतों ने आपके बढ़ते कदमों को पीछे की ओर खींचा था कभी। सब कुछ खुशनुमा नजर आता है, जुबान पर सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविता नए साल की शुभकामनाएं बार-बार आती है, चंद पंक्तियां देखिए और उनमें छिपा उत्साह देखिए-

कोट के गुलाब और जूड़े के फूल को

हर नन्ही याद को हर छोटी भूल को

नए साल की शुभकामनाएं!

शुभकामनाओं का सिलसिला पूरे जनवरी माह में जारी रहता

है। इस महीने की तासीर ही कुछ ऐसी है कि हर चीज पुरानी होते हुए भी नई लगने लगती है, प्यारी लगने लगती है, उसे शुभकामनाएं देने का मन करता है, मन यह भी करता है कि हर पुरानी भूल पर हंस दें और उसे जाने दें। नया साल हमारे दिल में

ऐसा जोश भर देता है कि हम अपनी गलतियों को अलाव में झोंकते हुए हाथ सेंकते हैं और मुस्कुरा देते हैं, उम्मीद करते हैं कि अब सब ठीक हो जाएगा, हमें लगने भी लगता है कि सब ठीक हो ही रहा है, पर न जाने ऐसा क्यों होता है कि दो–चार महीने बीतते–बीतते हमारा यह जोश ठंडा पड़ने लगता है और मौसम गर्म होने लगता है, क्या मौसम और जोश में कोई विपरीत संबंध है?

नया साल बहुत जल्द पुराना होने लगता है, फरवरी आने के साथ ही शुभकामनाओं का कारोबार थम जाता है, जो सकारात्मकता सह–उत्पाद के रूप में उत्पन्न हो रही थी, उसका बनना बंद हो जाता है, जिस डायरी में संकल्प लिखे थे, वो किसी कोने में दुबक जाती है, गर्म मौसम में उसका यूं दुबक जाना समझ ही नहीं आता, पर ऐसा होता है। दरअसल हर सामान्य व्यक्ति की यही समस्या होती है, उसे बार–बार ऐसे मौके चाहिए होते हैं, जो उसे प्रेरित कर सके।

दिलों में हो फागुन, दिशाओं में रुनझुन

हवाओं में मेहनत की गूंजे नई धुन

गगन जिसको गाए हवाओं से सुन–सुन

वही धुन मगन मन, सभी गुनगुनाएं।

अशोक चक्रधर की कविता 'नया साल' की ये पंक्तियां दिलों में फागुन की बात करती है, वहीं फागुन जिसका इंतजार करता है नया साल। फागुन के मौसम में ही तो कोहरे की चादर उतर जाती है और निखरा–निखरा नजर आता है हर फूल, और हरी नजर आती हैं पत्तियां। ये आपके जोश को बनाए रखने के लिए जरूरी ईंधन नहीं है क्या?

नया साल नया ही बना रहे, जोश बना रहे, इसके लिए जरूरी है कि हम कुदरत की हर करवट पर नए जोश से उठ खड़े हों और चल पड़े अपने लक्ष्यों को पूरा करने में। एक और काम जो करना होता है, वह है अपनी डायरी को संभालते रहने का। उन लक्ष्यों, संकल्पों के बारे में विचार करने का, जो छूटते जा रहे हैं। जो नियम छूट रहे हैं, उन्हें सिरे से खारिज करने की बजाय उन पर पुनर्विचार करना ही चाहिए। अक्सर हम सब यही करते हैं कि जिन

नियमों को निभा नहीं पाते, उन्हें फिर छोड़ ही देते हैं, जबकि एक मध्यम मार्ग हमेशा हमारे पास होता है। जैसे आपने यह तय किया है कि रोजाना सुबह पांच बजे उठना है, पैदल सैर को निकल जाना है, लेकिन आप इस नियम पर नहीं चल पा रहे, तो इसे एकदम छोड़ने की बजाय आप सप्ताह में चार दिन ऐसा करने का नियम बना सकते हैं। एक बार सोचकर देखिए कि जनवरी में आपको पांच बजे उठना ठंड की वजह से मुश्किल लग सकता है, लेकिन मार्च-अप्रेल आते-आते सुबह के पांच बजे का वक्त कितना सुहावना लगेगा और जून में तो सूरज के तेवर महसूस होने लगेंगे। कुछ ऐसा ही तो जीवन में होता है, जिन्हें आप मुश्किल समझ लेते हैं, वे दरअसल मुश्किलें होती ही नहीं, एक अवस्था होती है, जिसे बदलना ही होता है। एक बदलाव ही है जो हमेशा स्थायी होता है।

हरिश्चंद्र पाण्डेय की कविता 'नया साल मुबारक हो' पर गौर करना जरूरी-सा है। देखिए ये पंक्तियां-

कल बुलडोजर की आसानी के लिए
आज घर को चिन्हित करते कर्मचारी को देख
घर का छोटा बच्चा दूर से ही बोला पंचम में
नया साल मुबारक हो अंकल
नया साल मुबारक हो...

आशावादी होना मुश्किल है, बच्चा बन जाना मुश्किल है, विपदा में किसी को मुबारकबाद देना भी मुश्किल है, पर क्या ऐसा नहीं करने पर विपदा टल सकती है? नया साल नए विचारों का साल बने, दिल में बचपन जगाने का साल बने, कि बचपन न तो अपनी उपलब्धियों पर गुमान करना जानता है, न अपने नुकसान पर ज्यादा देर तक रो सकता है। नया साल भी अपने बचपन की अवस्था में है अभी, कितनी कम उम्र होती है एक साल की, सिर्फ बारह महीने की उम्र ही तो है, संभाल लें इन महीनों को और जोड़ लें अपने जीवन में कुछ ऐसी उपलब्धियां जिनके किस्से आप 2020 के आखिरी दिन अलाव में हाथ सेंकते हुए सुना सकें। कैलेंडर फिर से बदल जाए, इससे पहले खुद को बदलें, क्योंकि आपके हाथ में बस यही है, कुदरत की चाल को आप बदल नहीं सकते, जिस सूरज का आप जनवरी के महीने में शिद्दत से इंतजार कर रहे हैं, मार्च बीतने के साथ ही उसे कोसना शुरू कर देंगे, ये आपको देखना है कि जीवन कोसने में न जाए, आपके कोसने से सूरज परेशान हो सकता है, जो खुद को तैयार कर रहा होगा समंदर के पानी को सोखने में, ताकि वो बादल बन सके, फिर बूंद-बूंद बरस सके और फूट पड़े वो बीज जमीन में दबे हुए हैं जो और हम फिर से कर सकें एक नई शुरुआत, जो सपने मन में दबे पड़े हैं, उनका विस्तार हकीकत की जमीन पर नजर आए, नया साल इस तरह एक साल में बार-बार आपकी जिंदगी में आए। •

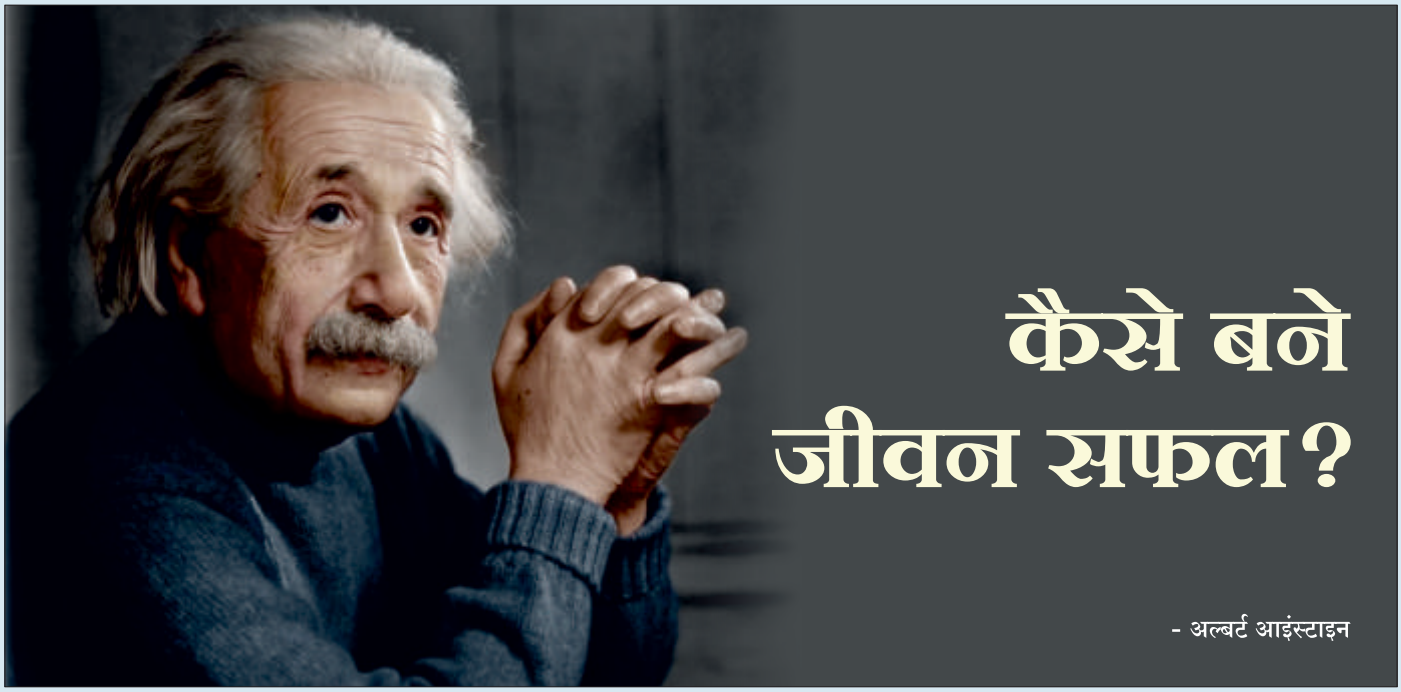

कैसे बने जीवन सफल?

- अल्बर्ट आइंस्टाइन

जो व्यक्ति अपने एवं समग्र मानव-समाज के जीवन को तुच्छ समझता है, वह अभागा ही नहीं, वरन जीवित रहने के अयोग्य भी है।

हम अल्पकाल के लिए ही संसार में आये हैं। क्योंकि किस उद्देश्य साधन के निमित्त आये हैं? यह हम नहीं जानते। गम्भीरता से इस प्रश्न पर यदि विचार न भी करें, तो भी कम-से-कम व्यावहारिक दृष्टि से मुझे ऐसा लगता है कि हमारा जीवन मानव-जाति के लिए ही है। हम उनके लिए जीवित हैं। जिसकी हंसी और मुस्कुराहट पर हमारी शांति आश्रित है। हम उन सहस्त्र नर-नारियों के लिए जीवित हैं, जिनसे व्यक्तिगत परिचय न होते हुए भी जीवन के साथ हमारी सहानुभूति का दृढ बंधन है।

ईश्वरास्था की अनुभूति ही मनुष्य की श्रेष्ठतम अनुभूति है। इस अनुभूति में ही शिल्प, कला और विज्ञान का बीज निहित है, जो इस रहस्यानुभूति द्वारा अभिभूत न होते वे मृतप्राय हैं, रहस्य धर्म का मूल है। विश्वास और मनुष्य की अंतरतम चेतना एवं उज्ज्वलता सौंदर्य के विकास-संबंध की अनुभूति ही वास्तव में धार्मिक मनोवृत्ति है। मैं इसी मायने में एक निष्ठा-पालन धार्मिक मुनष्य हूं। मैं उस ईश्वर की कल्पना नहीं कर सकता, जो स्व-निर्मित जीवों को दंड देता है अथवा उन्हें पुरस्कृत करता है। कोई मनुष्य देहावसान के उपरांत भी जीवित रह सकता है, ऐसा मैं नहीं मानता। यह अवैज्ञानिक विश्वास दुर्बल-चित व्यक्तियों ने फैलाये हैं।

प्राय: चौबीस घंटों में न जाने कितनी बार मुझे स्मरण हो आता है कि मेरे अंदर और बाहर का विकास अगणित जीवित और मृत मनुष्यों के परिश्रम का फल है। जैसे मैंने इन व्यक्तियों से बहुत-कुछ पाया है, ठीक उसी तरह मुझे अपने परिश्रम से समाज को दान भी करना है।

सरल और सादे जीवन के प्रति मुझे मोह है। मैंने अपने लिए दूसरों को आवश्यकता से अधिक कष्ट दिया है- यह सोचते ही मेरा मन वेदना से छटपटाने लगता है। इसका अंतिम परिणाम शारीरिक बलप्रयोग ही होता है, ऐसा मेरा विश्वास है, मेरा विश्वास है कि सरल जीवन प्रत्येक के लिए सुखद है।

दार्शनिक दृष्टि से 'मनुष्य मात्र की स्वाधीनता' पर मुझे किंचित मात्र भी विश्वास नहीं। शोपेनहावर का कहना है कि मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार कार्य कर सकता है; परन्तु वह कब, किस तरह कर पायेगा, यह जान लेना बहुत-कुछ उसके अधिकार और क्षमता के बाहर की वस्तु है।

साधारणत: अपने तथा विश्व के अस्तित्व का रहस्य अथवा जीवन के उद्देश्यों की खोज मैं निरर्थक समझता हूं। परंतु फिर भी प्रत्येक व्यक्ति अपने सम्मुख कोई-न-कोई ऐसा आदर्श अवश्य

रखता है, जो उसके व्यवहार और विचारों को प्रभावित करे। इस तरह शारीरिक सुख और आराम को ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य नहीं माना जा सकता। जिन आदर्शों ने मेरे जीवन-पथ को आलोकित किया है, जो निरंतर मेरे जीवन को आगे बढ़ाने में सहायक हुए हैं, जिन्होंने मुझे साहस और प्रेरणा दी है, वे हैं- सत्, सौंदर्य एवं महानता।

कला व विज्ञान के क्षेत्र में अदृश्य के प्रति अनुसंधान से विमुख जीवन मेरे निकट निस्सार है। धन, सम्पत्ति, वस्तु-जगत की सफलता और विलासिता-सम्बंधी साधारण उद्देश्यों से मुझे घृणा है।

अपने व्यक्तित्व में मैं दो परस्पर विरोधी भाव-धाराओं का अस्तित्व प्रतिक्षण अनुभव करता हूं। प्रथम, सामाजिक न्याय और दायित्व-पालन की प्रतिष्ठा एवं दूसरा, मनुष्य के साहचर्य के प्रयोजन-बोध का अभाव, इन सारे बंधनों के होते हुए भी एक विच्छिन्न और नि:संग व्यक्तित्व का अस्तित्व मैंने सदा बनाये रखा।

मैं तो गणतंत्र में विश्वास रखता आया हूं। प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान मिले, परंतु किसी को 'पूजनीय' के विशेषण से विभूषित न किया जाना चाहिए। इसे तो मैं विधि की विडम्बना ही समझता हूं कि मेरे निकट के संगी साथियों से मुझे अधिकाधिक सम्मान प्राप्त हुआ, मेरे कृतित्व के पुरस्कार-स्वरूप यह प्रशंसा मिली हो, ऐसा मैं नहीं मानता। कदाचित मेरे अथक परिश्रम से जिन युगांतरकारी सत्यों के दर्शन मुझे हुए, उन्हें समझने के लिए यथेष्ट संख्या में लगे लोगों में आग्रह था। मेरी प्रशंसा और विश्वख्याति का कारण भी कदाचित यही हो।

यह मैं भली-भांति जानता हूं कि किसी गूढ़ और जटिल कार्य की सफलता के निमित्त विचार और कर्म दोनों का परिचालन कोई-न-कोई व्यक्ति ही करेगा, किंतु उस व्यक्ति द्वारा जो लोग परिचालित होंगे, उन्हें अपने नेता को निर्वाचित करने की पूरी स्वतंत्रता एवं अवसर प्रदान करना चाहिए, मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि एकनायकवाद का पतन अवश्यम्भावी है। मैं इस बात में भी विश्वास करता हूं कि प्रतिभाशाली तानाशाह के पश्चात् ही कठोर शासन का आविर्भाव होता है। इसे एक नियम ही मानना चाहिए। यही कारण है कि इटली (मुसोलिनी कालीन) और रूस के राजनीतिक दर्शन का मैं विरोधी हूं। यूरोप के गणतंत्र पर जनता की आस्था कम हो जाने का कारण यहां के शीर्षस्थ-शासकवर्ग की ढुलमुल कार्य-विधि और निर्वाचन-मंडलों में स्वतंत्र और मौलिक विचारों का अभाव है।

स्वयं गणतंत्र में कोई दोष नहीं है, मनुष्य की जीवन-नैया खेने के लिए राष्ट्र की अपेक्षा व्यक्ति विशेष की सृजनशक्ति, सजगता और महानता को ही मैं बहुत उपयोगी समझता हूं।

सामरिक अस्त्र-शस्त्र की प्रतिद्वंदिता से मुझे घृणा है। कोई मनुष्य नगाड़े की ताल के साथ-साथ है- इसकी कल्पना करते ही मुझे उससे घृणा होने लगती है, शीघ्र अति शीघ्र युद्ध दूर होना चाहिए, क्योंकि युद्ध अति निकृष्ट वस्तु है। कोई मेरे शरीर को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दे, यह तो मुझे स्वीकार है। परंतु युद्ध-जैसी घृणास्पद चीज में मैं लिप्त नहीं हो सकता।

साधारणत: अपने तथा विश्व के अस्तित्व का रहस्य अथवा जीवन के उद्देश्यों की खोज मैं निरर्थक समझता हूं। परंतु फिर भी प्रत्येक व्यक्ति अपने सम्मुख कोई-न-कोई ऐसा आदर्श अवश्य रखता है, जो उसके व्यवहार और विचारों को प्रभावित करे। इस तरह शारीरिक सुख और आराम को ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य नहीं माना जा सकता। जिन आदर्शों ने मेरे जीवन-पथ को आलोकित किया है, जो निरंतर मेरे जीवन को आगे बढ़ाने में सहायक हुए हैं, जिन्होंने मुझे साहस और प्रेरणा दी है, वे हैं- सत्, सौंदर्य एवं महानता।

इन सब अमानवीय बातों के होते हुए भी मानव-जाति के भविष्य के सम्बंध में मैं आशावादी हूं। मेरा विश्वास है कि राजनीतिक व व्यापारिक स्वार्थलोलुपों द्वारा यदि जन-साधारण की निर्मल बुद्धि को विद्यालयों और अखबारों के माध्यम से निरंतर कलुषित न किया जाता तो युद्ध नामक अभिशाप पहले ही विलुप्त हो जाता।

ईश्वरास्था की अनुभूति ही मनुष्य की श्रेष्ठतम अनुभूति है। इस अनुभूति में ही शिल्प, कला और विज्ञान का बीज निहित है, जो इस रहस्यानुभूति द्वारा अभिभूत न होते वे मृतप्राय हैं, रहस्य धर्म का मूल है। विश्वास और मनुष्य की अंतरतम चेतना एवं उज्ज्वलता सौंदर्य के विकास-संबंध की अनुभूति ही वास्तव में धार्मिक मनोवृत्ति है। मैं इसी मायने में एक निष्ठा-पालन धार्मिक मुनष्य हूं। मैं उस ईश्वर की कल्पना नहीं कर सकता, जो स्व-निर्मित जीवों को दंड देता है अथवा उन्हें पुरस्कृत करता है। कोई मनुष्य देहावसान के उपरांत भी जीवित रह सकता है, ऐसा मैं नहीं मानता। यह अवैज्ञानिक विश्वास दुर्बल-चित व्यक्तियों ने फैलाये हैं।

अनंत जीवन-जिज्ञासा, सृष्टि का मूल स्रोत एवं विश्वव्यापी अखंड-चेतना जैसे गूढ़ सत्य यदि मुझे किंचित मात्र भी उपलब्ध हों, तो मैं अपने जीवन को सफल मानूंगा। •

प्रशासनिक सेवाओं का सुदृढ़ीकरण जरूरी

–इंदिरा गांधी

देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी संवेदनशील, पारदर्शी एवं जवाबदेह प्रशासनिक व्यवस्था के साथ प्रशासनिक सेवाओं की सुदृढ़ीकरण से अधिकाधिक लोगों को लाभान्वित किए जाने की सोच से कार्य करने वाली स्वप्नदृष्टा महिला राजनीतिज्ञ थीं। उन्होंने देश में विभिन्न स्तरों पर प्रशासनिक सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के कदम उठाए थे। प्रस्तुत आलेख 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, दिल्ली की वार्षिक बैठक' में 22 अक्टूबर, 1971 को उनका प्रशासनिक सेवाओं की बेहतरी के संबंध में दिए गए भाषण का अविकल रूप है। इसमें उन्होंने प्रशासनिक सेवाओं से संबंधित जन अपेक्षाओं एवं प्रशासनिक सुधार, सामाजिक न्याय, समानता आदि प्रश्नों के आलोक में बहुत कुछ महत्त्वपूर्ण ऐसा कहा है जो आज भी प्रासंगिक है।

–सम्पादक

आप सब जानते हैं कि गत चार या पांच वर्षों में राजनीतिक चेतना आमतौर पर तीव्र हुई है। भारत में इसे स्पष्ट देखा जा सकता है। लेकिन इस जन चेतना की मेरी समझ से विश्व में प्रत्येक देश में अभिव्यक्त होते हुए पाया जा सकता है। कुछ जगहों में यह आन्दोलनों और प्रतिरोधों का रूप लेती है और अन्य जगहों में कुछ और रूप, पर यह वास्तव में एक ही चीज है जो भिन्न रूपों में प्रकट हो रही है। शिक्षा और विकास के द्वारा लोग उन सबमें और अधिक हिस्सा लेना चाह रहे हैं जो घटित हो रहा है।

भारत में लोग अपनी समस्याओं के कारण और पिछड़ी आर्थिक स्थिति की वजह से वर्तमान स्थिति से संतुष्ट नहीं हैं। वे चाहते है कि विकास की गति तेज हो। वे चाहते है कि राष्ट्रीय आय का लाभ अधिक न्यायोचित रूप से सभी को मिले। वे और ज्यादा सामाजिक न्याय तथा समानता चाहते हैं। उन्हें आशा है कि राजनीतिक दल बहुत–कुछ करेंगे। वे उनसे सेवा की आशा लगाये हैं। वे चाहते हैं कि काननू की प्रणाली में परिवर्तन हो। मैं समझती हूं कि यह आम उद्वेलन ही प्रशासनिक सुधार की मांग का कारण है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रशासन को परिवर्तन और विकास की आवश्यकताओं के प्रति सजग होना चाहिए और इन्हें संभव बनाने के लिए उसमें तकनीकी दक्षता, आवश्यक ज्ञान तथा वांछनीय मनोवृत्ति होनी चाहिए।

दुनिया में कोई भी वस्तु कभी भी एक जैसी नहीं रहती। और हम एक ऐसे समय से होकर गुजर रहे हैं जब चीजें पहले से कहीं ज्यादा तेजी से आगे बढ़ रही हैं। इसलिए हम जो भी योजना या कार्यक्रम शुरू करें, हमें सदा भविष्य पर नजर रखनी चाहिए– उन सबमें भी जिसका हम प्रशिक्षण ले रहे हों। हमें आज की विशिष्ट परिस्थिति के बारे में नहीं सोचना चाहिए, बल्कि उसके साथ ही भविष्य की ओर भी देखना चाहिए जिससे हम सोच सकें कि जैसे–जैसे हम एक–एक कदम आगे बढ़ें, वर्ष–दर–वर्ष किस प्रकार स्थिति में सुधार लाते चलें। मैं देखती हूं कि आज इसी की कमी है। इसे शिक्षा प्रणाली में न केवल हमारे देश में, बल्कि अन्य देशों में भी देखा जा सकता है। सर्वत्र लोगों को सामाजिक यथास्थिति के लिए तैयार किया जा रहा है, जो परिस्थितियां हैं, उनके लिए शिक्षण दिया जा रहा है, न कि ऐसे समाज के निर्माण

के लिए जिसकी हम कल्पना करते हैं और जो हमारे आदर्शों के अनुकूल होगा। मैं समझती हूं कि किसी भी प्रशिक्षण संस्थान को इन दोनों दृष्टिकोणों को सामने रखकर चलना चाहिए।

यहां भारत में और शायद और जगहों में भी सरकार की गतिविधियों का योजनाबद्ध ढंग से विकास हुआ है और उनमें जटिलता आई है। सरकारी कर्मचारियों की भी संख्या बढ़ी है और जो लोग तथाकथित पार्किंसन के नियम की दुहाई देते हैं, उनमें बहुतरे लोगों का उद्देश्य धैर्यकुशलता लाना नहीं हैं, बल्कि सरकार द्वारा नई जिम्मेवारियों को लेने से आनाकानी करना है। जैसे-तैसे जनता का आग्रह और उसकी जरूरतें बढ़ती गई हैं, सरकारी कामकाज भी बढ़े हैं। हमारे देश ने सरकार और सरकारी अमले के सम्बन्ध में नकारात्मक रवैये को स्वीकार न करके उचित ही किया है। अगर सरकार को जनता के लिए और ज्यादा काम करने हैं, तो उसके कर्मचारियों को सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों को माध्यम के रूप में लागू करने हेतु पहले से अधिक सजीव और रचनात्मक योगदान देना होगा।

अपनी नई जिम्मेवारियों को निभाने के लिए सरकारी अमले को स्वत: बदलना होगा। कुछ परिवर्तन आया भी है, लेकिन आगे के वर्षों में बहुत-कुछ बदलने की जरूरत है।

प्रशासनिक यंत्र का कार्य यथास्थिति और व्यवस्था बनाये रखने की अपेक्षा अब विकास की गति को बनाये रखना अधिक हो गया है। योजना कार्यों को लागू करने में कुशल और तकनीकी दृष्टि से दक्ष व्यक्तियों की बात का ज्यादा महत्त्व है तथा इसके लिए पहले की स्वयंसिद्धि मानी जाने वाली बातें भी काम में रूकावट न लाने पायें। साथ ही आम प्रशासक को स्वयं भी अधिक और तकनीकी तत्वों की ज्यादा गहरी जानकारी होनी चाहिए।

आज प्रत्येक देश में विशेषज्ञों और आम प्रशासकों के बीच संघर्ष की स्थिति पाई जाती है। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि देश को इन दोनों से सर्वोत्तम लाभ मिल सकें। कभी-कभी मुझे पता चलता है कि हमारे विशेषज्ञ पर्याप्त विशेषज्ञता से युक्त नहीं होते और वे आपसी लड़ाई-झगड़ों तथा अपने को औरों से श्रेष्ठ समझाने की मानवोचित दुर्बलता से भी ऊपर नहीं होते। इसके बावजूद चाहे विशेषज्ञ हों या प्रशासक, दोनों ही एक समान सामाजिक परिवेश की उपज है और दोनों को ही भविष्य के कृतित्व के लिए अपने-आपको तैयार करना चाहिए, क्योंकि आज विश्व में उन्नति का मूल मंत्र यही है कि विभिन्न क्षेत्रों में पारंगत लोग मिल-जुलकर काम करें।

हमें इस परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर ही विभिन्न प्रकार के सरकारी अमले की भर्ती व प्रशिक्षण की नीतियों पर पुनर्विचार तथा उनके कामकाज का मूल्यांकन करना चाहिए। नियम-विनियमादि के बिना तो शायद कोई भी सरकार नहीं चल सकती। लेकिन ये नियमादि जड़ नहीं हो सकते। उन्हें बदलती हुई परिस्थितियों के अनुकूल होना चाहिए। हम ऐसी स्थिति को

संतोषजनक नहीं मान सकते जिसमें तथाकथित 'मौलिक नियमों' या 'सिविल सेवा नियमों' बदलने की बजाय संवैधानिक प्रावधानों में संशोधन अधिक आसान हो।

मैं यहां नियमादि में अभीष्ट परिवर्तनों को ब्यौरा देने नहीं आई हूं। यह आप जैसे प्रशासनिक विशेषज्ञों का काम है कि इन बातों पर सोच-विचार करें और कोई रास्ता खोज निकालें। मैं तो बस इस पर जोर देना चाहूंगी कि कार्यविधियां और आचार-संहिताएं ऐसी होनी चाहिए जिनसे नये तौर-तरीकों के लिए प्रोत्साहन मिले, जो उत्तर-दायित्त्व और अधिकार क्षेत्र के अनुरूप हो और जिनसे सभी स्तरों पर भागीदारी की भावना का अनुभव हो। हम अपने-आपको भागीदारपूर्ण लोकतंत्र कहते हैं। हमारे प्रशासनिक तंत्र को इसी भावना को प्रतिबिम्बित करना चाहिए। ओहदे की ऊंचाई की जगह सहयोग को लेना चाहिए।

बहुसंख्यक सरकारी कर्मचारियों का कार्यकाल प्राय: 30 वर्ष तक का होता है, चाहे वे क्लर्क हो या इन्जीनियर या टैक्स अफसर या आम प्रशासक। इस सुदीर्घ कार्यकाल में प्रत्येक सरकारी कर्मचारी देखेगा कि उसके इर्द-गिर्द समाज में उल्लेखनीय परिवर्तन हो रहे हैं। जब आज का युवा सरकारी कर्मचारी, चाहे वह तकनीकी काम कर रहा हो या गैर तकनीकी, चोटी पर पहुंचेगा तो वह पायेगा कि उसकी आज की दुनिया तब से बहुत ज्यादा बदल चुकी है, जब उसने सेवा में प्रवेश किया था। जाहिर है कि उसे अपनी कार्य-कुशलता को लगातार बढ़ाते जाने की आवश्यकता है।

इसलिए में सभी संवर्गो के कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण–कार्यक्रम को बहुत महत्त्व देती हूं– आरंभिक प्रशिक्षण को भी तथा सेवाकालीन प्रशिक्षण को। औपचारिक प्रशिक्षण के अलावा, मैं समझती हूं कि सरकारी सेवा में आनेवालों के लिए यह और ज्यादा जरूरी है कि वे नये विचारों को ग्रहण करने में मानसिकता को विकसित करें और, उनमे ऐसी तत्परता और निष्ठा हो कि वे हर नये काम को, जो उन्हें सौंपा जाये, अच्छे तथा कुशल ढंग से पूरा करें। ये कुछ विशिष्ठ गुण हैं जिन को देश भावी सरकारी कर्मचारियों से पाने की आशा करता है। साथ ही नकारात्मक रूप में, उन्हें औरों को देय समझने और ज्यादा से ज्यादा आसान राह खोजने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए। हमें प्रतिभा की खोज, उसके विकास और उसे पुरस्कृत करने की कार्यविधियों को और ज्यादा युक्तिसंगत रूप में तैयार करना चाहिए। अगर प्रतिभा को पुरस्कृत न किया गया, तो इससे ज्यादा निराशाजनक और कोई बात नहीं होती। और अगर किसी समाज में केवल वरिष्ठता और पद की ही पूछ होती है तो वह समाज आगे नहीं बढ़ सकता। सार्वजनिक प्रशासन को सामंतवादी जकड़ से बाहर निकलना होगा।

आज की एक महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक समस्या तथा आपके अनेक अध्ययनों का विषय अधिकारों का प्रत्यर्पण है। लेकिन हम इसकी संकीर्ण व्याख्या यों कर सकते हैं कि दिन–प्रतिदिन के निर्णयों के मामले में दिल्ली (या राज्यों की राजधानियों में) स्थित सचिवालय की दखलदांजी के बिना किसी अभिकरण या कार्यपालक अधिकारी को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। अक्सर किसी संस्था के प्रमुख, जिन्हें अधिकार प्रत्यापित होते हैं, उनका अपने सहयोगियों के साथ मिलकर प्रयोग नहीं करते तथा टीम भावना से काम करने की व्यवस्था कायम नहीं करते। परिणाम यह होता है कि शिकायती फिर पहले वाली केन्द्रीय सत्ता के पास शिकायत लेकर पहुंचते हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें नये तौर–तरीकों और नई परंपराओं को विकसित करने की गुंजाइश है।

दूसरी समस्या मानसिकता की है। हमारी सिविल सेवा में अधिकांशत: लोग शहरी क्षेत्रों से आते हैं और वे नगराभिमुखी होते हैं, जबकि हमारी अधिकांश जनता गांवों में बसती है। हमारी शिक्षा प्रणाली का आधार व्यापक हो जाने के बाद तथा उच्च शिक्षा की सुविधाओं का ज्यादा विस्तार हो जाने के फलस्वरूप हमें आशा करनी चाहिए कि हमारी सेवाओं का वर्गगत स्वरूप बदलेगा। लेकिन इसमें समय लगेगा। इस बीच यह समस्या हल होनी है कि सरकारी कर्मचारी– चाहे वह कलक्टर या डॉक्टर या सिंचाई इन्जीनियर जैसा प्रशासक है– कैसे गरीबों और ग्रामीण जनता की समस्याओं के साथ अपने आपको जोड़ते हुए काम करें। हम कैसे सुनिश्चित बनायें कि उन्हें जनता से सहज रूप में सहानुभूति है और उनकी कठिनाइयों तथा समस्याओं का गहरा अहसास है? सही मानसिकता का निर्माण शायद हमारी शिक्षा संस्थाओं से आरंभ हो सकता है। लेकिन वह सिलसिला जारी रहना चाहिए और उसे सरकारी सेवा के दौरान पूर्णता मिलनी चाहिए।

वर्ष 1947 में सत्ता हस्तांतरण के समय हमारे सिविल कर्मचारियों को सामंजस्य के बड़े दौर से गुजरना पड़ा। निरंतरता बनाये रखने के लिए हमने उस समय वे परिवर्तन नहीं किये, जिनकी जरूरत थी। कुल मिलाकर नये माहौल में अपने–आपको ढालने की प्रक्रिया बिना किसी खास कठिनाई के पूरी हो गई। अब जैसे–जैसे सरकार की नीतियां अधिक समतावादी होती जा रही हैं, नये समायोजन की आवश्यकता फिर सामने आई है। जरूरत इस बात की है कि लोगों की मानसिकता में पर्याप्त परिवर्तन हो, विशेषत, उन स्थलों में जहां प्रशासन जनता के सम्पर्क में आता है। उदाहरण के लिए, प्रखंड विकास कार्यालय, तालुका कार्यालय, पुलिस थाना, डाकखाना, रेलवे टिकट काउन्टर आदि। इन सभी क्षेत्रों में आवश्कता यह है कि लोगों के साथ अधिक शिष्टता से पेश आया जायें।

ये सार्वजनिक कार्यालय बुनियादी स्तर पर जिस ढंग से काम करते हैं, उसमें द्रष्टव्य सुधार लाने के लिए सरकारी कर्मचारियों और उनके एसोसिएशनों का सहयोग लिया जाना चाहिए। ऐसे सुधार लाने में उच्च अधिकारी वर्ग पर विशेष जिम्मेवारी है कि यह प्रभावशाली नेतृत्व प्रदान करें।

हमारी समाज कल्याण और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के विस्तार के कम में नये अधिकरण और संस्थान बनाये जा रहे हैं। यह विशेष रूप से आवश्यक है कि इन अभिकरण और संस्थानों में, जैसे कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अस्पतालों और दवाखानों तथा अनुसूचित जातियों और जनजातियों को स्कॉलरशिप व

अनुदान देने वाले दफ्तरों में, ऐसे लोग नियुक्त हों जिनमें यथार्थत: सम्बद्ध लोगों के प्रति चिंता और करूणा की भावना हो। लेकिन इन दिनों शिकायत यह सुनने को मिलती है कि सरकारी कर्मचारी ग्रामीणों के साथ साहबों सी ठसक और क्रूरता का आचरण करता है, जबकि अगर ऐसा ही व्यवहार उसके ऊपरवाले अधिकारी उसके साथ करें, तो वह नाराजगी जाहिर करता है।

मैंने जो-कुछ कहा है, उसका अधिकांश हमारे सार्वजनिक क्षेत्र पर भी ज्यादा लागू होता है। इस क्षेत्र में सामाजिक उद्देश्यों के प्रति वचनबद्धता की और भी ज्यादा जरूरत है, तकनीकी तत्त्वों के लिए और भी ज्यादा गुंजाइश है, ऊपर से नीचे तक अधिकारों के विकेन्द्रीकरण की आवश्यकता है तथा सहयोग और सहभागिता की गहरी भावना का विकास अनिवार्य है। संक्षेप में कहा जाये, तो एक नई संस्कृति को अपनाने की जरूरत है। सार्वजनिक उपक्रमों को अपना आर्थिक दायित्व पूरा करना है। कुशलतापूर्वक कार्य करके उन्हें राष्ट्र तथा बजट साधनों को मजबूती देनी है। उन्हें प्रशासन के नये प्रतिमान स्थापित करते हैं।

लोकतंत्र हमारे देश में जड़ें जमा चुका है। हम प्रशासन-सम्बन्धी जो भी सिद्धान्त विकसित करें या जो भी प्रणाली बनायें, एक तो जनता को वे स्वीकार्य होने चाहिए और दूसरे उनसे जनहित का साधन होना चाहिए। हमारी लोकतंत्री पद्धति द्वारा यह संभव हो सकता है कि बड़ी संख्या में लोगों को प्रशासन का सीधा अनुभव मिले। ऐसा तजुर्बा उन्हें पंचायतों या पंचायत समितियों, जिला परिषदों, राज्य विधानसभाओं या संसद के चुनावों में भाग लेने से मिलता रहा है। इस प्रकार हमारे यहां जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे लोग मौजूद हैं जिन्हें हमारी प्रशासनिक व्यवस्था को साफ तौर पर देखने का मौका मिला है और उनका कुछ हद तक मालूम है कि यह कैसे काम करती है और इसको किस प्रकार नया रूप दिया जाना चाहिए। मुझे आशा है कि संस्थान ने ऐसे उपाय निकाले हैं या वह निकालेगा जिनसे प्रशासनिक विशेषज्ञों तथा चुनाव द्वारा पदासीन व्यक्तियों के बीच लाभदायक विचार-विनिमय हो सके।

श्री अशोक मेहता से सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि आप क्षेत्रीय भाषाओं में काम करने के इच्छुक हैं, क्योंकि यह तो स्पष्ट है कि हम लोगों के साथ समुचित व्यवहार उनकी भाषा के जरिये ही कर सकते हैं और अगर हम उनकी भाषा को जानें, तो हम उन्हें बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। इसलिए हमें क्षेत्रीय भाषाओं का विकास करना है और हमें हिन्दी के ज्ञान को भी बढ़ावा देना है, जिसे जैसा कि आप जानते हैं, मैं हमेशा राष्ट्रीय सम्पर्क की भाषा कहती हूं। यह इसलिए नहीं करना है कि हम किसी पर कोई भाषा थोपना चाहते हैं, बल्कि शुद्ध रूप से इस व्यावहारिक जरूरत के कारण करना है कि हमें एक-दूसरे के बारे में जानना व उनसे सम्पर्क करना चाहिए और इसके लिए किसी एक ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे इस देश के सभी लोग समझने के अलावा बोल सकते हो। निस्संदेह जो लोग प्रशासन में हैं, उनके लिए यह औरों की अपेक्षा ज्यादा जरूरी है।

इस देश में हमारी अनेक समस्याएं हैं, क्योकि यह देश पिछड़ा हुआ है, यह बहुत विशाल है और नव स्वाधीन है। लेकिन सच्चाई यह है कि छोटे से छोटा देश भी यही सोचता है कि उसकी भी ढेर सारी समस्याएं हैं। इसलिए समस्याओं का केवल यही कारण नहीं है कि हमारा देश आकार में बहुत बड़ा है। मैं समझती हूं कि जहां कहीं इन्सान रहता है, वहां सवालों के घेरों को तोड़ने के बजाय उनके अंदर कैद इन्सान की तरफ देखें, तो हमें शायद समस्या का ज्यादा टिकाऊ हल मिल सकता है। आज की दुनिया में मैं देखती हूं कि हम व्यक्ति को समस्याओं, कठिनाइयों या खुशियों के घेरे में न देखकर एक आंकड़े के रूप में अधिकाधिक देखते हैं- कोई हरिजन है या कोई अन्य किसी जाति का या कोई शिक्षित बेरोजगार है। हर किसी को किसी-न-किसी श्रेणी में रखकर उस पर वर्गगत ठप्पा लगा दिया जाता है और इसलिए हम भूल जाते हैं कि प्रत्येक ठप्पे के पीछे हरेक व्यक्ति पूर्ण तथा भिन्न होता है। निस्संदेह, कोई भी प्रशासक एक-एक व्यक्ति को लेकर कुछ नहीं कर सकता। लेकिन अगर वह कम-से-कम विचार करें कि प्रत्येक वर्ग व्यक्तियों के सामूहिक योग से बना है, तो उसकी काम करने की मानसिकता बदल जायेगी। अगर प्रत्येक व्यक्ति के प्रति वह यह दृष्टिकोण न रखें कि वह मात्र समस्या लेकर आनेवाला व्यक्ति है, बल्कि यह समझें कि उस व्यक्ति की सहायता से समस्या हल की जा सकती है, तो मैं समझती हूं कि समस्या के समाधान की दिशा में पहला जरूरी कदम उठाया जा चुका होगा।

श्री अशोक मेहता ने मेरे लिए, मेरे नेतृत्त्व आदि के बारे में बहुत उदार शब्द कहे हैं। लेकिन आपको शायद पता है कि इस मामले में मेरे बहुत कड़े विचार हैं। लोकतंत्र की सम्पूर्ण सार्थकता ही यह है कि हम नेता और अनुयायी की धारणा को लेकर काम न करें, बल्कि साझेदारी की भावना विकसित करें। हम सबको जनता की भावनाओं पर पानी फेरे बिना उसके लिए बेहतर रहन-सहन संभव बनाने के उद्देश्य से काम करना है, क्योंकि अनेक स्थानों में, जहां लोगों के जीवन का स्तर ऊंचा हुआ है, उसके फलस्वरूप वे बेहतर या ज्यादा खुशहाल इन्सान बने हों, ऐसा अक्सर देखने में नहीं आया है। तो, यह बड़ा काम हमारे सामने है और इसे हम केवल सहयोग और सहभागिता की भावना के साथ ही पूरा कर सकते हैं और मैं समझती हूं कि यह भावना हम सबके लिए सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, चाहे हम प्रशासन में हों या न हों, और हमें इसको अपनाना होगा। सबकी भलाई के लिए एक साथ मिलकर काम करने की आदत डालनी होगी। मुझे विश्वास है कि यह संस्थान इस दिशा में काम करेगा और जो लोग यहां से प्रशिक्षित होकर निकलेंगे, वे देश को आगे बढ़ाने में और वह रोशनी देने में सहायक बनेंगे जो हमारे नेता देना चाहते थे और जिसके सपने वे देखा करते थे। •

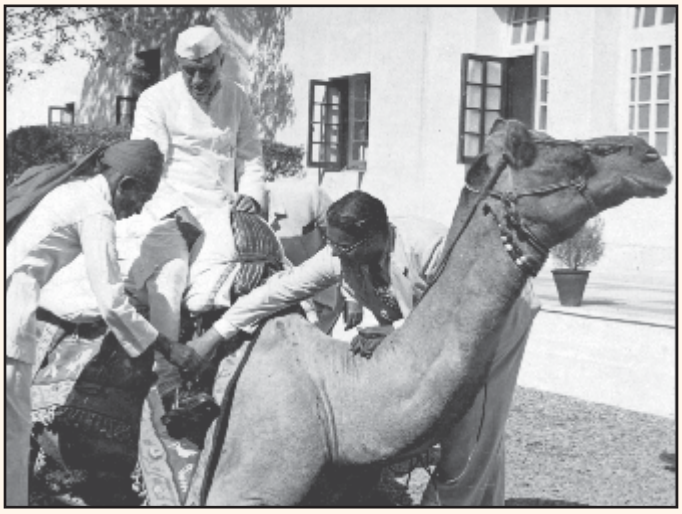

सौंदर्य एवं आनंद से संपन्न करें जीवन

– जवाहर लाल नेहरू

देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू लेखकीय संवेदना से सराबोर थे। राजनीति में रहते हुए भी प्रकृति में रमते यात्राएं करते, पुस्तकें पढ़ते, कुछ लिखते और जीवन के हर क्षण को भरपूर जीते थे। यह उनका संवेदनशील मन ही था कि वह राजनीति की व्यस्तता में भी अपने लिए समय निकाल ही लेते थे।

सस्ता साहित्य मण्डल से प्रकाशित 'राजनीति से दूर' पुस्तक में जीवन से जुड़े उनके विरल अनुभव, प्रकृति प्रेम, साहित्य अनुराग के साथ ही, संवेदनशील पाठक के उनके मन को बांचा जा सकता है। प्रस्तुत आलेख 'मैं कब पढ़ता हूं?' ऐसा है जिसे पढ़ते हुए पाठक उनकी रेल यात्रा के साथ पढ़ने और यात्रा को शब्दों में गुनने से साक्षात् हो सकते हैं। नए वर्ष पर 'सुजस' के पाठकों के लिए यहां यह आलेख विशेष रूप से दिया रहा है।

–सम्पादक

मेरे मित्र मुझसे अक्सर पूछते हैं – ''भला तुम पढ़ते कब हो?'' मेरी जिंदगी तरह–तरह की हलचलों से काफी सरोबोर मालूम पड़ती है, जिनमें कुछ तो शायद उपयोगी होती है, दूसरी ऐसी कि जिनकी उपयोगिता संदिग्ध रहती है। जब सर–दर्दी से भरे हुए राजनीति के काम में हमारी जवानी खप जाती है और हमारे दिन–रात सब उसीमें चले जाते हैं, जो अपेक्षाकृत अच्छी अवस्था में इससे सुखद कामों में लगते, तब किताबों से नाता जोड़ उनके आकर्षणयुक्त जगत में रहना आसान नहीं है। मगर इस भयंकर चक्कर में भी मैं रात के वक्त ऐसी कोई किताब पढ़ने के लिए थोड़ा–सा वक्त निकालने की कोशिश करता हूं जो राज–नीति से बिल्कुल दूर हो। लेकिन मेरा बहुत–कुछ पढ़ना, इस विशाल देश का इधर–से–उधर सफर करते हुए, रेल में ही होता हैं।

रेल का तीसरे या डयोढ़े दर्जे का डिब्बा ऐसा नहीं होता कि उसमें लिखा–पढ़ा या कोई काम किया जा सके, लेकिन अपने साथी मुसाफिरों से सदा ही मिलनेवाले मित्रता के व्यवहार और रेलवे अधिकारियों की कृपा से हालत बदल जाती है और मुझे भय है कि मैं दावा नहीं कर सकता कि ऐसे सफर में होनेवाली सब सुविधाओं का मुझे अनुभव है, क्योंकि दूसरे लोग इस बात पर जोर देते हैं कि मैं आराम से बैठूं और दूसरी ऐसी मेहरबानियां करते हैं, जिससे मेरे सफर में मुझे सुखद मानवता का स्पर्श हो जाता है। यह बात नहीं कि मुझे असुविधा से कोई प्रेम है या मैं जान–बूझकर उसे मोल लेना चाहता हूं। तीसरे दर्जे में मैं जो सफर करता हूं, वह भी इसलिए नहीं कि उसमें कोई बात या सिद्धांत निहित है, बल्कि असली बात तो रूपये, आने, पाई की है। तीसरे दर्जे के और दूसरे दर्जे के किराये में इतना ज्यादा फर्क है कि अत्यंत आवश्यक हो जाने पर ही मैं दूसरे दर्जे के सफर की शौकीनी करने का साहस करता हूं।

पुराने दिनों में कोई एक दर्जन साल पहले, सफर करते हुए में बहुत कुछ लिखा करता था, खासकर कांग्रेस–कार्य से संबंधित पत्र सफर में ही लिखता था। यहां तक कि मुख्तलिफ रेलों में सफर का बार–बार काम पड़ते रहने से उनकी अच्छाई बुराई का निर्णय में इसी बात से करने लग गया कि लिखने की सुविधा उनमें से किसमें ज्यादा है। मेरा खयाल है कि ईस्ट इंडियन रेलवे को मैंने पहला नंबर दिया था, नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे भी ठीक थी, लेकिन जी.आई.पी. रेलवे निश्चित रूप से बुरी थी और बुरी तरह से हिला डालती थी। ऐसा क्यों था, यह मैं नहीं जानता, न मैं यही जानता हूं कि विभिन्न रेलवे कंपनियों के किराये एक दूसरे से इतने अलग क्यों होने चाहिए, जबकि वे सब–की–सब हैं सरकारी नियंत्रण में ही। यहां भी जाकर जी.आई.पी. रेलवे ही एक सबसे ज्यादा खर्चीली रेलवे ठहरती है और तो और यह मामूली वापसी टिकट भी जारी नहीं करती।

अब मैंने चलती गाड़ी में ज्यादा लिखने की आदत छोड़ दी है। शायद अब मेरा शरीर भी उतना लचीला नहीं रहा है और अपने को इस तरह नहीं रख सकता कि चलती गाड़ी में जो हिलना और उछलना होता है, उसको बर्दाश्त कर ले। फिर भी अपनी यात्राओं में किताबों से भरकर संदूक में अपने साथ लें जाता हूं। उन सबको संभवत: मैं पढ़ नहीं सकता। उन्हें चाहे पढ़ा न जाय, फिर भी अपने आस-पास किताबों के मौजूद रहने से संतोष तो रहता ही है।

यह सफर लंबा, ठेठ कराची तक होने वाला था, जो मुझे अपनी हवाई यात्रा के बाद करीब-करीब यूरोप के आधे रास्ते जितना ही मालूम पड़ा। इसलिए मेरा संदूक जुदा-जुदा किस्म की किताबों से अच्छी तरह से भरा हुआ था। जैसा कि मेरी आदत थी, ड्योढ़े दर्जे के डिब्बे में मैं रवाना हुआ। लेकिन दूसरे दिन लाहौर में रास्ते की भयानक और भीषण गर्मी व धूल ने मेरे इरादे को ढीला कर दिया और मैंने दूसरे दर्जे के सफर की शौकीनी अख्तियार कर ली। इस तरह साधारणत: सुविधा और आराम के साथ मैंने सिंध के रेगिस्तान को पार किया। यह अच्छा ही हुआ जो मैंने ऐसा किया, क्योंकि अपने डिब्बे को अच्छी तरह बंद कर लेने पर भी उसमें जो दरारें वगैरह रह गई थी, उनसे धूल के बादल-के-बादल अंदर आये और हमारे ऊपर धूल की तह-की-तह जम गई; हमारे लिए सांस तक लेना भारी हो गया। तीसरे दर्जे का खयाल आने पर तो मैं कांप उठा। गर्मी वगैरह को तो मैं बर्दाश्त कर सकता हूं लेकिन धूल का बर्दाश्त करना मेरे लिए बहुत मुश्किल है।

महज उस साहसिकता के कारण जो कि इंसान में होती है– वह भावना जो कभी झुकना नहीं जानती, बल्कि हमेशा ऊंचे-ही-ऊंचे जाने की कोशिश करती है– वह वाणी कि जो आकाश से हमें सुनाई देती है। हममें से ज्यादातर इस आवाज को बहरे कानों से सुनते हैं, लेकिन यह अच्छा है कि कुछ लोग इसको सुनते हैं और हमारी मौजूदा संतान को श्रेष्ठ बनाते हैं। उनके लिए जीवन एक निरंतर चुनौती, एक दीर्घ साहसिकता और प्रयोगात्मक चीज है।

इस लंबे सफर में जो किताबें मैंने पढ़ी उनमें एक एडवर्ड विल्सन के बारे में थी। वह एक असाधारण और स्मरणीय मनुष्य था, जो पशु-पक्षियों का प्रेमी था, अंटार्कटिक प्रदेश में स्काट का मरते दम तक साथी रहा था। और यह किताब मुझे एक दूसरे

स्मरणीय मनुष्य से मिली थी, इसलिए इसका मुझे दुहरा आकर्षण था। ए.जी.फ्रेजर का यह उपहार था, पश्चिमी अफ्रीका के उस एचिमोटा कॉलेज में बहुत दिनों तक प्रिंसिपल रहे थे, जो कि उनके परिश्रम, सहानुभूति और प्रेम से निर्मित अफ्रीकन शिक्षा की श्रेष्ठ और अद्‌भुत यादगार है।

जैसे–जैसे हमारी गाड़ी आगे बढ़ती गई, सिंध का रेतीला और अटपटा रेगिस्तान गुजरता गया। इसी बीच मे मैंने अंटार्कटिक प्रदेशों में विपरीत परिस्थितियों से मनुष्य की बहादुराना लड़ाई, उस मानवी साहस की, जिसने खुद शक्तिमान प्रकृति पर ही विजय प्राप्त कर ली और ऐसी सहिष्णुता का हाल पढ़ा, जो करीब–करीब विश्वास से बाहर की ही चीज है। साथ ही हरेक संभवनीय दुर्भाग्य के मौके पर अपने को भूलकर खुशमिजाजी के साथ अपने साथियों के प्रति वफादार और भारी प्रयत्नशील रहने का भी हाल पढ़ा। और यह सब किसलिए? न तो संबंधित शक्तियों की किसी सुविधा के लिए और न किसी सार्वजनिक हित या विज्ञान के लाभ ही की दृष्टि से। तब? महज उस साहसिकता के कारण जो कि इंसान में होती है– वह भावना जो कभी झुकना नहीं जानती, बल्कि हमेशा ऊंचे–ही–ऊंचे जाने की कोशिश करती है– वह वाणी कि जो आकाश से हमें सुनाई देती है। हम में से ज्यादातर इस आवाज को बहरे कानों से सुनते हैं, लेकिन यह अच्छा है कि कुछ लोग इसको सुनते हैं और हमारी मौजूदा संतान को श्रेष्ठ बनाते हैं। उनके लिए जीवन एक निरंतर चुनौती, एक दीर्घ साहसिकता और प्रयोगात्मक चीज है।

"I count life just a stuff to try the soul's strength on..."

ऐसा था वह एडवर्ड विल्सन और यह ठीक ही है कि दक्षिणी ध्रुव में पहुंचकर वह और उसके साथी उसी विस्तृत अंटार्कटिक प्रदेश में अंतिम विश्राम करने लगे, जहां लंबी–लंबी दिन–रातें होती हैं और गहरी खामोशी छाई रहती है। वहां बर्फ और तुषार के ढेरों में वे चिर–विश्राम कर रहे हैं और उनके ऊपर इंसानी हाथ से यह आलेख किया हुआ है जो उचित ही है:

''प्रयत्न, आकांक्षा और खोज में लगे रहो। हिम्मत कभी न हारो।''

ध्रुवों को विजय किया जा चुका है, रेगिस्तानों की पैमाइश हो चुकी है, ऊंचे–ऊंचे गिरी–शिखरों पर मनुष्य पहुंच गया है, लेकिन एवरेस्ट (गौरीशंकर) अभी भी अविजित होने का गर्वानुभव कर रहा है।

मगर मनुष्य सतत प्रयत्नशील है और एवरेस्ट को उसके आगे झुकना ही पड़ेगा; क्योंकि उसके दुबले–पतले शरीर में मस्तिष्क एक ऐसी चीज है, जो किसी बंधन को नहीं मानती और उसमें ऐसी भावना है, जो पराजय को कभी स्वीकार नहीं करती। तब, रहा क्या? जमीन, क्योंकि छोटी–छोटी और

अद्‌भुत एवं सतत साहसिकता धीरे–धीरे इससे विदा होती जहां रही मालूम पड़ती है। कहा तो यहां तक जाता है, कि ध्रुव–प्रदेश से युद्ध शायद बहुत जल्दी ही एक साधारण घटना हो जायेगी, पहाड़ों पर रस्सी के सहारे दौड़ते हुए चढ़ा जाने लगेगा और उनके शिखरों पर शानदार होटल खुलेंगे और तरह–तरह के सुंदर बाजे रात की खामोशी और बर्फ की चिर नीरवता को भंग करेंगे, अधेड़ उम्र के आदमी ताश खेलते हुए इधर–उधर की गपशप करेंगे और नौजवान व बूढ़े–बड़े जोरों से आनंदोपभोग की खोज करेंगे।

इतने पर भी साहसियों के लिए साहस के काम हमेशा मौजूद रहते हैं। और अभी भी यह विशाल संसार उन्हीं का साथ देता है, जिनमें भावुकता और साहसिकता होती है, और तारे समुद्रों के पार उनका आह्वान करते हैं। जबकि जो लोग चाहें उनके लिए जीवन में साहसिकता वहीं मौजूद हो, तब क्या साहस दिखाने के लिए ध्रुवों पर या पहाड़ी रेगिस्तान में जाने की जरूरत है? ओह! अपने और अपने समाज के जीवन को हमने कैसा बना दिया है, अपने सामने मानव–भावना की स्वतंत्र वृद्धि एवं आनंद और बहुलता के होते हुए भी हम भूखे मर रहे हैं और पहले से कहीं रही गुलामी में हमने अपनी भावनाओं को कुचल डाला है। हमें चाहिए कि भरसक इस हालत के बदलने की कोशिश करें, जिससे मानव–प्राणी अपनी महान विरासत के योग्य बने और अपने जीवन को सौंदर्य, आनंद एवं आध्यात्मिकता की बातों से संपन्न करें। जीवन में साहस से स्फूर्ति मिलती है और यही सबसे बड़ी साहसिकता है।

रेगिस्तान अंधेरे से ढका है। लेकिन गाड़ी अपने निश्चित लक्ष्य की ओर भागी जा रही है। इसी तरह शायद मानवता भी विघ्न–बाधाओं से लड़ती आगे बढ़ रही है। हालांकि रात अंधेरी है और लक्ष्य हमें दिखाई नहीं पड़ रहा है, शीघ्र ही सवेरा होगा और रेगिस्तान के बजाय नीला समुद्र हमारा स्वागत करेगा। •

समृद्ध-संपन्न राजस्थान के लिए हो खेती

-वीरेन्द्र परिहार

किसानों के लिए यह समय, वर्ष 2020 नव कृषि शंखनाद का है। लाभकारी खेती की तरफ आगे बढ़ते हुए हम सभी का नव कृषि शंखनाद उत्पादकता वृद्धि होना चाहिए। हरेक किसान को उसके उत्पाद का सही मूल्य मिले, यही प्रयास नव संकल्प का हो। साथ ही किसान उत्पादकता की तरफ बढ़े यही लक्ष्य होना चाहिए। समय के साथ-साथ कृषि में मूल्य बदलने लगे हैं, नजरिया बदलने लगा है। अब किसान खेत ही खेत पर नजर गड़ाए नहीं रहता है, अब वह स्मार्ट फार्मिंग करने लगा है। स्मार्ट फार्मिंग के जरिये वह मण्डियों से जुड़ने लगा है। किसान मण्डियों की हलचल से रूबरू हो व मण्डियों की हलचल से अपने उत्पाद बेचे, यह हमारे लिए सबसे बड़े संकल्प होंगे। किसान अपने स्तर पर ही अपनी फसलों को बेचे, यह सोच पनपनी जरूरी है।

समन्वित कृषि प्रबंधन भी आज की जरूरत है। आज हर तरफ आमदनी बढ़ाने की बातें हो रही हैं, ऐसे में यह निश्चित है कि किसान की आमदनी समन्वित कृषि प्रबंधन अपनाये बिना नहीं हो सकती। आज आवश्यक है कि कृषि के साथ-साथ किसान कृषि की समस्त संस्कृतियों को अपनायें। कृषि के समस्त रंगों को जियें और उसमें आगे बढ़ें। किसान संकल्प लें कि परंपरागत कृषि के ढर्रे पर नही चलेंगे अपितु कृषि के साथ-साथ पशुपालन, डेयरी, उद्यानिकी, मत्स्यपालन, कीट पालन और रेशम पालन जैसे अन्य व्यवसाय भी करेंगे और अपनी आमदनी में इजाफा करेंगे।

अब कृषि का दौर परम्परागत से आधुनिकता की तरफ बढ़ने का है। यह कृषि में नवाचारी युग के सूत्रपात का समय है, वाणिज्यिक तरीके से खेती करने का समय है। अब किसान संकल्प लें कि वह परम्परागत खेती के साथ आधुनिक बदलाव के साथ कदम से कदम मिलकर खेती करेगा। इसका तात्पर्य है कि अब किसान सब्जियों की, फूलों की, फलों की और वाणिज्यिक खेती करें। इसे यदि दूसरे शब्दों मे कहें तो उत्पादकता बढ़ाने के लिए आधुनिकता की राह पर चलना होगा। आज किसान कृषि में नये-नये तौर तरीके अपना रहा है और कृषि की तकनीक बदल रहा है। कृषि में नवीन तकनीक का समावेश भी हमारा एक नव कृषि संकल्प हो। वर्तमान दौर कृषि अभियांत्रिकी का दौर है। नये-नये उपकरणों, नये-नये यन्त्रों और साथ ही नई-नई मशीनों के साथ खेती किसानी करना कितना आसान होता जा रहा है। कृषि अभियांत्रिकी को अपनाना हमारी सबसे बड़ी सोच होगी जो सफलता की इबारत गढ़ेगी। आज इन यंत्रों से घण्टों का काम चंद मिनटों में पूरा हो जाता है और खेती किसानी सहज हो जाती है।

आज सबसे बड़ी समस्या जैविक उत्पादों को बेचने की आती है। वर्ष 2020 में कृषि संकल्प हो - जैविक बाजार की तलाश। जैविक खेती करना हमारे किसानों के लिए एक बड़ा संकल्प होना चाहिये। गोबर, नीम, गौमूत्र और जीवामृत हमारे किसान के लिए कारगर माध्यम साबित होंगे। समय जरूर लगता है लेकिन जैविक खेती में संयम रखने पर सफलता निश्चित प्राप्त होती है। मरूस्थल के लगातार प्रसार के कारण कृषि वानिकी भी किसानों के लिए एक महत्तवपूर्ण संकल्प हो। खेत की मेड़ पर हम वृक्ष लगायें ताकि उत्पादन बढ़े और मरुस्थल का प्रसार रूके।

जल है तो जीवन है और जल है तो खेती। कुशलतम जल प्रबंधन आज खेती किसानी का सबसे बड़ा संकल्प होना चाहिए। जल की एक-एक बूंद का कुशलतम प्रयोग किसान करें और वर्षा जल संचयन से प्रभावी खेती करें। पानी की एक-एक बूंद की कीमत हम राजस्थान वासियों से बेहतर भला और कौन समझ सकता है। इसीलिए मरूस्थल में बूंद-बूंद सिंचाई से ''थार अनार''

करिश्माई असर दिखा रहा है जिसकी बदौलत किसानों की आर्थिक स्थति सुधर रही है।

कृषि में आज सूचना संचार प्रौद्योगिकी का दौर चल रहा है। ऐसे दौर में 2020 में हमारा कृषि संकल्प हो कि किसान सूचना तकनीक का सहारा लें और सूचना संपन्न बना रहे इसके लिए वह कृषि साहित्य पढ़े, कृषि के कार्यक्रम देखें और साथ ही साथ कृषि विशेषज्ञों के संपर्क में रहें। ऐसा करने से निश्चित रूप से कृषि क्रांति की दूसरी अवधारणा अर्थात दूसरी हरित क्रांति की तरफ बढ़ सकेगा

इसी दौर में सरकार द्वारा 24 घंटे के डीडी किसान चैनल की शुरूआत एक बड़ा क्रांतिकारी कदम साबित हुआ है। आज किसान 24 घंटे घर बैठे खेती किसानी को बेहतर तरीके से करने के गुर सीख रहा है। दूरदर्शन का कृषि दर्शन कार्यक्रम व आकाशवाणी के खेती री बातां कार्यक्रम ने कृषक समुदाय में अपनी छाप छोड़ी है। आज का किसान लैपटॉप लेकर खेत जाता है व देशभर की मंडियों की खबर खेत पर बैठे ही जान लेता है।

युवा कृषि शिक्षा प्राप्त कर कृषि वैज्ञानिक बनें और अन्नदाता की सेवा कर समाज हित में अपना योगदान दें। हमारे युवा कृषि को उद्यम के रूप में लें तो निश्चित रूप से कृषि की तस्वीर बदल सकते हैं। राज्य में ऐसे कई युवा हैं जो परम्परागत खेती की जगह आधुनिक खेती कर रहे हैं। जोधपुर के ललित देवड़ा ने लाखों की नौकरी छोड़ कृषि को अपनाया और आज फूलों की और सब्जियों की वैज्ञानिक खेती करके दूसरों के लिए प्रेरणा बन गए हैं। सिरोही के नवदीप गोलेच्छा ने इंग्लैड से शिक्षा प्राप्त की और खेती किसानी में आए। आज समग्र खेती के बलबूते पर वो लाखों कमा रहे हैं।

एक सकंल्प हो सकता है कृषि प्रसंस्करण का। केवल किसान खेती ही नहीं करें अपितु वो फसलों का प्रसंस्करण यानी मूल्य संवर्द्धन भी करें। प्रगतिशील कैलाश चौधरी ने आंवले से मुरब्बा, कैण्डी, अचार जैसे उत्पाद बनाकर प्रसंस्करण के माध्यम से एक नायाब उदाहरण प्रस्तुत किया है

हनुमानगढ़ की रहने वाली गायत्री देवी ने मशरूम से लाखों कमाए हैं। संतोष पचार व संतोष देवी जैसी महिला कृषकों ने कृषि में महिला सशक्तीकरण की अनुपम मिसाल कायम की है।

मोती की खेती में जयपुर के कैलाश मीणा ने अच्छी सफलता हासिल की। आज ऐसे नए क्षेत्रों की राह तय करना भी एक कृषि संकल्प होना चाहिए।

हाईटेक खेती लोकप्रिय हो, यह संकल्प हमारे कृषकों का हो। किसान कॉल सेंटर व मौसम एप जैसे माध्यमों से जानकारी प्राप्त कर खेती करें तो निश्चित ही नव कृषि यानी लाभकारी खेती की तरह आगे बढ़ सकते हैं। कृषि विश्वविद्यालयों एवं कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा आयोजित होने वाले कृषि भ्रमण कार्यक्रमों में किसान

हिस्सा लें और साथ ही साथ कृषि ज्ञान बढ़ाएं। लाभकारी कृषि 2020 में किसानों के लिए एक संकल्प हो सकता है। भ्रमणों मे जाने से किसान दूसरी जगहों की कृषि की यात्रा करेंगे तो निश्चित रूप से अपने अनुभव को साझा करेंगे और साथ ही नई कृषि की तलाश करेंगे और उत्पादकता की तरफ बढ़ेंगे। दूसरे राज्यों की कृषि देखेंगे तो निश्चित ही कृषि को गुणवत्तापूर्ण बना सकेंगे।

आज भारत सरकार व राज्य सरकार द्वारा कृषि की बहुत सारी योजनाएं चलाई जा रही है। ये योजनाएं निश्चित ही कृषि विकास में वरदान साबित हो रही है। वर्ष 2020 का एक और कृषि संकल्प हो कि किसान इन कृषि विकास योजनाओं को आत्मसात करें, अपनाएं और इनका फायदा उठाएं। और उठाएं भी क्यों ना ये योजनाएं हैं भी किसानों के लिए। युवा शक्ति हमारे देश की ताकत है युवा कृषि की तरफ उन्मुख हों इसके लिए जरूरी है कि युवा कृषि को अपनाएं। युवाओं द्वारा कृषि को उद्योग के रूप में अपनाने से कृषि लाभकारी सौदा बन सकती है।

नव कृषि, नव संकल्प, नवचेतना, नव उमंग, नव उत्साह के साथ आइए 2020 का स्वागत हम कृषि विकास की राह को देखते हुए करें। यह सब संभव है सामूहिक प्रयासों से । कृषि वैज्ञानिक लैब टू लैंड के सिद्वांत को विकसित करें और कृषि तकनीक को गांव–गांव पहुचाएं। आइए, हम सब मिलकर कृषि में सुनहरे भारत की कल्पना करें। ●

छाया : राकेश शर्मा 'राजदीप'

वर्ष पर्यन्त रहें स्वस्थ

-डॉ. विजय प्रकाश गौतम

वर्तमान समय में स्वास्थ्य एक गंभीर चुनौती बन गया है। स्वस्थ रहने के नियमों के प्रति उदासीन हो गये हैं। परिणाम स्वरूप विभिन्न गंभीर बीमारियों यथा मधुमेह, हृदय रोग, उदर रोग, यकृत रोग, श्वास कास, कैंसर, अस्थि व संधियों के रोग, यकृत व किडनी रोगों से आज अधिकतर लोग ग्रसित हैं।

आयुर्वेद में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ की रक्षा को लेकर विभिन्न तरीके बताए गए हैं। कौन सी ऋतु में हम किस प्रकार का आहार-विहार लें, हमारी दिनचर्या कैसी है, किन शारीरिक-मानसिक रोगों को रोके व किनको नहीं रोकें आदि पर ही आयुर्वेद का पूरा ज्ञान समाहित है। यदि आयुर्वेद के अन्तर्गत स्वास्थ्य नियमों का पालन किया जाये तो न केवल हम स्वस्थ रहेंगे बल्कि स्वस्थ भारत-विकसित भारत के रूप में अपना योगदान दे सकेंगे।

आयुर्वेद शास्त्र में काल को आदान काल और विसर्ग काल में बांटा गया है। आदान काल में शिशिर, बसंत और ग्रीष्म तीन ऋतुएं होती हैं। इस काल में सूर्य की किरणें अत्यंत तीक्ष्ण तथा ऊष्म हो जाती हैं। जिससे हवा भी उष्ण चलती है। इस काल में प्राणियों का शारीरिक बल भी क्षीण रहता है। विसर्ग काल में वर्षा, शरद और हेमन्त इन तीन ऋतुओं को विसर्ग काल में माना गया है। इन ऋतुओं में सूर्य का बल क्षीण व चंद्रमा का बल बलवान होता है। इस काल में प्राणियों के बल की स्थिति उत्तम रहती है। इन ऋतुओं को माह अनुसार वर्गीकृत करें तो जनवरी-फरवरी शिशिर, मार्च-अप्रेल बसंत, मई-जून ग्रीष्म, जुलाई-अगस्त वर्षा, सितम्बर-अक्टूबर शरद तथा नवम्बर-दिसम्बर हेमंत के रूप में जाना जाता है।

माह के अनुसार आहार-विहार एवं व्याधियां

शिशिर बलवान ऋतु होती है। जठराग्नि तीव्र रहती है। इस ऋतु में पुराने जौ, गेहूं का सेवन, शहद, मूंग की दाल, दलिया, दही, मलाई, रबड़ी, उष्ण जल, गुड़, तिल, गाजर, टमाटर, मूली आदि का सेवन करना चाहिए। इस ऋतु में व्यायाम, तेल की

मालिश, धूप का सेवन, गर्म पानी से स्नान व चंदन आदि का लेप लगाना चाहिए। दिन में नहीं सोयें व ठंडा भोजन नहीं करना चाहिए। जोड़ो में दर्द, जुकाम, श्वांस एवं त्वचा के रोग इस दौरान अधिक होते हैं।

मार्च–अप्रेल (बसंत ऋतु)– शिशिर ऋतु (जनवरी–फरवरी) में शीत की अधिकता से कफ का संचय होता है। जो बसंत में गर्मी की शुरुआत से पिघल जाता है। जिससे जुकाम, श्वास आदि रोग उत्पन्न होते हैं। इस ऋतु में हल्का भोजन, उष्ण जल, मीठे पदार्थ, मौसमी फल, करेला, नारियल, पपीता, तुलसी आदि का सेवन करना चाहिए। ठंडा भोजन, ज्यादा मिर्च मसाले, दही, बासी भोजन व खट्टे पदार्थ नहीं लेने चाहिए।

व्यायाम, पैदल घूमना, तेल मालिश, चंदन आदि द्रव्यों का लेप, उष्ण जल से स्नान आदि करने से अग्निमांदय, उल्टी होना, कास, जुकाम–श्वास आदि में राहत मिलती है।

मई–जून (ग्रीष्म ऋतु) ऋतु में सूर्य अपनी तेज किरणों से सोम्य अंश का शोषण करता है। रुक्षता बढ़ने से वायु बढ़ती है। इस ऋतु में मधुर, शीतल, सुपाच्य द्रव्यों का सेवन, रात्रि में दुग्ध सेवन, असा, नारियल, छाछ पीयें। मिट्टी के बर्तन में रखा पानी, मौसमी फलों का प्रयोग करना चाहिए। हवादार स्थान पर शयन, शीतल जल स्नान, हल्का व्यायाम करें। धूप, अग्नि व लू से बचें।

जुलाई–अगस्त (वर्षा ऋतु) ऋतु में जठराग्नि और भी अधिक मंद हो जाती है। इस ऋतु में खट्टे पदाथों का सेवन, शहद, पुराने जौ, चावल, सौंफ, सरसों उष्ण जल, मौसमी फल व सब्जियों का सेवन करना चाहिए व अधिक मीठे पदार्थ, वर्षा जल व छाछ का सेवन नहीं करना चाहिए। व्यायाम हल्के गरम, नमी रहित स्थान पर शयन करें। अधिक परिश्रम नहीं करें। दिन में नहीं सोयें। इससे पीलिया, अतिसार, त्वचा रोग, ज्वर, श्वास रोगों से बचा जा सकता है।

सितम्बर–अक्टूबर (शरद ऋतु) ऋतु में पित्त कपित रहता है। चावल, मूंग, मिश्री, आंवला, शहद, दूध, मलाई सेवन करना चाहिए। रात्रि में 2 घंटे छत पर चांदनी रात में बैंठे, व्यायाम करें।

धूप से बचें व दिन में नहीं सोयें।

नवंबर–दिसंबर (हेमंत ऋतु) ऋतु में जठराग्नि तीव्र रहती है। घी, तेल, चिकनाई मुक्त भोजन, मिठाई, दही, दूध, मलाई शर्करा, शहद, बादाम, आंवला आदि का सेवन करना चाहिए। प्रात:काल हल्का व्यायाम, सुगंधित द्रव्यों का लेप, ऊनी वस्त्र, दिन में नहीं सोयें व ठंडी हवा से बचें। जोड़ों का दर्द, खांसी, दमा, एलर्जी, एसिडिटी, कब्ज आदि को आयुर्वेद को अपनाने से बचा जा सकता है।

ऋतु संधि

दो ऋतु के जोड़ को ऋतु संधि कहते हैं। जाने वाली ऋतु का अंतिम सप्ताह और आने वाली ऋतु का प्रथम सप्ताह। ये 15 दिन ऋतु संधि काल कहलाता है। इस समय विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस दिनों में व्याधियों की प्रबल संभावना रहती है।

दिनचर्या

ऋतु चर्या के साथ हमारे दैनिक कार्यक्रम भी नियमित होने चाहिए। आयुर्वेद में दिनचर्या का विवरण निम्न प्रकार से मिलता है।

- ब्रह्म मुहुर्त जागरण : सूर्योदय से लगभग 2 घंटे पूर्व उठना चाहिए। इससे दिमाग शांत रहता है। वातावरण शांत एवं प्रदूषण रहित रहता है।
- मलोत्सर्ग : मल मूत्र इत्यादि के वेग कभी नहीं रोकना चाहिए। ना ही बलपूर्वक वेग करना चाहिए।
- दंतधावन : नियमित दांतों की सफाई करना चाहिए। नीम, बबूल, खैर आदि से दातुन करें तो सर्वश्रेष्ठ है।
- नस्य : दंत धावन के बाद तेल की बूंद नाक में डालना चाहिए। इससे समय से पूर्व बालों के सफेद होने व गंजा होने से रोकती है व निद्रा को सुनिश्चित करता है।
- गंडूस : त्रिफला शहद या अन्य औषधियुक्त तेल को मुंह में भरकर रखें। इससे अत्यधिक प्यास, स्वाद में सुधार, मुंह का स्वास्थ्य ठीक रहता है।
- अभ्यंग (तेल मालिश): तिल तेल से प्रतिदिन मालिश करनी चाहिए। यह त्वचा को मुलायम रखता है। रक्त संचार में सुधार होता है।
- व्यायाम : नियमित व्यायाम करना चाहिए। इससे सहन शक्ति, मांसपेशियां सुदृढ़, शारीरिक रक्त संचार में सुधार होता है।
- स्नान : व्यायाम के पश्चात स्नान करें। भूख में सुधार व शरीर की दुर्गंध दूर होती है।
- भोजन : रुचिवर्धक एवं पौष्टिक आहार लेना चाहिए।
- निद्रा : दिन में नहीं सोयें। रात्रि को शांत वातावरण में निद्रा लें। इससे स्वास्थ्य बना रहता है व दीर्घायु प्रदान होती है।

आंखें हैं तो जहान है

– डॉ. वैभव त्रिपाठी
पूर्व नेत्र रोग विशेषज्ञ, एस.एम.एस. हॉस्पिटल,
एम.एस.आई. सर्जन

आंखें हैं तो संसार है अन्यथा सर्वत्र अंधेरा ही अंधेरा है। इसीलिए शायद कहा गया है, 'आंखें हैं तो जहान है।' असल में यह आंख ही हैं जिससे हम रंग-बिरंगी दुनिया को देख कर उसकी अनुभूति को व्यक्त कर सकते हैं। आंखें इसीलिए हमारे शरीर का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग हैं। नये साल में नया संकल्प यह होना चाहिए कि हम अपनी आंखों को दुरुस्त रखें। आंखों की सुरक्षा के प्रति जागरुक रहें। एक मोटे अनुमान के अनुसार वर्तमान में 3.7 करोड़ लोग दृष्टिहीन हैं एवं 12.4 करोड़ लोग गंभीर रूप से दृष्टि-विकार से पीड़ित हैं। दृष्टिहीनता उत्पन्न करने वाली स्थितियों के बचाव या त्वरित उपचार से 80 प्रतिशत मामलों में अन्धत्व से बचा जा सकता है। विश्व के नब्बे प्रतिशत दृष्टिहीन लोग विकासशील देशों में रहते हैं और यह स्थिति भी बेहद चिंताजनक है कि विश्व के एक-चौथाई दृष्टिहीन लोग भारत में रहते हैं। इनमें भी लगभग 70 प्रतिशत दृष्टिहीन लोग भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। यदि समय रहते आंखों का उपचार किया जाए तो नेत्र रोगों से ही नहीं बल्कि इससे पलने वाले दूसरे भ्रमों से भी निजात पायी जा सकती हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ) के अनुसार मोतियाबिंद, अंधत्व का सबसे बड़ा कारण है। मोतियाबिंद से अंधत्व तो होता ही है दूसरे कई और विकार भी ग्रामीण क्षेत्रों में होते हैं। गांवों में अंधविश्वास के चलते इसी अंधत्व के कारण कई बार नेत्र रोग से जुड़े मरीजों को पागल बताते हुए उनके उपचार के दूसरे तरीके अपनाये जाने लगते हैं और उसका दुष्परिणाम यह भी होता है कि मरीज ठीक नहीं होता और भ्रांतियां बढ़ती चली जाती हैं।

कई बार जब मोतियाबिंद हो जाता है और उसका समय पर उपचार नहीं होता है तो मरीज को वस्तुयें धुंधली, विकृत, पीली या अस्पष्ट तो दिखाई देती ही है साथ ही कई बार दृष्टि भ्रम भी हो जाता हैं। यानी मरीज को इस प्रकार की चीजें, दीवारें हिलती हुई, प्रेतनुमा आकृतियां आदि भी दिखाई देने लगती हैं। अक्सर ऐसी स्थितियों में मरीज को वृद्धावस्था का असर करार देते हुए यह भी आरोपित कर दिया जाता है कि वह पगला गया है। जबकि वास्तव में ऐसा होता नहीं है।

आंखें हैं तो दुनिया खूबसूरत है। प्रकृति की मोहक दृश्यावलियों का स्वाद भी आंखों के जरिए ही होता है। रंगों की छटा का आभास भी हमें आंखें ही कराती हैं। यानी जो कुछ प्रकृति और जीवन में सुंदर है-आंखों के कारण ही अनुभूत होता है। तो आइए, इस वर्ष हम आंखों की योग्य चिकित्सक से समय-समय पर जांच करवाने के साथ ही नेत्र रोगों के प्रति जागरूकता का प्रसार करेंगे। मोबाइल स्क्रीन अंधेरे में नहीं देखने, आंखों को विश्राम देते समय-समय पर उसकी चिकित्सक से जांच करवाएंगे तो फिर किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं रहेगी।

गांवों में वृद्धावस्था के बहुतेरे प्रकरण ऐसे होते हैं जिनमें मरीज अपने परिजनों से यह शिकायत करता है कि उसे अनर्गल आकृतियां दिखाई देने लगी हैं। यह भी कि उसे अपने घर की दीवारें गिरती हुई दिखाई दे रही हैं। यह भी कि दीवारों से आकृतियां बाहर निकल रही हैं और कई बार ऐसा भी मोतिया पकने के कारण मरीज को दिखाई देता है कि कोई उसके पास आकर उसे परेशान कर रहा है। यह सभी असल में दृष्टि भ्रम की स्थितियां होती हैं परन्तु लक्षणों से यह तय कर लिया जाता है कि मरीज पर किसी प्रेतात्मा का असर है या फिर वह पागल हो गया है। नेत्र चिकित्सा की भाषा में यह दृष्टि दोष है और इसे 'चार्ल्स बोनेट सिण्ड्रोम' कहा जाता है।

'चार्ल्स बोनेट सिण्ड्रोम'

'चार्ल्स बोनेट सिण्ड्रोम' के अंतर्गत मरीज बहकी–बहकी बातें करता है। उसे घर में, अपने पास परछाइयां या फिर बहुत कुछ अपने आप ही दृश्य तैरने, दीवार में से कोई छाया निकलती या फिर वस्तुओं के बड़े–बड़े आकार, उनके चलने–फिरने जैसा भ्रम होता है। ऐसे में जब इस नेत्र रोग का शिकार जब अपने परिजनों से यह सब बातें बताता है तो उसे लगता है, वह पागलपन का शिकार हो गया है और इसीलिए ऐसे अधिकांश रोग प्रकरणों में मरीज को बजाय किसी आंखों के चिकित्सक के पास ले जाने के पागलपन का इलाज करने वाले डॉक्टर के पास ले जाया जाता हैं। इलाज के नाम पर मरीज को नींद की गोलियां और भ्रम दूर करने संबंधित दवाइयां बतायी जाती हैं। ऐसे में मरीज की स्थिति और बद से बदतर होती चली जाती है।

कुछ समय पहले ही इन पंक्तियों के लेखक के पास इसी तरह का एक 80 वर्षीय वृद्धा मरीज का प्रकरण आया। वह पिछले डेढ़–दो सालों से अंधत्व का शिकार थी। वृद्धा को दृष्टि भ्रम के कारण इस तरह की आकृतियां, परछाइयां दिख रही थी कि वह उनके कारण बेचैन रहती थी। उसने जब अपने घरवालों को दिख रही आकृतियों के अनुभव बताए तो उन्होंने उसके पागलपन से संबंधित इलाज करवाना प्रारंभ कर दिया। पर यह सब उसकी दृष्टि चले जाने के कारण हो रहा था। जब वृद्धा मेरे पास आयी तो मैंने उसकी आंखों की जांच की। पता चला कि वह अपनी दोनों आंखों की रोशनी खो चुकी थी। आंखों को ऑपरेट करवाने को कहा तो उसने इससे इनकार कर दिया। बहुत मनाने पर वह मानी और अंतत: सब टेस्ट कर उसकी एक आंख का ऑपरेशन किया गया। यह सफल रहा और उसे सब कुछ दिखने लगा। दृष्टि भ्रम से उत्पन्न मतिभ्रम की स्थितियां भी इससे दूर हो गयी और अपने स्वयं के दैनिक कार्य वह खुद करने लगीं। पहले जो सर्जरी से घबरा रही थी, अब उसमें इतना आत्मविश्वास आ गया कि उसने अपनी दूसरी आंख की रोशनी भी लाने के लिए आग्रह किया। मैं समझता हूं, जल्द उसकी दूसरी आंखों की भी सर्जरी कर इलाज किया जाएगा।

पर इस वृद्धा के अंधत्व से उत्पन्न दृष्टि और मति भ्रम की स्थितियां से एक बात स्पष्ट हो गयी कि आंख के 'चार्ल्स बोनेट सिण्ड्रोम' से बहुतेरी बार गांवों में आंखों के रोगी को पागल करार दे दिया जाता है और अंधविश्वास का अंध शृंखला प्रारंभ हो जाती है। गांवों में शर्म के मारे बहुत सारे लोग अपने रोग को जाहिर नहीं करते या फिर पागलपन का इलाज करवाने की शुरूआत कर देते हैं परन्तु असल में यह आंख की बीमारी है। इससे पड़ने वाले दौरे को नींद नहीं आने, बेचैनी, परछाइयां दिखने और घर पर आसमान टूट पड़ने, दीवारें गिरते दिखाई देने आदि के आधार पर हम मरीज को पागल मान लेते हैं या फिर उस पर किसी आत्मा का असर होने को मान अंधविश्वास की अंध शृंखला प्रारंभ कर देते हैं। पर मूलत: इसका कारण आंख की रोशनी जाना होता है।

असल में आंखों की रोशनी जाने से उत्पन्न इस रोग का इतिहास भी रोचक है। सबसे पहले वर्ष 1769 में चार्ल्स बोनेट को इस रोग के बारे में तब पता चला जब उनके दादा को नहीं दिखने के कारण दृष्टि भ्रम रोग हुआ। बाद में स्वयं को भी जब दृष्टि अंधत्व हुआ तो ऐसा ही अनुभव चार्ल्स को हुआ। बाद में वर्ष 1938 में डे मोरजर ने इस रोग के लक्षण विश्लेषित करते हुए इसे पूरी तरह से अंधत्व के कारण होने वाला रोग बताया। तभी इस बात का भी पता चला कि इस तरह के रोगियों को नेत्र चिकित्सकों की बजाय पागलपन का ईलाज करने वालों के पास अधिकतर ले जाया जाता है।

'चार्ल्स बोनेट सिण्ड्रोम' गांवों में आम है। इसलिए कि वहां पर आंखों के इलाज के प्रति जागरुकता नहीं है। आम तौर पर 45–50 की उम्र के बाद मोतिया पकने की शुरूआत हो जाती है। गांवों में चूंकि इस रोग पर ध्यान नहीं दिया जाता है तो पूरी तरह से अंधत्व होने पर रोगी को दृष्टि से ऐसी अनुभूतियां होती हैं जो आमतौर पर वास्तव में घटित होती नहीं है। इन्हीं आधार पर पागलपन का इलाज प्रारंभ कर दिया जाता है। इस संबंध में सावधानी रखते हुए नेत्र परीक्षण करवाने की आदत डालने के साथ ही नेत्र स्वस्थता के प्रति जागरूकता सभी स्तरों पर जरूरी है।

यानी आंखें हैं तो दुनिया खूबसूरत है। प्रकृति की मोहक दृश्यावलियों का स्वाद भी आंखों के जरिए ही होता है। रंगों की छटा का आभास भी हमें आंखें ही कराती है। यानी जो कुछ प्रकृति और जीवन में सुंदर है–आंखों के कारण ही अनुभूत होता है। तो आइए, इस वर्ष हम आंखों की योग्य चिकित्सक से समय–समय पर जांच करवाने के साथ ही नेत्र रोगों के प्रति जागरूकता का प्रसार करेंगे। मोबाइल स्क्रीन अंधेरे में नहीं देखने, आंखों को विश्राम देते समय–समय पर उसकी चिकित्सक से जांच करवाएंगे तो फिर किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं रहेगी। •

शैक्षिक उजास के संकल्प से छुएं सफलता का शीर्ष

–डॉ सुबोध कुमार अग्निहोत्री

शिक्षा से व्यक्ति परिष्कृत होता है। मनुष्यत्व कहीं से व्यक्ति में रूपान्तरित होता है तो वह शिक्षा ही है। शिक्षा संस्कार ही नहीं प्रदान करती बल्कि निरंतर जीवन में आगे बढ़ने के अवसर भी प्रदान करती है। यह सही है, कभी शिक्षार्जन कड़ी चुनौती था। सुदूर स्थानों से लोग पढ़ने के लिए नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय जाने की यात्राएं करते थे। वहां रहते थे और अपने जीवन को परिमार्जित करने के लिए संकल्पबद्ध होते थे। वहां से जो शिक्षार्थी निकलते थे, उनका भविष्य भी सुनहरा होता था परन्तु वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा या उच्च शिक्षा अर्जित करना काफी सुलभ हो चुका है। समस्या यह है कि चीजें तो आसान हो गयी है परन्तु जो कुछ शिक्षा से अर्जित किया जाता है, उसका जीवन में कितना उपयोग बेहतरी के लिए, मनुष्यत्व के लिए होता है, कहा नहीं जा सकता।

बहरहाल, ऐसे समय में जब रोजगार की भी बड़ी समस्या है। औपचारिक पढ़ाई के साथ उच्च शिक्षण हरेक के लिए बहुत सरल नहीं है। इसीलिए दूरस्थ एवं खुली शिक्षा पद्धति का विकास हुआ है। दूरस्थ शिक्षा का अर्थ है, अपने निवास स्थान पर रहते हुए अनौपचारिक रूप में दुरस्थ शिक्षण संस्थान द्वारा प्राप्त पाठ्यसामग्री से शिक्षा अर्जित किया जाना। ऐसे बहुतेरे लोग हैं जो किसी विपरीत परिस्थितिवश आरंभ से पढ़ ही नहीं पाते, किसी कारणवश अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ देते हैं,या फिर किन्ही कारणों से औपचारिक शिक्षा नहीं ले पाते हैं, उनके लिए दूरस्थ शिक्षा किसी वरदान से कम नहीं है।

यद्यपि मुक्त शिक्षा प्रणाली में शिक्षक के संस्पर्श और उपस्थिति का अभाव एक ऐसी वंचना पैदा करता है जिसकी भरपाई मुमकिन नहीं। विद्यालयों व विश्वविद्यालयों के कड़े दिशा-निर्देश, अनुशासन एवं नियम कानून होते हैं। इसके कारण शिक्षा के दूसरे रूपों डाक द्वारा शिक्षा (पोस्टल एजूकेशन), दूरस्थ शिक्षा (डिस्टेन्स एजूकेशन) एवं मुक्त या खुली शिक्षा प्रणाली (ओपन एजूकेशन) जैसी शिक्षा पद्धतियों का आविष्कार हुआ। ऐसे में पारम्परिक व रूढ़िवादी नियमबद्ध शिक्षा पद्धति के बरक्स दूरस्थ व मुक्त शिक्षा प्रणाली का यह विकल्प उदार और बेहतरी से कम नहीं।

ऐसे लोग दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से न सिर्फ शिक्षार्जन का अपना सपना साकार कर पाते है अपितु उच्च शिक्षा अर्जित कर वे रोजगार, स्वरोजगार अथवा अकादमिक या प्रशासनिक पदों पर नौकरी या कॉर्पोरेट व निजी क्षेत्रों में भी खूब नाम कमा सकते हैं। पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी का सपना था कि अन्यत्र कार्यरत, नौकरीपेशा एवं सरकारी सेवा से जुड़े लोग एवं अन्य सभी व्यक्ति भी अनौपचारिक रूप से उच्च शिक्षा का लाभ लेने के लिए उससे जुड़ सकें। इसी सोच को मूर्त रूप देते हुए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली विकसित की गई और वर्ष 1982 में देश में पहला खुला विश्वविद्यालय हैदराबाद में प्रारंभ किया गया। इसके बाद सन्

1985 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की गई जो आज दूरस्थ शिक्षा के विश्व के सबसे बड़े विश्वविद्यालय के रूप में अपनी विशिष्ट साख बनाए हुए है।

राजस्थान में भी इसी तरह की एक पहल आज का वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय है। शिक्षा जगत् के क्षितिज पर प्रदेश में तत्कालीन सरकार ने कोटा में 23 जुलाई, 1987 को कोटा खुला विश्वविद्यालय की स्थापना की। कालान्तर में 21 सितम्बर 2002 को गजट नोटिफिकेशन द्वारा इसका नाम परिवर्तित कर वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा रखा गया। शिक्षा के वितान को विस्तार देता यह खुला विश्वविद्यालय आज विभिन्न संकायों व पाठ्यक्रमों के द्वारा शिक्षा के नये आयाम स्थापित कर रहा है। प्रदेश सरकार भी इस विश्वविद्यालय को पुरजोर सहयोग कर युवाओं को अनौपचारिक शिक्षा के विविध आयाम मुहैया कराने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा प्रदेश का एकमात्र सरकारी खुला विश्वविद्यालय है जहां विभिन्न कोर्स दूरस्थ माध्यम से करवाये जाते हैं और यहां शोध कार्य भी अनवरत रूप से जारी है। सवा लाख से अधिक पुस्तकों, जर्नल, संदर्भ ग्रन्थ एवं डिजिटल कंटेट से सुसमृद्ध पुस्तकालय यहां विद्यार्थियों के लिए सहज सुलभ है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत सरकार (यूजीसी), दूरस्थ शिक्षा परिषद् (डीईसी) एवं राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विभिन्न विषय–संकायों के अन्तर्गत अध्ययन–शिक्षण हेतु यहां प्रवेश लिया जा सकता है। बी.एड./ एम.एड./ एम.बी.ए./ स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों सहित कई कोर्स यहां उपलब्ध हैं। नि:शुल्क ऑनलाइन पाठ्य सामग्री भी जनहित में सभी के लिए मुहैया करवाई गई है।

इस विश्वविद्यालय में सवा लाख से अधिक संख्या में विद्यार्थी प्रतिवर्ष उच्च शिक्षा, स्नातक एवं स्नातकोत्तर डिग्री व डिप्लोमा, तकनीकी कोर्स, प्रमाणपत्र–पाठ्यक्रम आदि प्रतिवर्ष कर पा रहे हैं। पंजीकृत विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय के ऑनलाईन पोर्टल पर स्टूडेन्ट वन व्यू की ऐसी सुविधा मौजूद है जिस पर सारा विवरण एक ही क्लिक से आसानी से उपलब्ध हो जाता है। आयुसीमा का बंधन नहीं होने की विशेषता के चलते कोई भी यहां से किसी भी पाठ्यक्रम में प्रवेश पाकर अपनी रूचि के अनुरूप ज्ञानार्जन से लाभान्वित हो सकते हैं। साथ ही इसकी पाठ्य–सामग्री व पुस्तकों सहित सम्पूर्ण जानकारी भी ऑनलाईन हैं जिससे लाखों जिज्ञासु प्रदेशवासी जुड़कर अपना ज्ञानवर्धन कर पाने में सक्षम हैं।

विद्यालयी शिक्षा के बाद औपचारिक रूप से जो नियमित अध्ययन नहीं कर पाते हैं, उनके लिए दूरस्थ शिक्षा प्रणाली उच्च शिक्षा के बेहतरीन अवसर प्रदान करती है। इसके जरिए विभिन्न विषयों में आधारभूत पाठ्यक्रमों के साथ ही विशेषज्ञता वाले पाठ्यक्रमों का भी अपना महत्व है। यह समय उच्च शिक्षा के अंतर्गत वैश्विक चुनौतियों को स्वीकार करते हुए विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का है। ऐसे में दूरस्थ शिक्षा भी उच्च शिक्षा का विशेष माध्यम है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। जो किन्ही कारणों से विद्यालय और महाविद्यालयी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए हैं, नये वर्ष में वह संकल्प लें–दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को अपनाते हुए शैक्षिक उजास के संवाहक बनेंगे।

माघ में मावठ

आलेखः प्रो. भंवरसिंह सामौर
सभी छाया चित्रः सविता चौहान

राजस्थानी भाषा नहीं संस्कृति है। जीवन से जुडे अवयवों, प्रकृति के नाना रुपों के इतने नाम, संज्ञाएं राजस्थानी भाषा में है कि कोई इन्हें जान लें, समझ लें तो शब्द सम्पन्न हो सकता है। यह माघ माह है। हर ओर मावठ की झड़ी लग रही है। यह राजस्थानी भाषा है, जिसमें हर माह की वर्षा का अलग-अलग नाम व स्वरूप है। माघ में होने वाली वर्षा को मावठ कहते है। राजस्थानी की एक पुरानी कहावत है-

छळ बळ रा मारग किता, तो हाथां किरतार।
मारणा मारग मोकळा, मेह बिना मत मार।।

अर्थात्, हे ईश्वर! तेरे पास तो छल और बल के कितने ही रास्ते हैं मारने के लिए और मारना ही है तो उनसे ही मार दो किंतु बिना मेह (बरसात) के मत मारो।

राजस्थान के लिए वर्षा जीवन का आधार है। इसलिए वर्षा का स्वागत यहां पर लोग घर में आई नई बहू (बीनणी-लिछमी) मान कर करते है। राजस्थान में वर्षा और मेहमान कभी-कभी ही आते हैं। लेकिन आयें तो स्वागत में सारे लोग पलक पांवडे बिछाने में कोई कसर नहीं रखते। यहां के लोगों को वर्षा (बरसात) के ज्ञान की जानकारी भी कम नहीं है। सौ कोस की कौंध (चमक) और तीस कोस की गाज (गरजना) के माध्यम से प्रकाश और ध्वनि की चाल का फर्क यहां के ग्वाले (गाय चराने वाले) भी जानते हैं। वर्षा इस मरुस्थल में सबसे कम होती है। लेकिन इसके स्वागत के लिए पूरा चौमासा है। वर्षा को धारण करने वाले बादलों के सारे प्रान्तों एवं भाषाओं में सबसे अधिक नाम यहीं पर मिलते हैं। बादलों के इतने नाम है कि उन नामों की गिनती के आगे बादल खुद कम पड़ जायेंगे। बादल को राजस्थानी में जळधर, जळहर, जळवाह, जळधरण, जळद, जीभूत, घटा, घंण, सारंग, बोम, बोमचर, मेघ, मेघाडंबर, मुदिर, महिमंडण, धरमंडण, भरणनद, पाथोद, पीथळ, पिरथीराज, पिरथीपाळ, पावस, डाबर, डंबर, दळबादल, घणमंड, जळजाळ, काळी-कांठळ, काळायण, कारायण, कंद, हब्र, मैमंट, महाजाळ, मेघांघण, मेघांण, महाघण, रामइयो, सेहर, बसु, बैकुंठवासी, महीरंजण, अंब, बरमण, नीरद, पाळग, बळाहक, जळवह, जळमंडल, घणांघण, तडितवान, तोईद, परजन, आकासी, जळमंड, महिपाळ, तरत्र, निरझर, भरण निवांण, तनयतू, गयणी, महन्त किलांण, रौरगंजन इत्यादि अनेक नाम मिलते हैं। इन नामों में भी गांवों का ना कुछ (सामान्य) ग्वाला किसान और खेत जोतने वाला हाळी दस-बीस और नाम इसमें जोड़ दें तो अचंभे की बात नहीं होगी।

बादलों के आकार-प्रकार चाल-ढाल के अनुसार अलग-अलग नाम हैं। वर्षा के बड़े बादलों का नाम शिखर और छोटे-छोटे लहरदार बादल छीतरी कहलाते हैं। पसरे हुए बादलों के समूह में से अलग छूटा छोटा सा बादल भी इन नामों की गिनती से नहीं छूटता। उसे चूंखो-चूंखलों कह कर बतलाया जाता है। हवा के रथ में बैठकर बरसने के लिए दूर से आता बादल कळायण कहलाता है। काले बादलों की घटा के आगे सफेद बादलों की ध्वजा-सी फहराती जो दिखती है उसे कोरण अथवा कागोलड़ कहा जाता है। सफेद ध्वजा के बिना काली घटा जो आती दिखती है उसे कांठल कहते हैं। इतने नामों के बादल अगर एक साथ आकाश में हों तो, चारों दिशाएं भी छोटी पड़ जायेंगी। इनके लिए आठ-दस और सौलह दिशाएं बन जायेंगी। ऊंचाई-निचाई और बीच में उड़ने वाले बादलों के नाम भी अलग-अलग मिल जायेंगे।

पतले और ऊंचे बादल कस और कसवाड़ कहलाते हैं। नैरत्य दिशा में ईशान-कोण की तरफ थोड़े झुके हुए और बहते हुए बादलों को ऊंब कहते है। घटा से छाए हुए बादलों को घटाटोप कहते हैं। थोड़ी-थोड़ी बरसती हुई घटाएं सहाड़ कहलाती हैं। पश्चिम से हवा की तरह दौड़ती हुई घटाएं लोर कहलाती है और वे लोर जब गलने लगते हैं तब लोरांझड़ (श्रावण की वर्षा) कहलाती है।

बरसने के बाद सुस्ताते हुए बादल रींछी कहलाते हैं। काम से आराम करते हुए इतने बादलों की समझ रखने वाला समाज उससे हेत रखने वाला समाज ही कहता है-मेह तो बरसता हुआ ही अच्छा लगता है और वह मंगलकारी होता है। आऊगाळ (बादल) बरसात के आने का संकेत देते है। मरुस्थल में वर्षा भले ही कम हो लेकिन उसकी आवभगत के लिए चौमासा (चार महीने) है।

वर्षा के बादलों के ही जब इतने नाम हैं तो उसकी चांदी के वर्ण वाली बूंदों के तो कितने ही नाम मिल सकते हैं। जिस प्रकार बरसात की झड़ी लगती है, उसी प्रकार उसके नामें की भी झड़ी लगती है, उसी प्रकार उसके नामों की भी झड़ी लग जाती है।

बूंद का पहला नाम हरि हैं। फिरतो, मेघपुहप, बिरखा, बरखा, घणसार, मेवलियो, बूलौ, सीकर, फूंहार, छिड़को, छांटो, छांटा छिड़को, छछोहो, टपको, टीपो, टपूकलो, झिरमिर, पुणंग, जीखौ, झिरझिराट और उससे आगे-झड़ी, रीठ एवं भोट। झड़ी लगातार बरसती है तो झड़, मंडण, बरखावळ, हलूर आदि नामों से जानी जाती है। अलग-अलग महीनों की वर्षा के भी अलग-अलग नाम होते हैं। सावण की वर्षा को लोर, भादवे की वर्षा झड़ी, आसोज की वर्षा मोती, कार्तिक की वर्षा कटक, मिंगसर की वर्षा फांसरड़ो, पौह की वर्षा पावठ, माघ की वर्षा मावठ, फागुन की वर्षा-फटकार, चैत्र की वर्षा चड़पड़ाट, बैसाख की वर्षा हलोतिया, जेठ की वर्षा झपटो और आसाढ की वर्षा सरवांत कहलाती है। मेहाझड़ में बूंदों की चाल और अवधि दोनों बढ़ती है। झपटे के समय चाल बढ़ती है और अवधि कम होती है।

त्राट, त्रय, झड़, त्राटकणों, धरहरणां बूंदों के ही अलग-अलग रूप होते हैं। मूसलाधार बूंदें छांटाछोल आनंद कहलाती हैं तेज बरखा की आवाज सोकड़ कहलाती है। बादल से धरती हो

एकमेक कर देने वाली बूंदे-धारोला कहलाती है। धारोला की बौछार-बाछड़ कहलाती है। धारोला के साथ उठने वाली आवाज घमक-घोक कहलाती है। घमक के साथ बहती प्रचंड पवन खरस, बावळ और सूंटो कहलाती है। धारोला जब ऊंचे चढ़ते हैं तो वर्षा थम जाती है। बादलों के बीच से सूरज झांकता है तो वे किरणें मोख डालती है अर्थात वर्षा का जोर अभी टूटा नहीं है। जिस रात वर्षा अत्यधिक होती है वह रात 'महारैण' कहलाती है। सुबह की वर्षा अच्छी नहीं मानी जाती। पिछले पहर (संध्या) के समय की वर्षा मरुभूमि में अच्छी मानी जाती है। 'बूठणू' वर्षा बरसने की क्रिया तो 'उबरेलो' वर्षा थमने की क्रिया कहलाती है। वर्षा का पानी 'पालर पानी' कहलाता है। वर्षा बरसने से लेकर थमने तक एक-एक ढाणी (छोटा गांव), गांव, शहर, अपने खेत, घर-आंगन, छत तक के ऊपर वर्षा के स्वागत के साथ-साथ उसकी एक-एक बूंद को मोतियों से भी महंगी मानकर उसे घी की तरह उपयोग में लेते हैं। यह सारी जानकारी किसी पुस्तक में नहीं मिलेगी वरन् लोगों की जुबान पर ही जीवित हैं। इससे ही श्रुति, स्मृति, वेद आदि की किताबें बनी हैं। जिन बातों को लोगों ने याद रखा उसे दूसरों को सुनाया, दूसरे ने तीसरे को इस प्रकार यह क्रम पूरे समाज में फैला। राजस्थान के हजारों गांवों और शहरों, कस्बों में यह फैलती गई और शब्द रूप धारण कर लिया। यह शब्द रुप ज्ञान न तो लोगों ने आज की भाषा को, न ही किसी ओर को दिया। घर-घर, गांव-गांव में लोगों ने ही इसे संभाला और आगे बढ़ाया।●

मुख्यमंत्री ने निराश्रित लोगों को बांटे कम्बल

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने नववर्ष की पूर्व संध्या पर जेएलएन मार्ग पर जे.के. लोन अस्पताल एवं रामनिवास बाग के पीछे बने नगर निगम के अस्थायी रैन बसेरों में असहाय एवं निराश्रित लोगों को कम्बल बांटे।

श्री गहलोत ने रैन बसेरों में सो रहे लोगों से बड़ी आत्मीयता से बात की और उनके हालचाल पूछे। मुख्यमंत्री ने जे. के. लोन अस्पताल के पास स्थित चाय की थड़ी पर रुककर चाय पी और वहां लोगों से बातचीत भी की। इस अवसर पर स्थानीय विधायक एवं जनप्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

Postal Regd. No. Jaipur City/413/2020-22
Registered with Registrar of Newspapers of India under R. No. 56175/1991

धरोहर

गणगौर घाट

झीलों की नगरी उदयपुर का गणगौर घाट स्थापत्य सौंदर्य से अपनी विरल पहचान रखता है। रियासत काल से ही राजपरिवार द्वारा शाही गणगौर एवं ईसरजी को नाव मे बिठाकर गणगौर घाट लाया जाकर पूजा की जाती रही है। पिछौला झील के पास बने इस घाट पर प्रवेश के लिए तीन द्वार या कहें पोल हैं, इसलिए इसे त्रिपोलिया भी कहा जाता है। इसी घाट पर तीन दिवसीय गणगौर उत्सव मेवाड़ महोत्सव से मनाया जाता है। कहते हैं, 1973 से पहले गणगौर घाट त्रिपोलिया तक ही फैला हुआ था, उसके बाद इसे आगे बढ़ाया गया।

छाया एवं आलेख - राकेश शर्मा 'राजदीप'

#DIPRRajasthan

प्रकाशक व मुद्रक - सूचना एवं जनसम्पर्क आयुक्त, डॉ. नीरज के. पवन द्वारा सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के लिए, शासन सचिवालय, जयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित सम्पादक- डॉ. राजेश कुमार व्यास • मैसर्स प्रीमियर प्रिन्टिंग प्रेस, 12, मित्र नगर, हवा सड़क, रामनगर, सोडला, जयपुर से मुद्रित, 'राजस्थान सुजस'-पृष्ठ संख्या 60, मूल्य 20 रुपये/ 1,00000 प्रतियां